श्री

कर्मग्रंथ.

प्रथम भाग

जैन पाठशालाओमां भणवाना उपयोग सारु

छपावी प्रसिद्ध करनार,

मास्तर उमेदचंद रायचंद खंभात निवासी
श्री जैन ज्ञानवर्धकशाळाना धार्मिक शिक्षक.

अमदावाद.

संवत् १९६८ वीर संवत् २४३८ सने १९१२

श्री लक्ष्मी प्रिन्टिंग प्रेसमां शा मणीलाल छगनचंदे छाप्युं
त्रण दरवाजा—अमदावाद

किंमत रु. २-८-०

प्रस्तावना.

आ कर्मग्रथ पुस्तकनो प्रथम भाग सुज्ञ पुरुषोनी कृपाथी संपूर्ण करी कंइक ग्रथ प्रयोजन संबंधी लखाण करवाने आप साहेबो पासेथी आज्ञा मागुंछु

सर्व जीवो कर्मवशथका आ संसार समुद्रने विषे अनादि काळथी जन्म मरणना दुखो भोगवे छे. ज्या सुधी मनुष्यने ज्ञानना अभावे कर्मनु स्वरूप जाणवामा आवतु नथी, त्या सुधी कर्म निर्जरा थाय नहीं अने त्या सुधी श्रीवीतराग प्रणित धर्मनुं रहस्य स्पष्ट जाण्यु छे एम कही शकाय नही

महान् पूर्वाचार्योए आपणा उपर उपकार करी अनेक ग्रंथो रच्या छे वचमा काळना माहात्म्यथी तेमज प्रमादथी ते ग्रंथो गुप्त तेमज नष्टप्राय थइ गया हता परंतु आजकाल लोकोने ज्ञान उपर रुचि होवाथी अने विहार करता विद्वान साधुओना उपदेशवडे भंडारमा रहेला पुरातन पुस्तकोना शोधथी अनेक ग्रथो प्रकाशमां आव्या छे.

आ कर्मग्रथ मध्ये, कर्म एटले शुं ? तेनी मूल तथा उत्तर प्रकृतिओ केटला प्रकारनी छे ? तेना नाम तथा स्वरूप विस्तारे समजावेलां छे, तथा वळी कर्म प्रकृति साथे जीव केवी रीते बधाय छे अने पाछो केवी रीते छूटे छे तेनुं यथार्थ स्वरूप समजाववामा आवेलु छे तथा सिद्धगतिए चढवानी श्रेणीना पगथीआरूप चौद गुणठाणानु सविस्तर वर्णन करवामा आव्युं छे वळी केटलाक नास्तिक लोको कहे छे के धर्म नथी अधर्म नथी, पुण्य नथी, पाप नथी, कर्मनो बध नथी, नाश नथी, देव

नथी, नरक नथी, एवुं वोलनारा नास्तिकोनुं खंडन करनार आ कर्मग्रंथो छे.

आ कर्मग्रंथनी टीका श्री देवेंद्रसूरि महाराजे करेली छे अने तेनो वाळाववोध श्री जयसोम महाराजे करेलो छे, ते वाळाववोध भीमसींह माणेके प्रकरण रत्नाकरना चोथा भागमां छपावेलो छे, ते घणो लंवाण होवाथी तथा तेनी कींमत वधारे होवाथी घणाखरा लोको तेनो उपयोग करी शकता नथी. तेथी अमोए छपावेला पंचप्रतिक्रमणनी पद्धतिए छपाववा केटलाएक ज्ञानरुची सद्गृहस्थोनी सूचना थवाथी आ पुस्तक छपाववानो में प्रथम प्रयास कर्यो छे, कर्मग्रंथ संवंधी अनुभव में पण तेज पुस्तकमांथी मेळव्यो हतो. अने मारो धंधो पण धर्म संवंधी शिक्षण आपवानो होवाथी ते विद्यार्थीओने केवी रीते शिखवुं सुगम पडशे तेनो अनुभव थवाथी ते पुस्तकनी, तथा केटलेक ठेकाणे जीवविजयजीकृत वालाववोधनी मदद लइ आ कर्मग्रंथनुं पुस्तक वनाववामां आव्युं छे.

अमोने आशा छे के अमारुं पंचप्रतिक्रमण जेम लोकप्रिय थइ तेनी उपरा उपरी पांच आवृत्तिओ काढवानी जरुर पडी छे तेम आ पुस्तक पण लोकप्रिय थइ पडशे.

आ पुस्तकमां मारी मति दोषथी, दृष्टि दोषथी, तथा मुद्रित दोषथी जे कांइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुं होय तेने माटे क्षमा मागी विनंति करुंछुं के तेमां रहेली खामीओ लखी मोकलवा तसदी लेशो के जेथी वीजी आवृत्तिमां ते सुधारी शकाय.

ली. प्रसिद्ध कर्त्ता.

शुद्धिपत्रक.

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
५	१३	व्यजना वग्रहनु स्वरूप,दृष्टातथी बतावी शकाय नहि- परतु बाळकोने समजाववा सारु स्पर्शादि बताव्या छे	
११	२३	अनंता-पर्याय.	असंख्याता पर्याय.
११	२८	पट्टुच	पट्टुच्च
१२	५	पट्टुच-पाटो	पट्टुच्च-पाटानी जेम
१२	१२	अवधिज्ञानावरणीय अने	अवधिज्ञानावरणीय, मन पर्यवज्ञानावरणीयअने
१९	३	सज्वलन	अनतानुबधी
२४	२१	पर्याप्तनां०	पर्याप्तना०
२८	२३	पदर प्रकृति ओछी थाय	वीस प्रकृति ओछी थाय
३२		बीजा छ थया	बीजा त्रण थया तथा तेने तेनी साथे जोडतां त्रण थया
३२		हवे ए छने	हवे ए त्रणने
३३	२१	वज्र-वर्जाने	वज्र-वज्रने
३५	४	सिणिद्ध-रुक्ष (लुखो)	सिणिद्ध-चीकणो
३७	७	दुष्कार	दुष्कर
३७	१६	बादर अपर्याप्ता	बादर पर्याप्ता
३७	२२	बादर पृथ्वीकाय	बादर पर्याप्ता पृथ्वीकाय
४४	४	औदारिक बधन ना०	औदारिक औदारिक बधन ना०
४८	१६	अफर्ता	अफर्ता
४९	४	रद्दो	रद्दो
५२	२४	भय रहिओ	भय रहिओ
५१	२४	अग्रहा	अग्रहा
६२	५	वैक्रिय अने आहारकविना	वैक्रिय अने आहारक
७१	२१	यश नाम कर्म	अयश नाम कर्म
७३	१६	मतर	सतर
८४	उग्गिरणायप्रमा	६८-६१-६७	६९-६७-५७
१००	१२	सान्वादनेज	सान्वादने नज
१०३	१८	म० ७४	मि० ७४
१०८	१	सम्यक्त्वं ७१	सम्यक्त्वं ७७

११०	१०	चित्तंविनाभावं	चत्तिंविनाभाव
११०	७	मिथ्यात्वे १०१	मिथ्यात्वे १०७
११५		अणाहारी मार्गणाए त्रीजा गुणठाणे ७५ छे ते चोथामां समजवुं अने तेरमा गुणठाणे १ जोइए.	
११८	११	छुटा शब्दना अर्थमां–कम्मुरल–औदारिक कार्मण छे– तथा–मीस–औदारिक मिश्र छे. ते बेने बदलेकम्मुरलमीस– कार्मण अने औदारिक मिश्र समजवुं.	
११९	१	औदारिक कार्मण	कार्मण
१२८	१९	प्रदेशवेदे	प्रदेश तथा रसवेदे
१२९	२३	पंचेंद्रियपर्याप्तो	संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्तो
१३१	२	अपर्याप्ता सहित	अपर्याप्ता सहित त्रणभेद
१३५	१३	मतिज्ञान मार्गणाने विषे	मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञान मार्गणाने विषे
१४२	५	असत्यामृषा मनोयोग	असत्यामृषा मनोयोग सत्य वचन योग
१५०	९	असंख्य	संख्याता
१६०	११	कार्मण	कार्मण औदारिक
१६२	१९	बे वार लखाइ छे	ते सुधारीने वांचवुं
१६३	९	एक प्रमत्त	एक अप्रमत्त
१६३	१३	योग त्रण	योग
१६७	१	बत्रीश	एकत्रीस, एकआयु कर्मनी
१६७	२३	प्रमत्त, तथा	प्रमत्त, अप्रमत्त, तथा
१७२	६३ मी गाथा ना छुटा अर्थमां	अठ्ठउसंते–आठ तथा सातनी संतुदए–सत्ता तथा उदय	अठ्ठउसंते-आठसत्ताने विषे संतुदए-सात उदयने विषे
१७३	२१	उदीरणा होय	उदीरणा न होय
१७४	१६	सयोगी गुणठाणे अनुदीरक होय	सयोगी गुणठाणे बे कर्मनी अने अयोगी गुणठाणे अनुदीरक होय
१८०	३	तेने	अथवा क्षायकने बदले तेने
१८०	४	पंच	चतुः
१८०	८	अने पंचसंयोगीआ	ए काढी नांखवुं
	१२	एक वालाग्र	छ वालाग्र
	११	उत्कृष्ट असंख्यातु	उत्कृष्ट असंख्याता संख्यातु

॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ श्रीकर्मविपाकनामा प्रथमकर्मग्रंथप्रारम्भ.

मंगलाचरण

दिनेशवद्ध्यानवरप्रतापै, रनंतकालप्रचित्तंसमंतात् ॥
योऽशोषयत्कर्मविपाकपंकं,देवो मुदे वोऽस्तु स वर्द्धमानः॥१॥

अर्थ—अनंत काळनो संचय करेलो जे कर्म विपाकरूप पंक एटले कादव तेनुं उग्र ध्यानरूप तापवडे शोषण करवाने जे सूर्यना जेवा छे एवा श्री वर्द्धमान देव मने हर्ष करनारा थाओ ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणगुरूणा, धर्मगुरूणा प्रणम्य पदकमलं ॥
कर्मविपाके विवृत्तिं, स्मृतिबीजविवृद्धये विदधे ॥ २ ॥

अर्थ—ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जे सर्वोत्तम गुण ते वडे करी महत्ताने पामेला अथवा तेओनी प्राप्ति करावनारा एवा धर्म गुरु तेमना चरण कमळने प्रणाम करीने स्मरणरूप अंकुरनी वृद्धि करवाने अर्थे आ कर्मविपाक नामना प्रथम कर्मग्रंथनी वृत्ति हुं करुंछु ॥ २ ॥

॥ हवे कर्मग्रंथ कोने कहीए ते कहे छे ॥

जीवे मिथ्यात्व आदि हेतुए करीने जे आत्मा साथे पुद्गल बांधीए तेने कर्म कहीए. ते कर्मनुं मूलोत्तर प्रकृतिए करी तथा प्रकृति स्थिति रस अने प्रदेश आदि बंध भेदे करी

तथा बंध, उदय, उदीरणा अने सत्तादि भेदे करी ग्रंथनुं रचवुं तेने कर्मग्रंथ कहीए,

तेमां प्रथम कर्मविपाक नामा प्रथम कर्मग्रंथ–ते कर्मना पुद्गल अंजन चूर्णथी भरेला दावडानी पेठे सर्व लोकाकाशमां निरंतर व्यापी रहेलाछे तेनो क्षीर नीरनी पेरे तथा अग्नि अने लोहनी पेरे आत्मानी साथे संबंध तेनो अनुभव जणावनारुं जे शास्त्र तेने कर्मविपाक कहीए.

सिरि वीरजिणं वंदिय, कम्मविवागं समासओ वुच्छं ॥
कीरइ जिएण हेउहिं; जेणंतो भन्नए कम्मं ॥ १ ॥

सिरि–श्री, लक्ष्मी	वुच्छं–कहीश	जेणं–जे माटे
वीरजीणं–महावीरस्वामी	कीरइ–कराय	तो–ते माटे
वंदिय–वांदीने		
कम्मविवागं–कर्मविपाकने	जिएण–जीवेकरीने	भन्नए–कहेवाय
समासओ–संक्षेपथी	हेउहिं–हेतुए	कम्मं–कर्म

अर्थः–केवलज्ञान रूप लक्ष्मीए करी सहित एवा श्री वीरप्रभुने वांदीने कर्मनो जे विपाक एटले कर्मनुं स्वरूप जणावनारो जे ग्रंथ तेने संक्षेपे करीने कहीश जे माटे जीवे हेतुये करी कराय ते माटे ते कर्म कहेवाय ॥ १ ॥

पयइ ठिइ रस पएसा, तं चउहा मोअगस्स दिठंता ॥
मूलपगइ ठ उत्तर, पगइ अडवन्न सय भेअं ॥ २ ॥

पयइ–प्रकृति	तं–ते	मूलपगइठ–मूलप्रकृतिआठ
ठिइ–स्थिति	चउहा–चारप्रकारे	उत्तरपगइ–उत्तरप्रकृति
रस–रस	मोअगस्स–मोदकना	अडवन्नसय-एकसोअठ्ठावन
पएसा–प्रदेश	दिठंता–दृष्टांते	भेअं–भेदे

अर्थः-प्रकृति बंध, स्थिति बंध, रस बंध अने प्रदेश बंध एम ते कर्म चार प्रकारे मोदकना (लाडुना) दृष्टांते जाणवुं तेनी मूल प्रकृति आठ अने उत्तर प्रकृति एकसो अठ्ठावन भेदे होय ॥ २ ॥

॥ मोदकना दृष्टांते कर्मना चार भेद समजावे छे ॥

प्रकृतिबंध-जेम त्रिकटु (सुंठ, मरी, पीपर)नो लाडु बनाव्यो होय तेनो स्वभाव वायु हरवानो होय तेम कोइ कर्मनो स्वभाव ज्ञानने आवरण करे, कोइ दर्शनने आवरण करे ते

स्थितिबंध.-जेम कोइ लाडु बे दिवस, कोइ दश दिवस सुधी बगडे नहीं (नाश पामे नहीं) तेम कोइ कर्म अमुक मुदत सुधी रहे ते स्थितिबंध कहेवाय

रसबंध-जेम कोइ लाडुनो रस मीठो, कडवो होय तेम कर्म बांधती वखते कषाय जेवो तिव्र, मंद, शुभ, अशुभ, होय तेवो तेनो रस बंध कहीए

प्रदेशबंध-जेम कोइ लाडुमां प्रदेश (कण) थोडा होय कोइमां वधारे होय तेम कोइ कर्मना पुद्गल वधारे होय कोइना ओछा होय ते प्रदेश बंध कहेवाय

॥ हवे कर्मनी एकसो अठ्ठावन प्रकृति गणावे छे ॥

इहनाणदंसणावर, ण वेअमोहाउनामगोआणि ॥
विग्घंचपणनवदुअ, ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥३॥

इह-अहीं	आउ-आयु	दु-बे
नाण-ज्ञान	नाम-नाम	अठ्ठवीस-अठ्ठावीस
दंसण-दर्शन	गोआणि-गोत्र	चउ-चार
आवरण-आवरण	विग्घ-अंतराय	तिसय-एकसो त्रण
वेअ-वेदनी	पण-पांच	दुपण-बे तथा पांच
मोह-मोहनीय	नव-नव	विह-भेद

अर्थ-अहीं आ पेहेलु ज्ञाना वरणीय, बीजु दर्शनावरणीय, त्रीजु वेदनीय, चोथु मोहनीय, पांचमु आयु कर्म छठु नामकर्म,

सातमुं गोत्रकर्म अने आठमुं अंतराय ए कर्मना आठ मूल भेद कह्या. ए आठे कर्मना अनुक्रमे पांच, नव, बे अठ्ठावीस, चार, एकसो त्रण, बे अने पांच एम कर्मनी एकसोने अठ्ठावन उत्तर प्रकृति छे.

ज्ञानावरणीयः—जे कर्म ज्ञानने आवरण करे एटले ज्ञान न थवा दे ते.

दर्शनावरणीयः—जे कर्म दर्शन (देखवुं ते)नुं आवरण करे ते.

वेदनीयः—जे कर्मथी सुख दुःख भोगवाय ते.

मोहनीयः—जे कर्मथी मोहे करी पोताना हित अहितनी विचारणा करी न शकाय.

आयुःकर्मः—जे कर्म बीजा भवने विषे उदय आवे एटले बीजां कर्म पण बीजा भवमां उदय आवे खरां अने कोइ न पण आवे परंतु आयुःकर्म तो अवश्य-पणे बीजा भवमां उदय आवे. एटले जे कर्मना उदयथी आवता भवमां असुक मुदत सुधी रही शकाय ते.

नामकर्मः—जे कर्मना उदयथी जीव जे गति के जातिमां होय तेने ओळखावे ते.

गोत्रकर्मः—जे कर्मना उदयथी जीव पोताना गुणवडे उच्च नीचपणुं प्राप्त करी शके

अंतरायकर्मः—जे कर्मना उदयथी जीव दानादिक आत्मानी लब्धिओ प्राप्त करी शके नहीं ते.

॥ हवे ते दरेक कर्मनी जूदी जूदी उत्तर प्रकृतिओ कहे छे. ॥

मइसुअओही मण के, वलाणिनाणाणितत्थमइनाण ॥
वंजणवग्गह चउहा, मणनयणविणिंदियचउक्का ॥ ४ ॥

मइ—मतिज्ञान	नाणाणि—ज्ञान	मण—मन
सुअ—श्रुतज्ञान	तथ्थ—त्यां	नयण—चक्षु
ओहि अवधिज्ञान	मइनाण—मतिज्ञानना	विण—विना
मण—मनः पर्यवज्ञान	वंजणवग्गह—व्यंजनावग्रह	इंदियचउक्का—इंद्रियचतुष्क
केवलाणि—केवलज्ञान	चउहा—चारभेदे	

अर्थः—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवलज्ञान ए पाच ज्ञान छे, त्यां प्रथम मतिज्ञानना अ-

छावीस भेद जणावे छे चार प्रकारे व्यंजनावग्रहछे. मन अने चक्षु विना चार इन्द्रिउंना अवग्रह ए चार प्रकार व्यजनाव ग्रहना छे ॥ ४ ॥

मतिज्ञान'-पाच इंद्रिय अने छट्टु नोइंद्रिय मन ए वडे वस्तुनु-सामान्य विशेष जाणवु

श्रुतज्ञानः-जे वस्तु जाणी तेना जुदा जुदा पर्यायोनु जे ज्ञान ते

अवधिज्ञानः-इंद्रियादिकनी अपेक्षाविना द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चारनी मर्यादाए जे रुपी द्रव्यनु ज्ञान थाय ते

मन पर्यवज्ञानः-सन्नि पचेंद्रिना मनोगत भावनु जाणवु ते

केवलज्ञान.-लोकालोकने विषे रहेला रूपी अरूपी सर्व पदार्थोनु जे संपूर्ण ज्ञान थाय ते.

॥ तेमा प्रथम मतिज्ञानना अठ्ठावीस भेद कहे छे ॥

व्यजनावग्रह'-स्पर्शनादिके करी वस्तुनो जे अत्यत अव्यक्त बोध ते जेम कोइ वस्तु हाथमा लेवाथी टाढी, उनी, हलकी, भारे लागे तेनु जे ज्ञान थयु ते स्पर्शेंद्रिनो अवग्रह कडवो तीखो स्वाद जीभना स्पर्शथी जाण्यो ते रसेंद्रिनो अवग्रह, तथा सुगध घ्राणेंद्रिना स्पर्शथी जाण्यो ते घ्राणेंद्रिनो अवग्रह, कोइए साद कर्यो तेना पुद्गल कानने फरस्या तेथी शब्दनु जाणपणु थयु ते श्रोतेंद्रिनो अवग्रह एम चार इंद्रिओनो व्यजनावग्रह होय छे, परतु मन तथा चक्षुइंद्रिनो व्यजनावग्रह नथी कारण-जेम कोइ शीसानी अदर पाणी भर्यु होय तो ते जाणवाने स्पर्श करवो पडतो नथी. परतु मन अने चक्षुथी ते जाणी शकाय छे तेथी ते बे इंद्रिनो व्यजनावग्रह नथी माटे मन अने चक्षुविना चारइंद्रिओनो व्यजनावग्रह छे

अत्थुग्गहईहावा, यधारणाकरण माणसेहिं छहा ॥
इअ अठवीसभेअं, चउदसहावीसहाचसुअ ॥ ५ ॥

अत्थुग्गह-अर्थावग्रह	छहा-छ प्रकारे	चउदसहा-चउदभेद
इहा-इहा	इअ-एम	वीसहा-वीसभेद
अवाय-अपाय	अठवीस-अठावीस	च-अथवा
धारणा-धारणा	भेअ-भेद	सुअ-श्रुतज्ञानना
करण-इंद्रियो		

अर्थः-एक अर्थावग्रह, बीजी इहा, त्रीजो अपाय अने चोथी धारणा ए चार भेद, पांच इंद्रिउं अने मन ए छना छे. एटले ए चोवीस भेद व्यंजनावग्रहना चार भेद साथे मेळवतां कुल अठावीस भेद मतिज्ञानना थया अने चौद तथा वीस प्रकारे श्रुतज्ञान होय ॥ ५ ॥

अर्थावग्रह-वस्तुना अर्थनुं ग्रहण करवुं ते अर्थावग्रह. जेम कोइ वस्तु आपणा शरीरे अडकी तेथी जाण्युं जे कोइक वस्तुनो स्पर्श थयो एवुं जे सामान्य अव्यक्तज्ञान ते अर्थावग्रह.

इहा-जे वस्तुनो अर्थावग्रह थयो ते अमुक हशे एवुं जे जाणवुं ते.

अपाय-ते इहित वस्तुनो निश्चय करवो के आ फलाणीज वस्तु छे ते.

धारणा-जे वस्तु निश्चय करी तेने हृदयने विषे धारी राखवी ते.

उपरना भेद दृष्टांत आपी समजावे छे.

जेम आपणे कोइ वस्तु मोंमां मुकी तेनो स्पर्श जीभने थयो तेथी रसनेंद्रियने अति अव्यक्तपणे रसनुं जे ज्ञान थयुं ते रसनेंद्रियनो व्यंजनावग्रह, त्यार पछी जाणवामां आव्युं जे आ कांइक स्वाद जणाय छे. ते अर्थावग्रह, त्यारपछी एम लाग्युं के तीखुं लागे छे माटे मरी के पीपर हशे, ते इहा. त्यारपछी एम नक्की कर्युं के ए पीपरज छे ते अपाय, पछी तेने धारी राख्युं के पीपरनो स्वाद एवोज होय छे ते धारणा, ए प्रमाणे बीजी इंद्रियोना भेद पण जाणी लेवा.

व्यंजनावग्रहनो काल अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण होय छे. अर्थावग्रनो काळ एक समय प्रमाण होय छे. इहा अने अपायनो काल पण अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण होय छे, अने धारणानो असंख्यात काल प्रमाण होय छे. ए रीते मतिज्ञानना अठावीस भेद फरीथी जणावे छे.

फरसइंद्रिना-	व्यंजना वग्रह-	अर्थावग्रह,	इहा,	अपाय,	अने धारणा	५
रसेंद्रिना-	"	"	"	"	"	५
घ्राणेंद्रिना-	"	"	"	"	"	५
श्रोतेंद्रिना-	"	"	"	"	"	५
चक्षुइंद्रिना-	×	"	"	"	"	४
मनना-	×	"	"	"	"	४

४ चार प्रकारे व्यंजना वग्रह, ६ छप्रकारे अर्थावग्रह, ६ छ प्रकारे इहा, ६ छ प्रकारे अवाय, अने ६ छ प्रकारे धारणा.

हवे श्रुत ज्ञानना चौद भेद दखाडे छे

अक्खरसन्नीसम्मं. साइअंखलुसपज्जवसिअच ॥
गमिअंअगपविठ, सत्तवीए ए सपडिवक्खा ॥ ६ ॥

अक्खर–अक्षरश्रुत	सपज्जवसिअ–सपर्यव	अगपविठ–अगप्रविष्टश्रुत
सन्नी–संज्ञीश्रुत	सितश्रुत	सत्तविए–सात
सम्म–सम्यक्श्रुत		
साइअ–सादिश्रुत	च–अने	ए–ए
खलु–निश्चय	गमिअ–गमिकश्रुत	सपडिवक्खा प्रतिपक्षसहित

अर्थ–अक्षरश्रुत, संज्ञिश्रुत, सम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगप्रविष्टश्रुत, ए सातने प्रतिपक्ष सहित करीए एटले अनक्षरश्रुत, असंज्ञीश्रुत मिथ्यात्वश्रुत, अनादिश्रुत, अपर्यवसितश्रुत. अगमिकश्रुत, अने अंगवाह्यश्रुत, ए चौद भेद थया ॥ ६ ॥

१ अक्षरश्रुत–तेना त्रण भेद छे १ संज्ञाक्षर ते अढार प्रकारनी लिपि प्रमुख लखवु ते. २ व्यंजनाक्षर ते अकारादि उच्चारथी जे अक्षर बोलाय ते, ३ लब्धक्षर ते सांभळवाथी तथा जोवाथी वस्तुनु जे विशेष ज्ञान थाय ते

२ अनक्षरश्रुत–खासी तथा श्वास आदि क्रियावडे पुष्पादिकनु जे ज्ञान थाय ते

३ संज्ञीश्रुत–संज्ञा ३ छे (१) हेतु पदेशीकी एटले इष्ट अनिष्ट वस्तु जाणीने प्रवृत्ति निवृत्ति ते (२) दीर्घकालिकी अटले अतित अनागत घणा कालनी चिंता करवी (३) दृष्टिवादोपदेशिकी एटले जे ने क्षयोपशम ज्ञाने करी सम्यक् द्रष्टिपणु होय ते ए त्रण संज्ञा मध्येथी अहीं दीर्घ कालिकी संज्ञा ते संज्ञीश्रुत

४ असंज्ञीश्रुतः–दीर्घकालिकी संज्ञा रहित मनविना इंद्रियथी जे ज्ञान थाय ते.

५ सम्यक्श्रुतः—आगम अनुसारे खोटाने खोटुं अने खराने खरुं जाणे ते.
६ मिथ्यात्वश्रुतः—मिथ्यादृष्टिए करी खोटाने खरुं अने खराने खोटुं जाणे ते.
७ आदिश्रुत—भरत तथा ऐरवतक्षेत्र आश्री ज्यारे प्रथम तीर्थप्रवर्त्ते ते वखते श्रुतनी आदि थाय ते.
८ अनादिश्रुत—महाविदेह क्षेत्रने विषे सदाकाळ तीर्थनो विच्छेद न होय तेथी त्यां श्रुतनी पण आदि तथा विच्छेद न थाय तेथी त्यां अनादिश्रुत.
९ सपर्यवसितश्रुत—भरत ऐरव्रत क्षेत्रने विषे तीर्थनो विच्छेद थाय त्यारे श्रुतनो पण अंत आवे ते आश्रीने सपर्यवसितश्रुत.
१० अपर्यवसितश्रुत—महा विदेह क्षेत्रने विषे तीर्थनो विच्छेद न थाय तेथी त्यां श्रुतनो पण अंत आवे नहीं माटे ते क्षेत्र आश्रीने अपर्यवसितश्रुत.
११ गमिकश्रुत—दृष्टिवाद प्रमुख जे सरखा पाठ अने आलावाथी बांधेलुं जे श्रुत
१२ अगमिकश्रुत—कालिकश्रुतनी पेठे जेमां पाठ सरखा न होय.
१३ अंगप्रविष्टश्रुत—अंग केहेतां जे बार अंगनुं ज्ञान थाय ते.
१४ अंगबाह्यश्रुत—बार अंग सिवाय उपांगादिकनुं जे ज्ञान थाय ते.

ए सिवाय द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चार भेदे श्रुतज्ञान छे द्रव्यथी श्रुतज्ञानी उपयोगवंत थको उत्कृष्टथी सर्व द्रव्यने जाणे, क्षेत्रथी लोकालोकने जाणे, कालथी सर्व कालने जाणे, भावथी सर्व भावने जाणे. एटले संपूर्णश्रुत ज्ञानी केवली सरखा जाणवा.

हवे श्रुतज्ञानना बीजा वीस भेद कहे छे.

पज्जय अक्खर पय सं, घाया पडिवत्तितहय अणुओगो ॥
पाहुडपाहुड पाहुड, वथ्थू पुव्वाय स समासा ॥ ७ ॥

पज्जय—पर्यायश्रुत	तहय—तेमज	पाहुड—प्राभृतश्रुत
अक्खर—अक्षरश्रुत	अणुओगो—अनुयोगश्रुत	वथ्थू—वस्तुश्रुत
पय—पदश्रुत	पाहुडपाहुड—प्राभृतप्राभृतश्रुत	पुव्वाय—पूर्वश्रुत
संघाय—संघातश्रुत		ससमासा—समाससहित
पडिवत्ति—प्रतिपत्तिश्रुत		

अर्थः—पर्यायश्रुत, अक्षरश्रुत, पदश्रुत, संघातश्रुत प्रतिपत्तिश्रुत तेमज वळी अनुयोगश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृ-

तश्रुत, वस्तुश्रुत अने पूर्वश्रुत ए दस भेद तथा ते दरेकनी साथे समास शब्द जोडवाथी बीजा दस भेद थया. जेम पर्यायसमासश्रुत, अक्षरसमासश्रुत ए रीते दशे भेद जाणी लेवा. एम सर्व वीस भेद श्रुतज्ञानना छे. ॥ ७ ॥

पर्यायश्रुत –ज्ञाननो एक थोडामांथोडो भाग ते एटले सूक्ष्मनिगोदीआ लब्धि अपर्याप्ता जीवने प्रथम समये जेटलुं ज्ञान थयुं तेथी बीजे समये जेटलो ज्ञाननो एक अविभाग परिच्छेद अंश वधे ते पर्यायश्रुत

पर्याय समासश्रुत –तेवा बे चार पर्याय ते

अक्षरश्रुत:–अकारादि लब्ध्यक्षर अनेक व्यंजन पर्याय सहित जाणवो ते.

अक्षर समासश्रुत:–तेवा बे चार अक्षरनुं ज्ञान ते.

पदश्रुत –अकारादि स्वर तथा ककारादि व्यंजन मळवाथी पद (वाक्य) थाय तेनुं जे ज्ञान ते

पदसमासश्रुत –तेवां अनेक पदोनुं जे ज्ञान ते.

संघातश्रुत –मार्गणाद्वार मध्येथी गत्यादिक एक मार्गणाना एक गतिना जीव भेदनुं जे ज्ञान.

संघात समासश्रुत –तेवा एक करतां वधारे गतिना जीवनुं ज्ञान ते.

प्रतिपत्तिश्रुत –गति आदिक मार्गणाद्वारमांथी एक गतिमां सर्व संसारी जीवना भेद जाणवानुं ज्ञान

प्रतिपत्ति समासश्रुत –उपर कह्या तेवा एक करतां वधारे गतिमां संसारी जीवना भेद जाणवानुं ज्ञान

अनुयोगश्रुत–संतपद परूवणा इत्यादिक अनुयोग कहीए, ते मांहेना एकनुं ज्ञान ते

अनुयोग समासश्रुत –तेवा एकथी वधारे अनुयोगनुं जाणवुं ते.

प्राभृत प्राभृतश्रुत–प्राभृत प्राभृतश्रुत ए दृष्टिवादना एक अधिकार (भाग)नुं नाम छे तेवा एक भागनुं ज्ञान

प्राभृत प्राभृत समासश्रुत –तेवा बे चार पाहुड पाहुडनुं ज्ञान ते

प्राभृतश्रुत –घणा पाहुड पाहुडे एक पाहुड थाय छे, तेवा एक पाहुडनुं ज्ञान ते

प्राभृत समासश्रुत – एक करतां वधारे पाहुड (अध्ययननुं) जे ज्ञान ते

वस्तुश्रुत –घणा पाहुडे एक अध्ययन थाय छे तेवा एक अध्ययननुं ज्ञान ते.

वस्तु समासश्रुतः–एवा बे चार अध्ययननुं ज्ञान ते.
पूर्वश्रुतः–उत्पाद पूर्वादिमांथी जे एक पूर्वनुं ज्ञान ते.
पूर्वसमासश्रुतः–एवा एक करतां वधारे पूर्वनुं अथवा संपूर्ण चौद पूर्वनुं जे ज्ञान ते.

हवे अवधिज्ञानना भेद कहे छे.

अणुगामि वड्ढमाणय, पडिवाईयर विहा छहा ओही ॥
रिउमइ विउलमईमण, नाणं केवल मिगविहाणं ॥ ८ ॥

अणुगामि–साथेचालनारुं	इयरविहा–विपरित भेदे	विउलमइ–विपुलमति
वड्ढमाणय-वर्द्धमान(वधतु)	छहा–छ प्रकारे	मणनाण–मनःपर्यवज्ञान
पडिवाइ–प्रतिपाति (आवीनें पाछुं जाय ते)	ओही–अवधिज्ञान	केवलं–केवल
	रिउमइ–ऋजुमति	इगविहाणं–एक भेद

अर्थः–अनुगामि, वर्द्धमान, अने प्रतिपाति ए त्रण तथा तेथी उत्तर एटले अनानुगामि, हियमान, तथा अप्रतिपाति ए छ प्रकारे अवधिज्ञान छे. अने ऋजुमति तथा विपुलमति ए बे प्रकारे मनःपर्यवज्ञान छे. तथा केवलज्ञान एक प्रकारे छे ॥ ८ ॥

अवधिज्ञान बे प्रकारनुं छे. एक गुणप्रत्ययिक अने बीजुं भवप्रत्ययिक. गुणप्रत्ययिक मनुष्य तथा तिर्यंचने होय छे. अने भवप्रत्ययिक ते नारकी तथा देवताने होय छे

अनुगामि–जे क्षेत्रमां अवधिज्ञान उपन्युं होय अने ते चारे दिशाओ तरफ जेटला क्षेत्रनुं थयुं होय तेटलुं ते क्षेत्र छोडीने बीजे गमे ते ठेकाणे जाय तोपण चारे दिशाए तेटलुं देखे, एटले ज्यां जाय त्यां चक्षुनी पेठे साथे आवे.

अनानुगामि–जे क्षेत्रमां जेटली मर्यादा सुधीनुं अवधिज्ञान थयुं होय ते मर्यादा ओळंगी त्यांथी बीजे क्षेत्रे जाय तो देखी शके नहीं स्थिर दीपकनी पेठे.

वर्द्धमानः–जे दिवसे दिवसे वधतुं जाय.

हीयमानः–जे दिवसे दिवसे घटतुं जाय.

प्रतिपातिः–जे अवधिज्ञान थइने पाछुं जतुं रहे ते. ते उत्कृष्टथी सकळ चौद राज्य लोकने देखी शके अने दीवा ओलवायानी पेठे एक कालमां जतुं रहे.

अप्रतिपातिः–जे ज्ञान आव्युं जाय नहीं ते सकळ चौद राज्य लोकने देखे अने

अलोकना पण एक प्रदेशथी माडी असख्यातो अलोक देखे

ए रीते अवधिज्ञानना ७ भेद छे, अने द्रव्य, क्षेत्र काल अने भावथी तेना असख्य भेद पण थइ शके छे, अवधिज्ञानवाळो जघन्यथी अनता रुपीद्रव्यने जाणे देखे अने उत्कृष्टथी सर्व रुपीद्रव्यने जाणे देखे. क्षेत्रथी जघन्यपणे अगुलनो असख्यातमो भाग अने उत्कृष्टथी असख्यात लोकाकाशने जाणी देखी शके. कालथी आवलिना असख्यातमा भाग जेटलु अतित अनागत काल जघन्यथी अने उत्कृष्टपणे असख्याता कालचक्र अतित अनागत काळना भावने जाणे देखे भावथी जघन्य तथा उत्कृष्टपणे अनत भावने जाणे.

विभगज्ञान ते अवधिज्ञाननी जाति छे पण ते मिथ्यात्वीभाश्री होवाथी मलीन छे तेथी वीपरित जाणे,

हवे मन.पर्यवज्ञानना भेद कहे छे

(१) ऋजुमति–सन्नी पचेंद्रिना मनोगत भाव सामान्यपणे जाणे ते. एटले ते माणसे अमुक वस्तु मनमां चिंतवी छे.

(२) विपुलमति–जे वस्तु चिंतवेली छे. ते अमुक जग्याए अमुक माणसे बनावेली छे, वगेरे घणा पर्याये सहित जाणे.

ए बे प्रकारे मन पर्यवज्ञान सर्व निरतिनेज होय द्रव्यथकी ऋजुमति अनत प्रदेशी स्कध तेने जाणे देखे अने विपुलमति तेहीज स्कधो विशुद्धपणे जाणे देखे, क्षेत्रथी ऋजुमति तिर्च्छी दिशिमां अढी द्वीप सुधी ऊचु ज्योतिषीना उपरना प्रतर सुधी, अने नीचु रत्नप्रभा पृथ्वीना क्षुल्लक प्रतर लगी अढारसें योजन सुधीना सन्निपचेंद्रियना मनोगत भाव जाणे अने विपुलमति तेथी अढी अगुल वधारे जाणे कालथी ऋजुमति अतित अनागत मनोगत भाव पल्योपमना असख्यातमा भाग सुधी जाणे अने विपुलमति तेथी काइक वधारे जाणे भावथी ऋजुमति चिंतवेला द्रव्यना अनता पर्याय जाणे अने विपुलमति तेथी काइक वधारे जाणे देखे

केवलज्ञान–अतित अनागत अने वर्त्तमान काळ सबधी सकळ लोकालोकना द्रव्य क्षेत्र काल अने भावने जाणे देखे

ए रीते ज्ञानना (२८–१४–६–२–१) कुल एकावन भेद थया.

॥ हवे तेना आवरण कहे छे ॥

एसिं जं आवरणं, पडुच्च चक्खुस्स तं तयावरणं ॥

दंसण चउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ए ॥

एसिजं–ए ज्ञाननुं जे	चक्खुस्स–आंखनो	चउ–चार
आवरणं–आच्छादन करनारुं	तं–ते	पणनिद्दा–पांच निद्रा
	तयावरणं–तेनुंआवरण	वित्तिसमं–पोळीआ जेवुं
पडुच्च-पाटो	दंसण–दर्शननां	दंसणावरणं-दर्शनावरणीय

अर्थः–ए पांच ज्ञानने जे आवरण करे तेने ज्ञानावरणी कर्म कहे छे, जेम आंखना प्रकाशनुं आवरण पाटो बांधवाथी थाय छे, तेम ज्ञाननुं आवरण ज्ञानावरणीय कर्मथी थाय छे. दर्शन चारनां आवरण चार, अने पांच भेदे निद्रा एम नव भेद दर्शनना छे, ते दर्शनावरणी कर्म पोळीआना जेवुंछे. ॥ ए ॥

ज्ञानावरणीय कर्म पांच प्रकारे छे. मतिज्ञानने आवरण करे ते मतिज्ञानावरणीय तेमज श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय अने केवलज्ञानावरणीय, तथा दर्शन एटले सामान्यरुपे वस्तुनो अवबोध (देखवुं) तेनुं जे आवरण करे ते दर्शनावरणीय कर्म कहेवाय. दर्शन चार प्रकारे छे चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवलदर्शन तेनुं जे आवरण करे तेने अनुक्रमे चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय अवधिदर्शनावरणीय अने केवळदर्शनावरणीय कहीए ए चार तथा (१) निद्रा (२) निद्रा निद्रा, (३) प्रचला (४) प्रचला प्रचला, अने (५) थीणद्धी, ए पांच निद्रा मळी दर्शनावरणीयना नव भेद थया. ते दर्शनावरणीय कर्म पोळीआ जेवुं छे, जेम कोइने राजा पासे मळवा जवुं होय पण पोळीओ जवा दे नहीं तेम दर्शनावरणीय कर्मथी देखी शकाय नहीं.

चक्खू दिठ्ठि अचक्खू, सेसिंदिय ओहि केवलेहिं च ॥
दंसणमिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥

चक्खू दिठ्ठि–चक्षुदर्शन	ओहि–अवधिदर्शन	तस्सावरणं–तेनां आवरण
अचक्खू–अचक्षुदर्शन	केवलेहिंच–केवलदर्शन	तयं–तेज नामे
सेस-बाकीनी(आंखविना)	दंसणमिह–ए दर्शन	चउहा–चार भेद
इंदिय–इंद्रियाथी	सामन्नं–सामान्य अवबोध	

अर्थ–चक्षुदर्शन (आंखवडे देखवुं ते), अचक्षुदर्शन (आंख विना बीजी इन्द्रियोथी थयेलुं ते,) अवधिदर्शन अने केवलदर्शन तेनां आवरण पण तेज नामना चार भेदे होय ।१०।

आंखवडे देखवु ते चक्षुदर्शन, आंख विना बाकीनी चार तथा मनवडे जे वस्तुनु जाणवु थाय ते अचक्षुदर्शन जेम आंधळो माणस हाथ फरवीने जाणे छे के आ फलाणी वस्तु छे अथवा सुगंधीथी जाणे के आ मोगरो छे अथवा गुलाब छे, त्रीजु अवधिदर्शन ते द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव ए चार मर्यादामां रहेला रुपीद्रव्यनु देखवु ते अने केवलदर्शन ते सर्व वस्तुनु देखवु

हवे पाच निद्रा कहे छे

सुह पडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दाय दुक्खपडिबोहा ॥
पयला ठिओवविठस्स, पयलपयलाय चकमओ ॥११॥

सुह–सुखे	दुक्खपडिबोहा–दुःखे	बेठाने आवे
पडिबोहा प्रतिबोध (जागवु)	जागी शकाय	पयलपयलाय–प्रचला प्र-
निद्दा–निद्रा	पयला–प्रचला	चला
निद्दानिद्दाय–निद्रानिद्रा	ठिओवविट्ठस्स–उभा तथा	चकमओ–चालतां थकां

अर्थ–सुखे जागी शकाय ते (१) निद्रा, दुःखे जागी शकाय ते (२) निद्रा निद्रा, उभाने तथा बेठाने आवे ते (३) प्रचला, चालता थका पण आवे ते (४) प्रचला प्रचला, ॥११॥

निद्रा इंद्रियोना अवबोधने रोके छे तेथी तेने पण दर्शनावरणीय कर्म कहीए

दिण चिंति अत्थकरणी, थीणद्धी अद्धचक्कि अद्धबला॥
महुलित्त खग्गधारा, लिहण व दुहाउ वेअणीअ ॥१२॥

दिणचिंति–दिवसे चिं तवेली	अद्धचक्कि–वासुदेव	लिहण–चाटवासरखी
	अद्धबला–अर्धबळवाळी	दुहाउ–बे भेदे
अत्थकरणी अर्थनेकरनारी	महुलित्त–मधथीलेपायेली	वेअणिअ–वेदनीकर्म
थीणद्धी–थीणद्धी	खग्गधारा–खड्गनी धार	

अर्थः—दिवसे चिंतवेलुं कार्य (रातने समये जागृतनी पेठे) करनारी निद्रा ते थीणद्धी निद्रा कहीए, ते निद्रा समये ते प्राणीमां अर्द्धचक्री जे वासुदेव तेनाथी अर्धुं वल होय छेः (ए रीते दर्शनावरणीयना नव भेद थया हवे वेदनीय कर्म कहे छे.) मधथी खरडायेली तरवारनी धार चाटवा सरखुं बे प्रकारे वेदनीय कर्म छे. ॥ १२ ॥

थीणद्धी निद्रावालाने वासुदेवथी अरधुं वल कह्युं ते वज्रऋषभनाराच संघयणवाळाने जाणवुं अने छेवट्ठा संघयणवाळाने तो बमणुं त्रमणुं जोर वधे.

वेदनीय बे प्रकारे—जेम तरवारनी धार मधथी खरडायेली होय तेने जीभवडे चाटतां मधने लीधे मीठाश लागे तेना जेवुं (१) शातावेदनीय एटले सुखनुं भोगववुं. अने धार उपर जीभ फरवाथी जीभ कपाय अने तेथी जे दुःख भोगववुं पडे ते (२) अशातावेदनीय.

ओसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु ॥
मज्जंव मोहणिअं, दुविहं दंसण चरणमोहा ॥ १३ ॥

ओसन्नं—प्राये	तिरिअ—तिर्यंच	दुविहं—बे प्रकारे
सुर—देवताने	निरएसु—नारकीनेविषे	दंसण—दर्शन
मणुए—मनुष्यने	मज्जं—मदिरा	चरण—चारित्र
सायम्—शातावेदनीय	व—पेठे	मोहा—मोहनीय
असायं—अशातावेदनीय	मोहणीअं—मोहनी कर्म	

अर्थः—घणुं करीने देवता अने मनुष्यने विषे शातावेदनीयनो उदय छे, अने तीर्यंच तथा नारकीने विषे अशातावेदनीयनो उदय होय छे. (हवे मोहनीय कर्म कहे छे,) मदिरा (दारु)नी पेठे जीवने विकल करे (मुझावे) ते मोहनीय कर्म बे भेदछे, एक दर्शनमोहनीय अने बीजुं चारित्रमोहनीय ॥ १३ ॥

अहींआं वेदनीयकर्ममां प्राये कहेवानुं कारण के मनुष्य तथा देवगतिमां

पण अशातावेदनीय वेदे पण त्रण भागे शातावेदनीय वेदे कारण के ते वे गति पुन्य प्रकृतिनी छे तेमज तिर्यंच अने नारकी कोइक वखत शातावेदनीय वेदे जेम कोइ घल्ड के हाथी कोइ राजा प्रमुखने त्यां होय अने आदर पामे त्यारे ते शातावेदनीय वेदे छे. तेम नारकीने पण कल्याणक समये शाता उपजेछे

मोहनीयकर्म—ते जेम कोइ माणसे दारु पीधो होय तेने पोताना भलाभुडानी समजण पडे नहीं, तेम मोहनीय कर्मना उदयथी जीवने पोताना हित अहितनी खबर पडे नहीं, तेना बे प्रकार छे (१) दर्शनमोहनीय एटले मिथ्यात्वना उदयथी जीवने शुद्ध देव गुरु धर्म उपर रुची थाय नही अने (२) चारित्र मोहनीय एटले जेना उदयथी धर्म उद्यम करी न शके

दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीस तहेव मिच्छत्त ॥
सुद्धं अद्ध विसुद्धं, अविसुद्धं त हवइ कमसो ॥१४॥

दसणमोह–दर्शनमोहनीय	मिच्छत्त–मिथ्यात्व मो०	त–ते
तिविह–त्रण प्रकारे	सुद्ध–शोधेलु	हवइ–होय
सम्म–सम्यक्त्व मोहनीय	अद्धविशुद्ध–अर्द्ध शोधेलु	कमसो–अनुक्रमे
तहेव–तेमज	अविशुद्ध–अणशोध्यु	

अर्थ—दर्शनमोहनीय त्रण प्रकारे छे (१) समकित मोहनीय, (२) मिश्रमोहनीय, तेमज (३) मिथ्यात्व मोहनीय ते अनुक्रमे शुद्ध, अर्द्धविशुद्ध अने अशुद्ध होय ॥१४॥

॥ ते दृष्टांत आपी समजावे छे ॥

कोद्रा जे एक जातनु धान्य थाय छे. तेमां केटलाएक एवा होयछे के ते खावाथी मीणो (केफ) चढे छे. परतु तेनां छोतरां काढी नांखी छडीने छाश पाणीवडे सवार धोइ नांखीए तो ते शुद्ध थाय छे तेम जे जीव मिथ्यात्वी होय ते मनना शुभ परिणामे करी मिथ्यात्वना छलीआं काढी नांखी शुद्ध थाय ते समकित मोहनीय, बीजु मिश्रमोहनीय ते जे कोदरा छोतरां काढी छड्या नथी त्यारे तेमां मीणानो काइक भाग रहे छे तेनी पठे ज्यां सुधी मिथ्यात्वनो अश होय त्यां सुधी मिश्रमोहनीय अने त्रीजु मिथ्यात्वमोहनीय ते तो तद्दन अशुद्ध कोद्रानी पेठे एकलु मिथ्यात्व समकितमोहनी तत्त्वरुचो करावे पण शंकादिके

करी मुंझावे, मिश्रमोहनीयवाळाने तत्वमां पण रुचि न होय अने अतत्वमां पण रुचि न होय, अने मिथ्यात्वमोहनीयथी कुमार्गने शुद्ध मार्ग लेखे (गणे)

जिअ अजिअ पुन्न पावा, सव संवर वंध मुख्ख निज्जरणा॥
जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइ वहुभेअं ॥ १५ ॥

जीव–जीवतत्व	संवर–संवरतत्व	सद्दहइ–सद्दहे
अजीव–अजीवतत्व	वंध–वंधतत्व	तयं–तेनुं
पुण–पुन्यतत्व	मुख्ख–मोक्षतत्व	सम्मं–सम्यक्त्व
पाव–पापतत्व	निज्जरणा–निर्जरा	खइगाइ–क्षायकादि
आसव–आश्रवतत्व	जेणं–जेने	वहुभेअं–वहु भेदे छे.

अर्थः–जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, वंध, मोक्ष, अने निर्जरा ए नव तत्व जेने सद्दहे तेनुं नाम समकित ते क्षायक आदि वहु भेदे छे. ॥ १५ ॥ तेमांना केटलाक नीचे बतावे छे.

एकविधसम्यक्त्व–तत्त्वार्थनी सद्दहणा ते

निश्चयसम्क्त्व–आत्मानो शुद्ध ज्ञानादिक परिणाम.

क्षायकसम्यक्त्व–चार अनंतानुंबंधि कषाय अने त्रण दर्शनमोहनीय ए सात प्रकृतिना क्षयथी जे तत्वरुचि प्रगटे ते.

औपशमिकसम्यक्त्व–ए सात प्रकृतिने उपशमावे (दवावे) परंतु क्षय करी शके नहीं.

क्षायोपशमिकसम्यक्त्व–ए सात प्रकृतिनो जेटलो रस उदय आव्यो तेटलो खपाव्यो बाकीनो जे उदय नथी आव्यो तेने उपशमावने करी जे तत्वनी रुचि प्रगटे ते.

एम बीजा वेदकादि अनेक प्रकारे सम्यक्त्व जाणवुं.

मोसा न राग दोसो, जीण धम्मे अंतमुहु जहा अन्ने॥
नालिअर दीव मणुणो, मिछं जिण धम्म विवरीअं ।१६।

मीसा–मिश्रमोहनीय	अंतमुहु–अंतर्मुहूर्त्त	मणुणो–मनुष्यने
न–नहोय	जहा–जेम	मिच्छ–मिथ्यात्व
रागद्दोसो–रागद्वेष	अन्ने–अन्ननेविषे [रद्वीपना	जिणधम्म–जिनधर्मथी
जिणधम्मे-जिन धर्मने विषे	नालिअरदीव–नालि के-	विवरीअ–वीपरित

अर्थ.–मिश्रमोहनीना उदयथी जीनधर्मने विषे राग-द्वेष न होय तेनो काळ अंतर्मुहुर्त्त सुधीनो होय छे, जेम नालिकेर द्वीपना मनुष्यने अन्नने विषे रागद्वेष न होय तेनी पेठे. अने मिथ्यात्व ते तो जिनधर्मथी वीपरितज जाणवु ॥१६॥

नालिकेरद्वीपना मनुष्यो नाळिएर खाइ उदर निर्वाह चलावे छे तेमने अनाजना स्वादनी खबर नथी तेथी तेमने अन्न उपर रुचि पण न होय तेम अरुचि पण नहोय तेवी रीते मिश्र मोहनीयवाळा जीवने जीनधर्म उपर राग पण न होय तेम द्वेष पण न होय.

हवे पच्चीस चारित्र मोहनीय कहे छे.

सोलस कसाय नवनो, कसाय दुविह चरित्त मोहणीयं ॥
अण अप्पच्चक्खाणा, पच्चक्खाणाय संजलणा ॥ १७ ॥

सोलसकसाय–सोल कषाय मोहनीय	दुविह–(एम.) बे प्रकारे	अप्पच्चक्खाणाय–अप्रत्याख्यानीय
नवनोकसाय–नवनो कषाय मोहनीय	चरित्तमोहणीय–चारित्र मोहनीय छे	पच्चक्खाणाय–प्रत्याख्यानीय
	अण–अनंतानुबंधि	संजलणा–संज्वलन

अर्थ.-सोल कषायमोहनीय तथा नव नोकषायमोहनीय एम बे प्रकारे चारित्रमोहनीयना पच्चीस भेद छे अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरणीय, प्रत्याख्यानावरणीय अने संज्वलन ए चारना दरेकना चार चार भेदे सोल कषाय मोहनीय जाणवी।१७।

कषाय=कष+आय (कषके०) संसार तेनो (आयके०) लाभ जेथकी जीवने होय एटले जेथी जीवने संसारमा परिभ्रमण करवु पडे ते कषाय, तेना क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकार छे ते दरेकना चार चार भेद नीचे प्रमाणे

अनंतानुबंधीः—जेथी अनंत संसारनी वृद्धि थाय तेवा क्रोध, मान, माया, अने लोभ.

अप्रत्याख्यानावरणीय—जे देशविरतिपणाने आवरे, एटले कांइ पण विरतिना प्रणाम न थवा दे तथा सर्व विरतिपणुं न आववा दे.

प्रत्याख्यानावरणीयः—जे सर्व विरतिपणुं न आववा दे.

संज्वलनः—परिसहादिकथी कांइक दीपकनीपेरे कषाय थइ तरत विसराल थइ जाय, तेवा मंद कषाय, जेथी संयममां अतिचार दूषण लागे अने शुद्ध यथाख्यात चारित्र थतां अटकावे.

जाजीव वरिसचउमा,स पख्खग्गा निरयतिरियनरअमरा
सम्माणु सव्वविरई, अहखाय चरित्त घायकरा ॥ १८ ॥

जाजीव—यावत्जीवलगे	तिरिय—तिर्यंच	सव्वविरई—सर्वविरति
वरिस—वरसलगे	नर—मनुष्य	अहखाय—यथाख्यात
चउमास—चारमासलगे	अमरा—देवता	चरित्त—चारित्र
पख्खग्गा-पखवाडीयालगे	सम्म-सम्यक्त्व	घायकरा—घातकरनार
	अणु—अणुव्रत	

अर्थः—ए चार प्रकारना कषाय अनुक्रमे जावजीव सुधी, एक वर्ष सुधी, चार मास सुधी, अने पंदर दिवस सुधी रहे. तथा पेहेलो नरकगति, बीजो तिर्यंचगति, त्रीजो मनुष्यगति अने चोथो देवगति अपावे, वळी पेहेलो सम्यकत्वनो घात करे, बीजो देशविरतिनो, त्रीजो सर्व विरतिनो अने चोथो यथाख्यात चारित्रनो घात करे ॥ १७ ॥

जलरेणु पुढवी पव्वय, राई सरिसो चउव्विहो कोहो ॥
तिणि सलयाकट्ठऽट्ठिअ, सेलत्थंभो वमोमाणो ॥ १९ ॥

जल—जळरेखा जेवो	सरिसो—सरखो	अट्ठिअ—हाडकाना
रेणु—रेतीनीरेखा जेवो	चउव्विहो—चारप्रकारे	सेल—पथ्थरना
पुढवी—माटीनी	कोहो—क्रोध	थंभोवमो—थांभलाजेवो
पव्वय—पर्वतनी	तिणिसलया-नेत्रनी सोटी	माणो—मान
राई—रेखा	कट्ठ—काष्ट (लाकडा)ना	

अर्थ :-पाणीनी रेखा सरखो, धूळनी रेखा सरखो, माटीनी रेखा सरखो. तथा पर्वतनी रेखा सरखो अनुक्रमे सञ्वलन, प्रत्याख्यानावरणी, अप्रत्याख्यानावरणी अने संज्वलन एम चार प्रकारे क्रोध जाणवो. वळी नेतरनी सोटी सरखो, काष्टनी लाकडी सरखो, हाडका सरखो अने पथ्थरना थम्न सरखो मान जाणवो ॥१ए॥ हवे तेने विशेष जणावे ठे

जेम पाणीमा लीटी करीए ते तरत भेगी थाय छे, तेम जे क्रोधवडे जुदां पडेला मन तरत भेगा थाय ते सञ्वलन क्रोध जाणवो.

धूळने विषे रेखा करीए ते जेम केटलीक मुदत पछी पवन सजोगे भेगी मळे तेम भागेलु मन उपाये करी मळे ते बीजो प्रत्याख्यानी क्रोध

माटीनी रेखा सरखो एटले तळावमां पाणी सुकाइ गया पछी तेमा रहेली माटी (कादव) सुकाइने तेमां जे फाट पडे छे, ते ज्यारे वरसाद आवे त्यारे मळी जाय छे, तेम तुटेलु मन घणा उपाये घणे वखते मळे ते त्रीजो अप्रत्याख्यानी क्रोध.

तथा जेम पर्वतमा फाट पडी होय ते कोइ काळे मळे नहीं तेम जेनु भाग्यु मन कोइ काळे मळे नहीं तेने अनतानु बधी क्रोध कहीए.

हवे मान कहे छे.

जेम नेतरनी सोटीने वाळतां कांइ मेहेनत पडती नथी, तेम जे माणस पोतानी हठ थोडा उपदेशथी मुकी दे अने सोरे मारगे चाले ते सञ्वलन मान. तथा जेम सुका काष्टने तेलादिक चोपडी दु खे नमावीये, तेम जे माणस घणा प्रयासे करी सोरे मार्गे आवे ते प्रत्याख्यानीओ मान जाणवो तथा जे अत्यत घणा कष्टे हाडनी पेरे नमावीये, मार्ग सन्मुख करीए तेवो दु साध्य अप्रत्याख्यानीय मान जाणवो अने पत्थरनो थभ कोइ रीते नमे नहीं, तेम जे कोइपण उपाये कदाग्रह न छोडे ते अनतानुबधी मान जाणवो.

मायावलेहि गोमु, त्ति मिंढसिंग घणवसमूलसमा ॥
लोहो हलिद खंजण, कद्दम किमिराग सारित्थो ॥२०॥

माया–माया	मिंढसिंग–घेटाना शींगडा सरखी	हलिद–हळदर
अवलेहि–वांसनी छोल सरखी	घणवंस–कठण वांसना	खंजण–सरावलानो मेल
गोमुत्ति–वळदना मूत्रनी रेखा सरखी	मूलसमा–मूलसरखो	कद्दम–गाडानी मळी
	लोहो–लोभ	किमिराग–करमजनो रंग
		सारिथ्थो–सरखो

अर्थः–माया अनुक्रमे वांसनी छोल सरखी, बळद मुतरे तेनी रेखा सरखी, घेटाना शींगडा सरखी, तथा वांसना मूळ सरखी छे, अने लोभ हळदरना रंग सरखो, सरावलाना चीकणा मेल जेवो अथवा नगरना खाळना कादव जेवो, गाडानी मळी जेवो अने कीरमजी रंग जेवो छे. ॥२०॥ तेने विशेष समजावे छे

वांसनी छोलनुं वांकापणुं सेहेज हाथ फेरववाथी जतुं रहे छे तेम संज्वलनी माया सुखेथी टळी शके छे. तथा वळद चालतां चालतां मुतरे तेनी वांकी चुकी धार जमीन उपर थाय छे, ते ज्यारे सुकाय त्यारे जती रहे तेनी पेठे प्रत्याख्यानी माया उपाये करी तुटे. तथा जेम घेटानुं शींगडुं महामेहेनतते अने घणा कष्टे वळे तेम अप्रत्याख्यानी मायानी वक्रता महा कष्टे करीने टळे अने अनंतानुबंधी माया जेम वांसनुं मूल गमे तेटला उपाये सीधुं थाय नहीं तेम ते पण टळे नहीं.

संज्वलनो लोभ हळदरना रंग जेवो छे. एटले हळदरनो रंग जेम धोतां वार ते उतरी जाय छे. तेम संज्वलन लोभ (धनादिक उपरनो राग) थोडी मेहेनते जाय छे. तथा सरावला मांहेनो मेल जेम घणी मेहेनते जाय छे तेम प्रत्याख्यानीओ लोभ सद्गुरु आदिना घणा उपदेशथी घणी मेहेनते जाय. तथा गाडानी मळीनो डाघ जेम महाकष्टे अने घणी मेहेनते जाय छे तेम अप्रत्याख्यानीओ लोभ महा मेहेनते अने घणे उपदेशे तथा युक्तिए करी टळे छे. अने करमजनो रंग जेम गमे तेटला उपाये लुगडुं फाटी जतां सुधी पण जाय नहीं तेम अनंतानुबंधी लोभ कोइ उपाये ओछो थतो नथी.

जस्सुदया होइ जिए, हासरइ अरइ सोग भयकुत्था ॥
सनिमित्त मन्नहावा, तं इह हासाइ मोहणीअं ॥२१॥

जस्सुदया–जेना उदयथी	सोग–शोग	वा–अथवा
होइजीए–जीवने होय	भय–भय	त–ते
हास–हास्य	कुच्छा–दुगच्छा	इह–अहीं
रइ–रति	सनिमित्त–कारणसहित	हासाइ–हास्यादि
अरइ–अरति	अन्नहा–अन्यथा	मोहणीअ–मोहनीकर्म

अर्थः–जेना उदयथी जीवने हांसी, रति, अरति, शोक, भय अने दुगंछा ए ठ वानां कारण सहित अथवा कारण रहित अन्यथा होय ते अहीं हास्यादि मोहनीय कर्म जाणवु॥२१॥

पुरिसित्थि तदुभयं पइ, अहिलासो जव्वसा हवइ सोउ ॥
थी नर नपु वेउ दओ, फुफुम तण नगर दाह समो ॥२२॥

पुरिस–पुरुप	जव्वसा–जेनावशथी	फुफुम–कोउदाह (बकरी-नीर्लीडीनो ताप
इत्थि–स्त्री	हवइ–होय	तण–तृणदाह
तदुभय–तेबे	सोउ–ते	नगरदाह–नगरदाह
पइ–प्रत्ये	थी–स्त्रीवेद	समो–सरखो
अहिलासो–अभिलाष	नर–पुरुषवेद	
	वेओदओ–वेदना उदयथी	

अर्थ –जे कर्मना वशे जीवने पुरुप, स्त्री तथा ते बेनी मैथुन संज्ञारूप इछा होय ते अनुक्रमे स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुसकवेद जाणवो तेनु तिव्रपणु अनुक्रमे बकरानी लींडीना अग्नि समान, घासना भडकानी समान, अने नगरनी ल्हायना देवतानी समान जाणवु ॥ २२ ॥

स्त्री वेदनु तिव्रपणु ते जेम बकरीनी लींडीनो ताप घणीवार सुधी ठडो पडे नहीं तेम स्त्रीने पुरुषना स्पर्शथी विषय इच्छा वधती जाय अने पुरुषवेदनु तिव्रपणु जेम घासनो भडको थइने एकदम ओलवाइ जाय छे, तेम पुरुषनो विषय स्त्रीनो स्पर्श थया पछी तरत समाइ जाय छे अने नपुसक वेदनु तिव्रपणु ते जेम नगर बळे अने घणा दिवस सुधी देवता ओलाय नहि तेम नपुसक वेदोदये थयो जे विषय ते कोइ रीते निवृत्ते नही एम हास्यादि छ तथा त्रण वेद मळी नव नोकषाय कह्या

सुरनरतिरि निरयाउ, हडि सरिसं नाम कम्मचित्तिसमं ॥
बायाल तिनवइ विहं, ति उत्तरसयं च सत्तठी ॥ २३ ॥

सुर–सुरायु	हडिसरिसं–हेडसरखो	तिनवइविहं–त्राणुंभेदे
नर–नरायु	नामकम्म–नामकर्म	तिउत्तरसयं–एकसोत्रण
तिरि–तिर्यंचायु	चित्तिसम्मं–चितारा जेवो	च–वळी
निरयाउ–नरकायु	बायाल–बेतालीस	सत्तठी–सडसठ

अर्थः–देवायु, मनुष्यायु, तिर्यंचायु अने नरकायु ए चार भेदे आयुः कर्म छे, तेनो स्वभाव हेडु समान छे, अने नामकर्मनो स्वभाव चितारा समान छे; ते बेतालीस भेदे तथा त्राणु भेदे छे, वळी एकसो त्रण भेदे पण छे अने सडसठ भेदे पण छे २३

जे कर्मना उदयथी जीव देवपणुं पामे ते देवायु, मनुष्यपणुं पामे ते मनुष्यायु, तिर्यंचपणुं पामे ते तिर्यंचायु अने नरकपणुं पामे ते नरकायु. एम चार प्रकारे आयुःकर्म हेड समान छे. एटले लाकडानी हेडमां जेने घाल्यो होय ते हेड भाग्या सिवाय नीकळे नहीं तेम आयु पूर्ण कर्या विना ते जीव ते गतिमांथी नीकळे नहीं.

हवे चौद पिंड प्रकृति कहे छे.

गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघायणाणि संघयणा ॥
संठाण वण्ण गंधरस, फास अणुपुव्वि विहगगइ ॥२४॥

गइ–गतिनाम	संघायणाणि-संघातननाम	रस–रसनाम
जाइ–जातिनाम	संघयणा–संघयणनाम	फास–स्पर्शनाम
तणु–शरीरनाम	संठाणा–संस्थाननाम	अणुपुव्वि–आनुपूर्वीनाम
उवंगा–उपांगनाम	वण–वर्णनाम	विहगगति–विहायो गति नाम
बंधण–बंधननाम	गंध–गंधनाम	

अर्थः–गतिनाम, जातिनाम, शरीरनाम, उपांगनाम, बंधननाम, संघातननाम, संघयणनाम, संस्थाननाम, वर्णनाम, गंधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, आनुपूर्वीनाम, अने विहायो-

गतिनाम ए चोद पिंमप्रकृति कही, पिंमप्रकृति एटले एक प्रकृतिमा वे चार प्रकृति भेगी होय ते. ॥ २४ ॥

१ गतिनामः–देवादिक गति पामवानु कारण.
२ जातिनामः–एकेंद्रियादिक जीवपर्यायनु कारण.
३ शरीरनामः–औदारिकादिक शरीर पामवाना तथा परिणामवाना हेतु.
४ उपागनाम'–हाथपग वगेरे शरीरना अवयवनी माप्ति थाय ते.
५ वंधनमाप–औदारिकादिक पुद्गलनु परिणामवानु माहो माहे जोडवानु हेतु जे कर्म
६ संघातननाम –जेणे करी आपणा शरीर योग्य कर्म पुद्गल स्कंधनो राशि एकठा करीए
७ संघयणनाम–जेम खीलादिके करी कमाडादिकना साधा दृढ करीए तेम शरीरने विषे हाड संधिनु दृढ करवानु हेतु
८ संस्थान नामकर्मः–शरीरनो शुभ तथा अशुभ आकार ते संस्थान, तेनु हेतुभूत जे कर्म
९ वर्ण नामकर्म.–शरीर पुद्गले कृष्ण, गौरवर्णादि थवानु हेतुभूत जे कर्म.
१० गंधनामकर्म शरीरे सुगंध दुर्गंधपणु थवानु हेतुभूत जे कर्म
११ रसनाम –शरीरे तिक्तादिक रस थवानी हेतभूत जे कर्म प्रकृति.
१२ स्पर्शनामः–जे कर्मथी शरीरमा शीत, उष्णादिक स्पर्श होय
१३ आणुपूर्वी –जे कर्मना उदयथी वक्रगतिथी राशे ताण्या वळदनीपेरे उत्पत्ति स्थानकरूप गमाणे जीव आवे
१४ विहायोगतिनाम.–जे कर्मथी जीवने शुभ तथा अशुभ चाल होय ते

पिंमपयमित्ति चउदस, परघाउस्सास आय वुज्जोअं ॥
अगुरुलहुतित्थ निमिणो, वघायमिअअठपत्तेआ॥२५॥

पिंडपयडित्ति–पिंडप्रकृति	आयव–आतपनाम	निमिणो–निर्माणनाम
चउदस–चौद	उज्जोअ–उद्योतनाम	उवघाय–उपघातनाम
परघा–पराघातनाम	अगुरुलहु–अगुरुलघुनाम	इअअठ–एम ए आठ
उस्सास–उश्वासनाम	तित्थ–तीर्थंकरनाम	पत्तेया–प्रत्येक प्रकृति

अर्थ –ए चोद पिंमप्रकृति कही, पराघात नामकर्म, उ-

श्वास नामकर्म, आतपनामकर्म, उद्योतनामकर्म, अगुरुलघुनाम कर्म, तीर्थंकरनामकर्म, निर्माणनामकर्म, अने उपघातनामकर्म, एम ए आठ प्रत्येक प्रकृति जाणवी. ॥ २५ ॥

पराघातनामकर्मः—जे कर्मना उदयथी बीजा कोइनो जीत्यो न जाय.

उच्छ्वासनामकर्मः—जे कर्मथी श्वासोश्वास पूर्ण करे एवो लब्धिवंत होय.

आतपनामकर्म—जे कर्मना उदयथी जीवनुं शरीर उष्णप्रकाशवान् होय.

उद्योतनामकर्मः—जे कर्मने उदये अनुष्ण प्रकाशवंत जीवनुं शरीर होय.

अगुरुलघुनामकर्म—जे कर्मना उदयथी जीवनुं शरीर अत्यंत स्थूळ पण न होय तथा अत्यंत कृश पण न होय ते.

तीर्थंकरनामकर्म—जेना उदयथी तीर्थंकर पदवी लहे ते.

निर्माणनामकर्म—जे कर्मना उदयथी शरीरना अवयवो योग्य स्थळे गोठवाय.

उपघातनामकर्म—जे कर्मना उदयथी पोताना अधिके तथा ओछे अंगे करी पीडा पामे ए आठ प्रत्येक प्रकृति कही.

तस वायर पज्जत्तं पत्तेयथिरं सुभं च सुभगंच ॥
सुसरा इज्ज जसं तस, दसगं थावर दसं तु इमं ॥२६॥

तस—त्रसनामकर्म	सुभं—शुभनामकर्म	तसदसगं—त्रसदशक
वादर—वादरनाम	सुभगंच—सौभाग्यना०	थावरदसं—स्थावरदशक
पज्जत्तं—पर्याप्तनाम	सुस्सर—सुस्वरनाम	तु—तो
पत्तेय—प्रत्येकनाम	आइज्ज—आदेयनाम	इमं—आमप्रमाणे
थिरं—स्थिरनाम	जसं—जशनाम	

अर्थः—त्रसनामकर्म, वादरनामकर्म, पर्याप्तना०, प्रत्येकना० स्थिरना०, शुभना० सौभाग्यना०, सुस्वरना०, आदेयना०, यशना०, ए त्रसदशक जाणवो अने तेज प्रमाणे स्थावर दशक कहेवाशे.

१ त्रस नाम कर्मः—जेना उदयथी त्रस शरीरनी प्राप्ति थाय ते

२ वादर०—जेना उदयथी वादर शरीरनी प्राप्ति थाय ते.

३ पर्याप्त०—जेना उदयथी पोताने योग्य आरंभेली पर्याप्ति पूरी करे ते.

४ प्रत्येकनामकर्म -जेना उदयथी साधारण शरीर मुकी पोताना एक शरीरनो स्वामी थाय.

५ स्थिरनामकर्मः-जेना उदयथी दात, हाड प्रमुख दृढ बंध होय ते.

६ शुभनामकर्मः-जेना उदयथी नाभि उपरनो भाग सुंदर होय ते,

७ सैाभाग्यनामकर्मः-जेना उदयथी जीव, उपकार कर्याविना तथा संबधविना पण सौने प्रिय लागे ते.

८ सुस्वरनामकर्मः-जेना उदयथी घणा मधुर स्वरनी प्राप्ति थाय ते

९ आदेयनामकर्म -जे कर्मना उदये जीवनु वचन सौने मानवा आदरवा योग्य होय ते

१० यशनामकर्म-जेना उदयथी जीवनी यशकीर्त्ति सर्वत्र प्रसरी जाय ते

थावर सुहुम अपज्ज, साहारण अथिरअसुभदुभगाणि॥
दुस्सर अणाइज्जाजस, मिअनामेसेअरावीसं॥ २७ ॥

थावर-थावरनाम	असुभ-अशुभनाम	इअनामे-एनामे
सुहुम-सूक्ष्मनाम	दुभगाणि-दौर्भाग्यनाम	सेयरा-इतरसहित (स-इयरा)
अपज्ज-अपर्याप्तनाम	दुस्सर-दुस्वरनाम	
साहारण-साधारणनाम	अणाइज्ज-अनादेयनाम	वीस-वीस
अथिर-अस्थिरनाम	अजस-अयशनाम	

अर्थ -स्थावरनामकर्म, सूक्ष्मना०,अपर्याप्तना०, साधारणना०, अथिरना०, अशुभना०, दौर्भाग्यना०, दु स्वरना०, अनादेयना०, अयशना०, ए स्थावर दशक इतर (त्रसदशक) सहित गणता वीस प्रकृति थइ. ए रीते १४ पिंडप्रकृति, ८ प्रत्येक प्रकृति, १० त्रसदशक अने १० स्थावरदशक मळी नाम कर्मनी ४२ प्रकृति थइ ॥ २७ ॥

१ स्थावरनामकर्म -जेना उदयथी स्थावर शरीरनी प्राप्ति थाय ते

२ सूक्ष्मनामकर्म -जेना उदयथी घणां शरीर मळे छते पण आंखे देखाय नहीं एवा शरीरनी प्राप्ति थाय ते

३ अपर्याप्तनाम -जेना उदयथी स्वयोग्य पर्याप्ति पुरी कर्या विना मरण पामे ते.

अर्थः—गति आदि चौद पिंमप्रकृतिना अनुक्रमे उत्तर भेद कहे छे गति चार भेदे छे, जाति पांच भेदे छे, शरीर पांच भेदे छे, उपांग त्रण भेदे छे, बंधन पांच भेदे छे, संघातन पांच भेदे छे, संघयण छ भेदे छे, संस्थान छ भेदे छे, वर्ण पांच भेदे छे, गंध बे भेदे छे, रस पांच भेदे छे, स्पर्श आठ भेदे छे, आनुपूर्वी चार भेदे छे, विहायो गति बे भेदे छे एम चउद पिंम प्रकृतिना सर्व मली पांसठ भेद थया.

अमवीस जुआ तिनवइ, संते वा पनरबंधणे तिसयं ॥
बंधण संघाय गहो, तणूसु सामण्ण वण्ण चऊ ॥३१॥

अडवीसजुआ—अट्ठावीस प्रकृतियुक्त	पनरबंधणे—पंदरबंधन	गहो—ग्रहण
	तिसयं—एकसोत्रण	तणूसु—शरीरसाथे
तिनवइ—त्राणुं	बंधण—बंधन	सामन्न—सामान्यपणे
वा—अथवा	संघाय—संघातन	वण्णचउ—वर्णचतुष्क

अर्थः—उपरनी पांसठ प्रकृतिने (पराघातादि आठ, त्रशकादि दश, अने थावरादि दश ए) अठावीस प्रकृति युक्त करीए तेवारे नाम कर्मनी त्राणुं प्रकृति थाय. (आ त्राणुं प्रकृति एकसो अमतालीस प्रकृतिनी सत्तानी अपेक्षाए समजवी) अथवा पांच बंधनने ठेकाणे पंदर बंधन गणीए तो एकसो त्रण थाय, (त्यारे पिंम प्रकृतिना पांसठने ठेकाणे पंचोतेर भेद थाय अने सर्व मळी एकसो अठावन प्रकृति सत्ताए थाय) हवे नाम कर्मनी समसठ प्रकृति केवी रीते थाय ते कहे छे. पंदर बंधण अने पांच संघातन ए वीस प्रकृतिनुं ग्रहण पांच शरीरने विषे करतां पंदर प्रकृति ओछी थाय तथा सामान्यपणे वर्ण चतुष्क ए चार गणीए तो (एटले ए चारना उत्तर भेद वीस

थाय छे, तेने ठेकाणे चार गणता) सोळ प्रकृति ए ओछी थइ ए रीते एकसो त्रणमाथी छत्रीस प्रकृति ओछी करतां नामकर्मनी शेष सरुसठ प्रकृति रही ॥ ३१ ॥

इअ सत्तठी वंधो, दएअ नय सम्म मीसया वंध ॥
वंधुदए सत्ताए, वीस डुवीसऽठ वण्णासयं ॥ ३२ ॥

इअसत्तठी–एमसडसठ
वधोदएअ–वध, उदय अने उदिरणा
नय–न होय
सम्म–समकित मोहनी
मिसया–मिश्रमोहनीनो
वधे–वध
वधुदएसत्ताए–वध उदय- अने सत्ताये
वीस–एकसोवीस
दुवीस–एकसोवावीस
अट्ठवनसय-एकसोअट्ठावन

अर्थ –ए उपरनी सरुसठ प्रकृति वध. उदय अने उदीरणानी अपेक्षाये होय, तेमा पण सम्यक्त्व मोहनी अने मिश्र मोहनीनो वध न होय माटे वधे एकसोने वीस, उदये एकसोवावीस अने सत्ताये एकसो अठावन प्रकृति होय ते नीचे प्रमाणे॥ ३२ ॥

	ज्ञानाव०	दर्शनाव०	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम	गोत्र	अतराय	कुल
वध	५	९	२	२६	४	६७	२	५	१२०
उदय अने उदीरणा	५	९	२	२८	४	६७	२	५	१२२
सत्ता	५	९	२	२८	४	१०३	२	५	१५८
						९३			१४८

सम्यकत्व मोहनी तथा मिश्र मोहनीय ए बेनो वध न होय कारण के ते बेनु दळ,मिथ्यात्व मोहनीनु छे तेनु शुद्द, अर्द्ध शुद्ध स्वरुपते समकित अने मिश्रमोहनी, माटे वध एक मिथ्यात्व मोहनीनोज होय अने उदयमां त्रण होय

नरय तिरि नर सुरगइ,इग विअ तिअ चउ पणिंदिजाइओ
ओराल विउव्वाहार, तेअ कम्मण पण सरीरा;(पाठातरे)
ओरालिय वेओविय, आहारगे तेअ कम्मइगा ॥३३॥

नरय—नरकगति	बीअ—बेइंद्रिजाति	विउव्व—वैक्रिय
तिरि—तिर्यंचगति	तिअ—तेइंद्रिजाति	आहार—आहारक
नर—मनुष्यगति	चउ—चौरिंद्रिजाति	तेअ—तेजस
सुरगइ—देवगति	पणिंदि—पंचेंद्रिजाति	कम्मण—कार्मण
इग—एकेंद्रिजाति	ओराल—औदारिक	पण—पांच
		सरीर—शरीर नाम.

अर्थः—नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवता ए चार गति; एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्रि अने पंचेंद्रि ए पांच जाति; औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मण ए पांच शरीर ॥ ३३ ॥ अहींआं गतिजातिनो अर्थ सुगम छे. तेथी ते विशेषे नहीं लखतां शरीर कहे छे.

१ औदारिकः—उदार एटले सर्व शरीरमांहे प्रधान, कारण के, ते शरीरवडे मोक्ष साधी शकीए, तीर्थंकर गणधरादिनी पदवी भोगवीए, ते माटे औदारिक. ते शरीर मनुष्य तथा तिर्यंचने होय.

२ वैक्रियः—जे शरीर नानुं मोटुं अथवा सारुं खोटुं थइ शके ते वैक्रिय. ते बे प्रकारे छे (१) भवप्रत्ययी एटले ते गतिमां जे जीव उत्पन्न थाय तेनुं शरीर वैक्रियज होय, ते देवता तथा नारकीने होय. (२) लब्धि प्रत्ययते लब्धिवंत मनुष्य तथा तिर्यंचने होय.

३ आहारकः—तीर्थंकरनी ऋद्धि प्रमुख जोवाने चौद पूर्वधर मुनिराज मुंडा हाथ प्रमाण शरीर करीने तीर्थंकरनी पासे जाय ते.

४ तेजसः—खाधेला आहारने पचाववानी शक्तिवाळुं तथा तेजो लेश्यानिर्गम हेतु.

५ कार्मणः—कर्म पुद्गल मिश्रित ते कार्मण शरीर.

बाहू रु. पिठि सिरउर, उअरंग उवंग अंगुली पमुहा ॥
सेसाअंगोवंगा, पढमतणु तिगस्सुवंगाणि ॥ ३४ ॥

बाहु—भुजा	उअर—उदर	सेसा—बाकीना
उरु—साथळ	अंग—ए आठ अंग	अंगोवंगा—अंगोपांग
पिट्ठि—पीठ	उवंग—उपांग	तणुतिस्स—त्रण शरीरने
सिर—माथुं	अंगुली—आंगळी	उवंगाणि—उपांग आदिहोय
उर—हैयुं	पमुहा—प्रमुख	

अर्थ –बे भुजा, बे साथळ, वासो, मस्तक, छाती अने उदर ए आठ अग छे, तेना हाथ, पग, आगळीओ, वेढा प्रमुख उपांग छे अने बाकीना पर्व, रेखा, नख, रोमादिक अगोपाग छे ते, प्रथमना त्रण शरीरे होय, औदारिक शरीरे औदारिक अगो पाग, वैक्रिय शरीरे वैक्रिय अंगोपाग अने आहारक शरीरे आहारक अगोपाग कहीये ॥ ३४ ॥

उरलाइ पुग्गलाणं, निबद्ध बज्झतयाण संबधं ॥
जं कुणइ जउ सम तं बधण मुरलाई तणु नाम॥३५॥

उरलाइ–औदारिकादि	सबध–जोडे	बधण–बधन नामकर्म
पुग्गलाण–पुद्गलने	ज–जे	उरलाइ–औदारिकादि
निबध–पूर्वे बाधेला	कुणइ–करे	तणुनामा–पाच शरीरने
बज्झ–(हमणां) बधाता	जउसम–लाख-राळसरखु	नामे
तयाण–तेनी साथे	त–ते	

अर्थ –औदारिकादि शरीरना पुद्गलने पेहेलां बाधेला अने हाल बधाता तेनी साथे सबध करे, एटले जेम लाख अथवा राळ बे वस्तुओने सज्जड जोडी दे छे, तेना जेवु (लाखना जेवु) बधन नामकर्म छे ते औदारिक बधन, वैक्रिय बंधन वगेरे पाच शरीरने नामे जाणवु ॥ ३५ ॥

हवे सघातननाम कहे छे

ज सघायइउरला, इ पुग्गले तणगणव दंताली ॥
त संघाय बधण, मिवतणु नामेण पचविहं ॥ ३६ ॥

ज–जे	तणगणव–तृणना समूह	सघाय–सघातननाम
सघायइ–एकठां करवां	मध्ये	बधणमिव बधननीपेरे
उरलाइ–औदारिकादि	दताली–दातोनी पेठे	तणुनामेण–शरीरनामे
पुग्गले–पुद्गल मध्ये	त–ते	पचविहं–पांच भेद छे

अर्थः—औदारिकादि पांच शरीरना पुद्गल प्रत्ये, दंताली जेम तृणना समूहने एकठो करे छे, तेनी पेठे जे कर्म एकठां करे ते संघातन नाम कर्म जाणवुं अने बंधननी पेठे तेना पण पांच शरीरने नामे पांच भेद छे ॥ ३६ ॥

जे कर्मना उदयथी जीव औदारिकादिक पुद्गल मेळवे ते औदारिक संघातन अने जे कर्मना उदयथी जीव औदारिक पुद्गल मेळवी शरीर बांधे ते औदारिक बंधन एम पांचे शरीरनुं जाणी लेवुं.

ओराल विउव्वाहा, रयाणं सगतेअ कम्मजुत्ताणं ॥
नव बंधणाणि इअर, दुसहिआणि तिन्नि तेसिंच ॥३७॥

ओराल—औदारिक	तेअ—तेजस साथे	इअर—इतर
विउव्व—वैक्रिय तथा	कम्म—कार्मण साथे	दु—बेनीसाथे
आहारयाणं—आहारकने	जुत्ताणं—युक्त करतां	सहिआणि—सहित करतां
सग—पोतपोतानी साथे जोडतां	नवबंधणाणि—नव बंधन थाय	तिन्नि—त्रण त्रण बंधन
		तेसिंच—तेमनां

अर्थः—औदारिक, वैक्रिय अने आहारक ए त्रणने पोतपोतानी साथे जोडतां त्रण बंधन थाय अने तेजस तथा कार्मण साथे जोडतां बीजां छ थाय (एटले नव थयां) अने ते छने तेजस तथा कार्मण साथे जोडतां बीजां छ थयां एटले सर्व मळी पंदर बंधन थयां ॥ ३७ ॥

१ औदारिक औदारिकबंधन, २ वैक्रियवैक्रिय बंधन, ३ आहारक आहारक बंधन, ए त्रणने तेजस अने कार्मण साथे जोडतां, ४ औदारिक तेजस बंधन, ५ वैक्रिय तेजस बंधन, ६ आहारक तेजस बंधन, ७ औदारिक कार्मण बंधन, ८ वैक्रिय कार्मण बंधन, ९ आहारक कार्मण बंधन, हवे ए छने तेजस तथा कार्मण साथे जोडतां, १० औदारिक तेजस कार्मण बंधन, ११ वैक्रिय तेजस कार्मण बंधन, १२ आहारक तेजस कार्मण बंधन, १३ तेजस तेजस बंधन, १४ तेजस कार्मण बंधन, १५ कार्मण कार्मण बंधन.

हवे संघयण कहे छे

संघयण मठि निचओ, तं छद्धा वज्जरिसह नारायं ॥
तहय रिसह नारायं, नारायं अद्धनारायं ॥ ३८ ॥

संघयण–संघयण ते	तछद्धा–ते छ प्रकारे	रिसहनाराय ऋषभनाराच
अठि–अस्थिनो	वज्जरिसहनाराय–वज्रऋषभ नाराच	नाराय–नाराच
निचओ–समूह	तहय–तेमज	अद्धनाराय–अर्द्धनाराच

अर्थ –हाडकानो जे समूह (मेळाप) तेने संघयण कहीए, ते छ प्रकारे छे (१) वज्रऋषभ नाराच, (२) ऋषभनाराच (३) नाराच, (४) अर्द्धनाराच. ॥३८॥ संघयण एटले साधाना वे हाडकानु जोडाणु ते

वज्रऋषभ नाराच संघयण–जे सांधाना बे पासे *मर्कट बंध होय ते उपर ऋषभ एटले हाडनो पाटो ते उपर ते त्रणेने भेदे एवी वज्रखीली. एवी रीते जे संघयण जोडाएलां होय
ऋषभनाराच'–उपरना करता वज्र (खीली) ओछी होय ते.
नाराच'–पाटो अने खीली न होय
अर्धनाराचः–जेने एक पासे मर्कटबंध अने एक पासे खीली होय ते

कीलिअ छेवठ्ठ इह, रिसहो पट्टो अ कीलिआ वज्जा ॥
उभओ मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९ ॥

कीलिअ–कीलिका	कीलीआ–खीली रूपते	नाराय–नाराच
छेवठ्ठ–छेवठ्ठ	वज्जा–वर्जीने	इम–ए संघयण
इह–अहींआ	उभओ–बे पासे	उरालंगे–औदारिक शरीरे होय.
रिसहोपट्टो–ऋषभ ते पाटो	मक्कडबंधो–मर्कटबंध	

अर्थः–(५) कीलिका संघयण (६) छेवठ्ठु संघयण. अहींया ऋषभ ते पाटा सरखुं हाड समजवुं अने खीलीरूप ते वज्र स-

*वान्दरी जेम पोताना बचाने पेटे वळगाडे छे तेम.

मजवुं, अने वे पासे आंकमा जरावत्वा तेने मर्कटबंध एटले ना-
राच कहीए. ए संघयण औदारिक शरीरे होय ॥ ३ए ॥

कीलिकाः—ज्यां हाडसंधिमां एक खीली मात्र होय.

छेवठुंः—ज्यां हाड फक्त, एक बीजाने अडकीने रह्यां होय.

हवे ते संघयणनां संस्थान होय माटे संस्थान कहे छे.

समचउरंसं निग्गो, ह साइ खुज्जाइ वामणं हुंम ॥
संठाणा वन्न किण्ह, नील लोहिय हलिद्द सिआ ॥४०॥

समचउरंसं—समचतुरस्र	वामणं—वामन	नील—नीलोवर्ण
निग्गोह—न्यग्रोध	हुंडं—हुंड	लोहित—लालवर्ण
साइ—सादी	संठाणा—संस्थान [मकर्म	हलिद्द—पीतवर्ण
खुज्जाइ—कुब्ज	वण्णकिण्ह—कृष्ण वर्ण ना-	सिआ—श्वेतवर्ण

अर्थः—१ समचतुरस्र, २ न्यग्रोध, ३ सादि, ४ कुब्ज, ५ वा-
मन अने ६ हुंम ए ठ संस्थान जाणवां हवे पांच वर्ण कहे छे
कृष्ण (काळो) वर्ण, नील (नीलो) वर्ण, लोहित (लाल) वर्ण,
हलिद्द (हळदर जेवो पीळो) वर्ण, अने श्वेत (धोळो) वर्ण ।४०।

समचतुरस्रसंस्थानः—पलांठी वाळीने बेठां थकां चारे खुणे सरखुं अंतर होय. ते सर्व देवता तथा तीर्थंकरने होय छे.

न्यग्रोधसंस्थानः—वडना झाडनी पेठे नाभी उपरनो भाग मानोपेत अने नाभी नीचेनो भाग हीन होय.

सादिसंस्थानः—नाभी नीचेनो भाग मानो पेत अने उपरनां अंग हीन होय ते.

कुब्जः—जेना छाती, पेट, अने वांसो एटलां अंग अधम होय अने पग, हाथ, मुख, अने ग्रीवादिक उत्तम होय.

वामनः—ज्यां हाथ अने पग हीन होय अने बीजां अंग उत्तम होय.

हुंडः—जेनां सर्व अंग अधम होय.

सुरही दुरही रस पण, तित्त कमु कसायअंबिला महुरा॥
फासा गुरु लहु मिउखर, सिउएह सिणिद्धरुखठा ॥४१॥

सुरही-सुरभिगंध	अंबिला-खाटोरस	खर-खर (बरसट)
दुरही-दुरभिगंध	महुरा-मधुर	सी-शीत
रसपण-रसपांच	फासा-स्पर्श	उ ह-उष्ण
तित्त-तिक्तरस	गुरु-भारे	सिणिद्ध-रुक्ष (लुखो)
कडु-कडुरस	लहु-लघु (हलको)	रुक्ख-रुक्ष (लुखो)
कसाय-कपायेलोरस	मिउ-मृदु (कोमळ)	अट्ठ-ए आठ स्पर्श

अर्थ–गंध बे प्रकारे छे. (१) सुरभि ते फूलना सुगंध सरखो शरीरनो वास होय, (२) दुरभि ते खराब गंध युक्त शरीर होय. रस पांच प्रकारे छे (१) तिक्त ते कडवो, (२) कटु ते तीखो, (३) कसाय ते कपायेलो, (४) आम्ल ते खाटो, (५) मधुर ते मीठो. हवे आठ स्पर्श कहे छे (१) गुरु ते भारे, (२) लघु ते हळवो, (३) मृदु ते कोमळ, (४) खर ते बरसठ, (५) शीत ते ठंडो, (६) उष्ण ते उन्हो (७) स्निग्ध ते चीकणो, (८) रुक्ष ते लुखो ॥४१॥ ए प्रमाणे जे जे स्पर्श युक्त शरीर होय ते ते स्पर्श नाम कहीये.

वर्णादिनी वीस प्रकृति मांहे शुभ अशुभ केटली ते कहे छे

नील कसिणं दुगंधं, तित्त कडुअंगुरुं खरं रुक्खं ॥
सीअ च असुह नवगं, इक्कारसगं सुभ सेसं ॥ ४२ ॥

नील-नीलवर्ण	गुरु-गुरुस्पर्श	असुह-अशुभ छे
कसिण-कृष्णवर्ण	खर-खरस्पर्श	इक्कारसग-अगिआर
दुगंध दुर्गंध	रुक्ख-रुक्षस्पर्श	शुभ-शुभ
तित्त-तिक्त, कडवो	सीअच-सीतस्पर्श	सेस-बाकीनी
कडुअ-कटु, तीखो	नवग-नव प्रकृति	

अर्थ–(उपरनी वर्ण चतुष्कनी वीस प्रकृतिमांथी) नील अने कृष्ण ए बे वर्ण, दुरभिगंध, कडवो अने तीखो ए बे रस,

गुरु, खर, रुक्ष अने शीत ए चार स्पर्श, एम नव प्रकृति अशुभ जाणवी. बाकी अगीआर प्रकृति शुभ छे ॥ ४२ ॥

हवे आनुपूर्वी नाम कर्म कहे छे.

चउहगइव्वणुपुव्वी. गइ पुव्विदुगं तिगं निआउजुअं ॥
पुव्वि उदओ वक्के, सुह असुह वसुट्ट विहगगइ ॥४३॥

चउह—चारभेदे	निआउजुअं—पोताना आयुसहित करतां	सुह—शुभ
गइव्व—गतिनीपेरे	तिगं—त्रिक थाय	असुह—अशुभ
अणुपूव्वी-आणु पूर्व्वी नाम छे	पुव्वीउदओ—आनुपूर्व्वी-नो उदय	वस—वृषभ
गइपुव्विदुगं—गतिआणु पूर्व्वी दुग	वक्के—वक्रगतिये होय	उट्ट—उंट
		विहगगइ-विहायो गति नाम.

अर्थः—चार प्रकारे गतिनी पेठे अनुपूर्व्वी छे. गति अने अनुपूर्व्वी मळीने द्विक कहेवाय, अने तेमां आयुष्य मेळवतां अणुपूर्व्वी त्रिक थाय. अनुपूर्व्वीनो उदय ते विग्रह गतिये होय. वळदनी पेठे शुभ अने उंटनी पेठे अशुभ चाले ए वे प्रकारे विहायोगति नाम कहीए ॥ ४३ ॥

आनुपूर्व्वी वक्रगतिये एक गतिमांथी वीजी गतिमां जतां नाथवडे वळ्दनीपेरे खेंची नियमित रस्ते लइ जनार, ते चार प्रकारे छे नरकानुपूर्व्वी, तिर्यंचानुपूर्व्वी, मनुष्यानुपूर्व्वी, अने देवानुपूर्वी. अनुपूर्वी, गति अने आयुष्य ए त्रणे संबंधवाळां छे, तेथी ज्यां द्विक कहे त्यां गति अने अनुपूर्व्वी लेवां अने त्रिक कहे त्यां आयुष्य वधारी लेवुं. जेम नरकद्विक, एटले नरकनी गति अने नरकनी आणु पूर्वी. अने नरक त्रिक एटले नरकगति, नरकनी अणुपूर्वी अने नरकायु एम चार गति आश्री जाणी लेवुं.

हवे आठ प्रत्येक प्रकृतिनुं स्वरूप कहे छे.

परघा उदया पाणी, परेसिं बलिणंपि होइ दुद्धरिसो ॥
ऊससिण लद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा ॥ ४४ ॥

परघा–पराघातना	होइ–होय	(पामवुं)
उदया–उदयथी	दुद्धरिसो–दु:खे जीतवा योग्य होय	हवइ–होय
पाणी–प्राणी		उसासनाम–उश्वासनाम कर्मना
परेसिं–बीजा	उससिण–श्वासोश्वासनु	
बलिणपि–बळवतनेपण	लद्धिजुत्तो–लब्धि युक्त–	वसा–वशेकरीहोय

अर्थ.–पराघात नाम कर्मना उदयथी प्राणी पोताथी बळवाळा बीजा जनो वरू पण जीतावो दुष्कार थइ पडे अर्थात् तेने जीती शकाय नहीं अने श्वासोश्वासनु पामवु ते उच्छ्वासनामकर्मना वशे करी होय ॥ ४४ ॥

रवि बिंबेउ जिअंगं, ताव जुअ आयवाउ नउजलणे ॥
जमुसिण फासस्स तहिं, लोहिय वण्णस्स उदउत्ति ॥४५॥

रविबिंबेउ–सूर्यबिंबनेविषे	आयवाउ–आतपनाउदये	उष्ण स्पर्शनो उदय
जिअग–(रत्नना) जीवनु अग	नउजलणे–अग्निना शरीरे न होय	तहिं–ते अग्निना शरीरेछे
		लोहिअवस्स रातावर्णनो
तावजुअ–तापयुक्त	जमुसिणफासस्स–जे माटे	उदउत्ति–उदय छे.

अर्थ.–रवि मरूळमा बादर अपर्याप्ता रत्नना जीवनुज अंग ताप युक्त एटले बीजाने तापकारी थाय छे. ते आतप नाम कर्मना उदयथी तेवो आतप कर्मनो उदय अग्निकायना जीवने नथी केमके तेने तो उष्ण स्पर्श अने लालवर्णनो उदय छे ॥ ४५ ॥

सूर्यमडळनो जे प्रकाश आवे छे, ते प्रकाश विमानमा रहेला रत्नोनो छे, ते रत्न बादर पृथ्वीकाय छे अने स्पर्शे शीत छे, परतु तेमनो प्रकाश ताप उपजावे, कारण के तेमने आतप नाम कर्मनो उदय छे ते सिवाय बीजाने होय नहीं अहीं कोइ शका करे के अग्निनो पण तेजो प्रकाश छे ? तो तेनु केम ? तो उत्तर के अग्निनु शरीरज उष्ण छे, एटले तेने उष्ण स्पर्श नाम कर्मनो उदय छे तेथी तेने स्पर्श करतां अथवा पासे जतां ताप लागे, परतु दूरथी लागे नहीं

अणुसिण पयासरूवं, जिअंगमुज्जो अएइ हुज्जोआ ॥
जइदेवुत्तर विक्किअ, जोइसखज्जोअ माइव ॥ ४६ ॥

अणुसिण—शीत	उज्जोआ—उद्योतनो उदय	यरूप करतां
पयासरुवं—प्रकाशरूप	जइ—यतिने	जोइस—ज्योतिषी
जिअंगं—जे जीवनुं अंग	देव—देवने	खज्जोअमाइव—खद्योत
उज्जोअ—उद्योत (करे)	उत्तरविक्किय—उत्तर वैक्रि-	आदिनीपरे
एइह—ए अहींआं		

अर्थः—हवे उद्योतनाम कहे छे—जे जीवनुं शरीर उष्ण नहीं परंतु शीत प्रकाशरूप उद्योत करे ते अहींआं उद्योतनाम कर्मनो उदय जाणवो. ते उदय यति अने देवताने उत्तर वैक्रिय रूप करतां होय, तथा ज्योतिषीने विमाने खद्योत (आगीओ फूदां जेवो जीव) आदिनी पेरे शरीरे उद्योततानो उदय होय॥४६॥

अंगं न गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया॥
तित्थेण तिहुअणस्सवि, पुज्जो से उदओ केवलिणो४७ ॥

अंगं—शरीर	अगुरुलहु—अगुरुलघुना	तिहुअणस्सवि—त्रण भुव-नने पण
नगुरु—नहींभारे	उदया—उदयथी होय	पुज्जो—पूजनीक
नलहुअं—नहींहळवुं	तित्थेण—तीर्थंकर नाम कर्मना उदयथी	सेउदओ—तेनो उदय
जायइ—होय		केवलीणो—केवलीने होय
जीवस्स—जीवने		

अर्थः—जे शरीर भारे पण नहीं तेम हळवुं पण नहीं, तेवुं शरीर जीवने अगुरु लघुनाम कर्मना उदयथी होय, अने त्रण भुवनने विषे पूजनीकपणुं तीर्थंकर नामकर्मना उदयथी होय तेनो उदय केवळ ज्ञानीनेज होय (ते केवळज्ञान उपनेज थाय पण छद्मस्थ पणे न होय) ॥ ४७ ॥

अंगोवंग निअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं ॥

उवघाया उवहम्मइ, सतणुं अवयवलंबि गाईहिं ॥४८॥

अगोवग–अंगोपांगनु	सुत्तहार–सुतार	सतणु–पोताना शरीरना
निअमिण–नियमित	सम–सरखु	अवयवे–अवयवेकरी
निम्माण–निर्माण नामकर्म	उवघाया–उपघातनाम	लंबिगाईहिं–पडजीभी
कुणइ–करे	उवहम्मइ–हणाय	आदिके करी

अर्थ –निर्माणनामकर्म शरीरना अंगोपांग नियमित (पोतपोतानी जग्याए लाववानु) करे ठे, ते नामकर्म सुतार सरखु जाणवु उपघातनामकर्मना ऊदयथी पोताना शरीरना अवयव जेवाके पमजीन्नी चोरदांत आदिके करी पोतेज हणाय पीमाय ॥ ४८ ॥

हवे त्रसादि दश प्रकृति कहे छे

वि ति चउ पणिंदि तस्सा, बायरओ बायराजिआ थूला ॥
निअ निअ पज्जत्ति जुआ, पज्जत्ता लध्दि करणेहिं ॥४ए॥

वितिचउ–बेइंद्रि, ते इंद्रि, चौरिंद्रि	बायरा–बादर	जुआ–युक्त, सहित
	जीआ–जीव	पज्जत्ता–पर्याप्ता
पणिंदि–पचेंद्रि	थूला–स्थूल	लद्धि–लब्धिए करी
तसा–त्रसनामकर्म	निअनिअ–पोतपोतानी	करणेहिं–करणे करी
बायरओ बादरना उदयथी	पज्जत्ति–पर्याप्ति	

अर्थ –बेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चौरिन्द्रि अने पचेंन्द्रि ए पेहेलु त्रस नामकर्म, तथा बीजा बादरनाम कर्मना ऊदयथी जीव बादर अथवा स्थूल कहेवाय अने त्रीजु पोतपोतानी पर्याप्तिए युक्त जे जीव होय ते पर्याप्ति नामकर्म, लब्धि तथा करण ए बे न्नेदे करी जाणवु ॥ ४ए ॥

अहींआ पर्याप्तिनी व्याख्या विशेष समजावे छे

पर्याप्ति एटले जीवनी शक्ति विशेष, ते छ छे, आहार, शरीर, इंद्रिय, श्वासोश्वास, भाषा, अने मनपर्याप्ति. आहार पर्याप्ति एटले जीवने आहार लेवानो

जे शक्ति विशेष ते, शरीर पर्याप्ति एटले लीधेला आहारने पचावीने शरीर बांधवानी जे शक्ति विशेष ते, एम छ ए पर्याप्ति जाणी लेवी; ते पर्याप्तिओ एकेंद्रियने चार होय छे. विकलेंद्रि तथा असन्नी पचेंद्रिने पांच होय छे अने सन्नि पंचेंद्रिने छ होय छे, ते मांहेनी पोतपोताना जेटली पर्याप्तिओ होय तेटली पर्याप्तिओ पुरी कर्या विना जे जीव मरे नहीं, ते पर्याप्ति नामकर्मना उदयथी होय.

पोत पोतानी जेटली पर्याप्ति होय तेटली पर्याप्तिओ जीव उत्पत्तिना प्रथम समयथी साथे आरंभे, त्यार पछी आहार पर्याप्ति एक समये पूर्ण करे, ते पछी अंतर मुहूर्त्ते शरीर पर्याप्ति पूर्ण करे, ते पछी औदारिक शरीरवाळो अंतरमुहूर्त्त मुहूर्त्तने आंतरे बाकीनी चार पर्याप्ति पुरी करे, अने वैक्रिय तथा आहारक शरीरवाळो समय समयने अंतरे पूर्ण करे. आगली वे पर्याप्ति सूक्ष्म छे. तेथी काळनो फेर थाय. जेम छ जणीओ कांतनारी साथे कांतवा बेठी तेमां जे जाडुं कांते ते वेहेलुं कोकडुं पूरुं करे अने सूक्ष्म कांते ते मोडुं पुरुं करे.

हवे ते आरंभेली पर्याप्तिओ पूरी कर्या पछी जे जीव मरे ते जीव लब्धि पर्याप्तो कहेवाय. तथा करण एटले आहार, शरीर अने इंद्रिय ए त्रण पर्याप्ति पूर्ण थइ नथी त्यां सुधी तेने करण अपर्याप्तो कहीए अने ए त्रण पुरी थया पछी करण पर्याप्तो कहीए. अथवा जे जे पर्याप्ति पूरी नथी करी ते तेनी अपेक्षाये करण अपर्याप्तो अने पूरी करी तेनी अपेक्षाए करण पर्याप्तो कहीए. अने जे कर्मना उदयथी आरंभेली पर्याप्ति पूरी कर्या विना जे जीव मरे ते लब्धि अपर्याप्तो कहेवाय, ते अपर्याप्ता नाम कर्म.

पत्तेअ तणू पत्ते, उदएणं दंत अट्ठिमाइ थिरं ॥
नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्व जण इट्ठो ॥५०॥

पत्तेअतणु—प्रत्येकनुं जूदुं शरीर	अट्ठिमाइ—अस्थिआदि	सुभगाओ—सौभाग्यनामकर्मना उदयथी
पत्ते—प्रत्येक नामकर्म	थिरं—स्थिर होय	सव्वजण—सर्वे जणने
उदएणं—उदयेकरी	नाभुवरि—नाभि उपरनां	इट्ठो—इष्ट, वह्लभलागे
दंत—दांत	सिराइ—मस्तकआदि	
	सुहं—शुभ होय	

अर्थः—जेना उदयथी जीव एक शरीरने विषे उत्पन्न थाय, साधारणपणुं न पामे ते प्रत्येक नामकर्म कहेवाय. जेना उद-

यथी दंत अस्ति वगेरेनो वध स्थिर होय ते स्थिर नामकर्म. जेना उदयथी नाभि ऊपरना मस्तक वगेरे अग सारां होय तथा तेना स्पर्शे कोइ अप्रिति पामे नही ते शुभ नामकर्म, तेनाथी वीपरित ते अशुभ नामकर्म तथा जेना उदयथी विना कारणे सर्व मनुष्यने पण प्रिय लागे ते सौभाग्य नामकर्म तेथी विपरीत ते दौर्भाग्य नामकर्म कहीए ॥ ५० ॥

सुसरा महुर सुह झुणी, आइज्जा सवलोअ गिज्झवओ॥
जसओ जसकित्तीओ, थावर दसगं विवज्जथ्थ ॥ ५१ ॥

सुसरा–सुस्वर	आइज्जा–आदेयना०	जसओ–जशना०थी होय
महुर–मीठो	सव्वलोअ–सर्वलोकने	जसकित्तीओ–यशकीर्त्ति
सुह–सुखदाइ	गिज्झ–ग्रहवायोग	थावरदसग–थावरदशक
झुणी–ध्वनी, स्वर	वओ–वचनहोय	विवज्जथ्थ–वीपरित अर्थ जाणवो

अर्थ.–मधुर अने सुखदाइ ध्वनी (सुर) होय ते आवमु सुस्वरनाम कर्मना उदयथी होय, नवमा आदेय नाम कर्मना उदयथी जेनु वचन सर्व लोकने माननीय एटले गृहण करवा योग्य होय जेना उदयथी सर्व ठेकाणे यश कीर्त्ति प्रसरे ते दशमु यशनाम कर्म ए त्रसदशक नाम कर्म प्रकृति जाणवी तेथी वीपरीत स्थावर दशक नामकर्म जाणवु ॥ ५१ ॥

गोअ–गोत्र नामकर्म	सुघड–सारा घडा जेवु	लाभे–लाभांतराय
दुह–बे भेदे	भुभलाइअ–मदिरादिना घडा जेवु	भोग–भोगांतराय
उच्च–उचैर्गोत्र	विग्घ–अतरायकर्म	उवभोगेसु–उपभोगांतराय
नीअ–नीचैर्गोत्र	दाणे–दानांतराय	विरिएअ–वीर्यांतराय
कुलालइव–कुभारनीपेरे		

गोअं दुहुच्चनीअं, कुलाल इव सुघड भुंभलाइअ ॥

विग्धं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु विरिएअ ॥ ५२ ॥

अर्थः-गौत्रकर्म बे प्रकारे छे. एक उच्चैगौत्र अने बीजुं नीचैगौत्र ते कुंभारनी पेरे घडेला सारा घडा सरखुं उच्चैगौत्र अने खराब मदिरादिनो घडो घडे तेना सरखुं नीचैगौत्र तथा अंतराय कर्म पांच प्रकारे छे. (१) दानांतराय, (२) लाभांतराय, (३) भोगांतराय, (४) उपभोगांतराय, (५) वीर्यांतराय. ॥ ५२ ॥

उच्चगोत्र-जेना उदयथी क्षत्री, काश्यप विगेरे उत्तम जातिमां तथा उत्तम कुळमां जन्म थाय.

नीच्चगोत्र-भिक्षुक आदि नीच कुळमां उत्पन्न थाय.

दानांतराय-जेना उदयथी सुपात्र मळे थके तथा दान देवानी इच्छा छते तथा शुद्ध द्रव्य छते पण दान दइ शकाय नहीं.

लाभांतराय-जेना उदयथी देनार माणस दातार छतां तथा तेना घरमां वस्तु छतां अने मागनार डाह्यो छतां पण इच्छित वस्तु न मळे ते.

भोगांतराय तथा उपभोगांतराय-जेना उदयथी भोगोपभोग्य वस्तुनी प्राप्ति थया छतां तथा पोते भोगववा योग्य छतां पण भोगवाइ शकाय नहीं.

वीर्यांतराय-जेना उदयथी पोते जुवान, रोगरहित तथा बळवान छतां पण पोतानी शक्ति फोरवाइ शकाय नहीं.

हवे कर्मनी एकसोअट्ठावन प्रकृति जणावे छे.

८ कर्मनी मूलप्रकृति
- १ ज्ञानावरणीयकर्म
- २ दर्शनावरणीयकर्म
- ३ वेदनीयकर्म
- ४ मोहनीयकर्म
- ५ आयुकर्म
- ६ नामकर्म
- ७ गोत्रकर्म
- ८ अंतरायकर्म

५ ज्ञानावरणीय
- १ मतिज्ञानावरणीय
- २ श्रुतज्ञानावरणीय
- ३ अवधिज्ञानावरणीय
- ४ मनपर्यवज्ञानावरणीय

५ केवलज्ञानावरणीय
९ दर्शनावरणीयनीप्रकृति
१ चक्षुदर्शनावरणीय
२ अचक्षुदर्शनावरणीय
३ अवधिदर्शनावरणीय
४ केवळदर्शनावरणीय
५ निद्रा
६ निद्रानिद्रा
७ प्रचला
८ प्रचलाप्रचला
९ थीणद्धी
२ वेदनीयकर्मनी
१ शातावेदनीय
२ अशातावेदनीय
२८ मोहनीयकर्मनी
१ सम्यकत्वमोहनीय
२ मिश्रमोहनीय
३ मिथ्यात्वमोहनीय
(दर्शनमोहनिय ३)
४ अनंतानुबंधक्रोध
५ अप्रत्याख्यानीयक्रोध
६ प्रत्याख्यानीयक्रोध
७ सज्वलनक्रोध
(सोळकषाय)
८ अनंतानुबंधीमान
९ अप्रत्याख्यानीयमान
१० प्रत्याख्यानीयमान
११ सज्वलनमान
१२ अनंतानुबंधीमाया
१३ अप्रत्याख्यानीयमाया
१४ प्रत्याख्यानीयमाया
१५ सज्वलनमाया
१६ अनंतानुबंधि लोभ
१७ अप्रत्याख्यानीय लोभ
१८ प्रत्याख्यानीय लोभ
१९ सज्वलन लोभ
२० हास्य
२१ रति
२२ अरति
२३ शोक
२४ भय
२५ दुगछा
२६ पुरुषवेद
२७ स्त्रीवेद
२८ नपुंसकवेद
(चारित्रमोहनीय २५ नवनोकषाय)
१०३ नामकर्मनी प्रकृति
१ नरकगति नामकर्म
२ तिर्यंचगति नाम०
३ मनुष्यगति नाम०
४ देवगति नाम०
(१ गतिनाम)
५ एकेंद्रियजाति नाम०
६ बेइंद्रियजाति नाम०
७ तेइंद्रियजाति ना०
८ चौरिंद्रिय जातिना०
९ पचेंद्रिय जातिना०
(२ जातिनाम)
१० औदारिक शरीरना०
११ वैक्रिय शरीर नाम
१२ आहारक शरीरना०
१३ तेजस शरीरना०
१४ कार्मण शरीरना०
(३ शरीरनाम)

४ अंगोपांग नाम०

१५ औदारिक अंगोपांगना.
१६ वैक्रिय अंगोपांगना०
१७ आहारक अंगोपांगना०

५ बंधन नामकर्म

१८ औदारिक बंधनना०
१९ औदारिक तेजस बंधन नाम
२० औदारिक कार्मण बंधन नाम
२१ औदारिक तेजस कार्मण बंधन नाम०
२२ वैक्रिय वैक्रिय बंधनना.
२३ वैक्रिय तेजस बंधनना.
२४ वैक्रिय कार्मण बंधनना.
२५ वैक्रिय तेजस कार्मण बंधन नाम०
२६ आहारक आहारक बंधन नाम०
२७ आहारक तेजस बंधन नाम०
२८ आहारक कार्मण बंधन नाम०
२९ आहारक तेजस कार्मण बंधन नाम०
३० तेजस तेजस बंधन ना.
३१ तेजस कार्मण बंधन ना.
३२ कार्मण कार्मण बं० ना.

नामकर्म

३३ औदारिक संघातन नामकर्म
३४ वैक्रिय संघातन नाम०

६ संघातन

३५ आहारक संघातन ना.
३६ तेजस संघातन नाम०
३७ कार्मण संघातन ना०

७ संघयन नामकर्म

३८ वज्रऋषभ नाराच सं.
३९ ऋषभनाराच सं० ना.
४० नाराच संघयण ना०
४१ अर्द्धनाराच संघयनना.
४२ किलीका संघयन ना०
४३ छेवट्ठं संघयण ना०

८ संस्थान नामकर्म

४४ समचतुरस्र संस्थान
४५ न्यग्रोध संस्थान
४६ सादि संस्थान
४७ वामन संस्थान
४८ कुब्ज संस्थान
४९ हुंड संस्थान

९ वर्ण नामकर्म

५० कृष्णवर्ण नाम०
५१ नीलवर्ण नाम०
५२ लोहितवर्ण नाम०
५३ हारिद्रवर्ण नाम०
५४ श्वेतवर्ण नाम०

१० गंध नामकर्म

५५ सुरभिगंध नाम०
५६ दुरभिगंध नाम०

११ रस नामकर्म

५७ तिक्तरस नाम०
५८ कटुकरस नाम०
५९ कषायरस नाम०
६० आम्लरस नाम०
६१ मधुररस नाम०
६२ खरस्पर्श नाम०

६३ मृदुस्पर्श नाम०
६४ गुरुस्पर्श नाम०
६५ लघुस्पर्श नाम०
६६ शीतस्पर्श नाम०
६७ उष्णस्पर्श नाम०
६८ स्निग्धस्पर्श नाम०
६९ रुक्षस्पर्श नाम०

१२ स्पर्श नामकर्म

७० नरकानुपूर्वी
७१ तिर्यंचानुपूर्वी
७२ मनुष्यानुपूर्वी
७३ देवानुपूर्वी

१३ अनुपूर्वीना०

७४ शुभ विहायोगति
७५ अशुभ विहायोगति

विहायो- गति १४

७६ पराघात नाम
७७ उच्छ्वास नामकर्म
७८ आतप नामकर्म
७९ उद्योत नामकर्म
८० अगुरुलघु नामकर्म
८१ तीर्थंकर नामकर्म
८२ निर्माण नामकर्म
८३ उपघात नामकर्म

आठ प्रत्येक प्रकृति

८४ त्रस नामकर्म
८५ बादर नामकर्म
८६ पर्याप्त नामकर्म
८७ प्रत्येक नामकर्म
८८ स्थिर नामकर्म
८९ शुभ नामकर्म
९० सौभाग्य नामकर्म
९१ सुस्वर नामकर्म
९२ आदेय नामकर्म
९३ यशो नामकर्म

त्रसदशक

९४ स्थावर नामकर्म
९५ सूक्ष्म नामकर्म
९६ अपर्याप्त नामकर्म
९७ साधारण नामकर्म
९८ अस्थिर नामकर्म
९९ अशुभ नामकर्म
१०० दौर्भाग्य नामकर्म
१०१ दुःस्वर नामकर्म
१०२ अनादेय नामकर्म
१०३ अयश नामकर्म

स्थावरदशक

२ गोत्र कर्मनी
१ उच्चैर्गोत्र
२ नीचैर्गोत्र

५ अंतराय कर्मनी
१ दानांतराय
२ लाभांतराय
३ भोगांतराय
४ उपभोगांतराय
५ वीर्यांतराय

एवं आठ कर्मनी १५८ प्रकृति

सिरि हरिअसमं एअं, जह पडिकूलेण तेणरायाइ ॥
नकुणइ दाणाइअं, एवं विग्घेण जीवोवि ॥ ५३ ॥

सिरिहरिअ-श्रीगृही, भंडारी	तेणरायाइ-ते राजादिक	विग्घेण-अंतरायकर्मेकरी
समंएअं-ते सरखुं	नकुणइ-न करी शके	जीवोवि-जीव (रुपराजा) पण
जेह-जेम	दाणाइअं-दानादिक	
पडिकूलेण-प्रतिकूलथके	एवं-ए प्रकारे	

अर्थः-सिरिश्रीलक्ष्मी तेनुं घर एटले भंडार तेनो अधिकारी ते भंडारी तेना सरखुं अंतरायकर्म कह्युं छे. एटले जेम भंडारी प्रतिकूलथके राजादिक दान आपवानी इछाकरे पण छते योगे दान, लाभ, भोगादिक न करी शके एम अंतराय कर्मे करी जीवरुप राजा पण, दानादिक करी शके नहीं ॥५३॥

हवे ए आठ कर्म बांधवाना मुख्य हेतु मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग ए चार छे ते आगळ कहेवाशे परंतु अहीं स्थूळ हेतु कहे छे.

त्यां प्रथम ज्ञानावरण तथा दर्शनावरणना बंध हेतु कहे छे.

पडिणीअत्तण निन्हव, उवधाय पओस अंतराएणं ॥
अच्चासायणयाए, आवरण दुगं जीओ जयई ॥ ५४ ॥

पडिणीअत्तण-(गुरु आदिकनीप्रत्यनीकताए)	पओस-प्रद्वेप राखवे	आशातना करवे करी
निन्हव-ओलववे	अंतरायेणं-अंतराय करवे करी	आवरण दुगं-बेआवरण
उपघात-हणवेकरी		जिओ-जीव
	अच्चासायणयाए-अंतयंत	जयई-उपार्जे

अर्थः-गुरुआदिकनुं प्रत्यनीक एटले अनिष्ट आचरण करवे करी, गुरुने ओलववे करी, हणवे करी, प्रद्वेष राखवे करी अंतराय करवे करी, अत्यंत आशातना करवे करी, ज्ञानावरण अने दर्शनावरणने जीव उपार्जे ॥ ५४ ॥

मतिश्रुत प्रमुख पाच ज्ञाननी तथा ज्ञानवंतनी तथा ज्ञानोपगरण पुस्तकादिकनी प्रत्यनीकता एटले अनिष्टपणु, प्रतिकुलपणु करवु जेम ज्ञान, ज्ञानवंतने माठु थाय तेम करे, तथा निन्हव एटले जेनी पासेथी भण्यो होय ते गुरुने ओलवता, तथा जाण्याने अजाण्यु कहेता तथा ज्ञानवंत तथा ज्ञानोपकरणनो उपघात एटले अग्नि शस्त्रादिके करी विनाश करता, तथा तेना उपर प्रद्वेष करता, अंतरंग अरुचि, मत्सर धरता, तथा जाणताने अंतराय एटले अन्नपाणी, वस्त्र, वस्ती, निषेधतां, बीजा कार्यमा जोडता, गर्त्तोए लगाडता, पठन विच्छेद करता, तथा ज्ञानवंतनी अत्यंत आशातना करता, मर्म उघाडो करता एटले आ हीनजाति छे, एम कहेतां, अने आलदेवे करी, तथा आचार्य उपाध्यायने मत्सर करता, अकाळे सज्झाय करता, योगउपधान हीन भणता, असज्झाये सज्झाय करता, ज्ञानोपगरण पासे छता त्यां लघु नीति, वडीनीति तथा मैथुन करता, पग लगाडतां, थुंक लगाडतां, ज्ञानद्रव्य विनाशतां, त्रिणसतो उवेखता, ज्ञानावरण कर्म बंधाय, तेम दर्शनावरण पण दर्शन प्रत्यनीकतादिक दोषे करी बंधाय, पण एटलु विशेष के दर्शन एटले चक्षु अचक्षु प्रमुख दर्शनी साधु तेना पांचे इंद्रिय तेना उपर माठु चिंतवता तथा सम्मति तत्वार्थ नयचक्र वालादिक दर्शन प्रभावकशास्त्र तेना पुस्तक ते उपर प्रत्यनीकतादि समाचरतां थकां दर्शनावरण कर्म बंधाय. एम बे आवरणना बंध हेतु कह्या.

हवे शाता तथा अशाता वेदनीयना बंध हेतु कहे छे

गुरुभत्तिखंतिकरुणा, वयजोगकसाय विजयदाण जुओ॥
दढ धम्माइ अज्जइ, सायमसाय विवज्जयओ ॥ ५५ ॥

गुरुभक्ति–गुरुभक्ति	कसायविजय–कषायने जीतता	अज्जइ–उपार्जे
खंति–क्षमायेकरी		साय–शातावेदनी
करुणा–करुणाभावे	दाणजुओ–दानादि गुण युक्त	असाय–अशातावेदनी
वय–व्रत पाळता		विवज्जयओ–एथी विपरीतपणे
जोग–संयमयोगे	दढधम्माइ–दृढधर्मी	

अर्थ –गुरुभक्तिये करी, क्षमाये करी, करुणाभावे करी, व्रत पाळता, संयमयोगे करी, कषायने जीतवे करी, दानादिक

शीळगुणे करी सहित होय, दृढधर्मी, प्रीयधर्मी (इत्यादिक शुभ कारणे करी जीव) शातावेदनीय उपार्जे, अने अशाता वेदनीय एथी विपरीत पणे बांधे ॥५५॥

गुरु एटले पोतानां मातापिता, धर्माचार्य, तेनी भक्ति एटले सेवा करतां, क्षमा एटले शक्ति छतां पारका अपराधने सहन करतां, परजीवने दुखीया देखी तेनुं दुःख टाळवानी वांछाधरतां, पांच महाव्रत तथा अणुव्रत निर्दुषण पाळतां, योग एटले दशविध चक्रवाल समाचारीरुप संयमयोग साचवतां, कषाय तथा नोकषायने जीततां, सुपात्र तथा अभयदान देतां, सर्व जीवने उपकार करतां तथा हितचिंतवतां, धर्मने विषे स्थिर परिणाम राखतां, बाल, वृद्ध, ग्लानादिकनुं वैयावच्च करतां, धर्मवंतने धर्म कर्त्तव्यमां वर्त्ततां सहाय देतां, चैत्य भक्ति रुडीपेरे करतां, सराग संयमे देशविरति पाळतां, तथा अकाम निर्ज्जरा, बालतप, शौच, सत्यादिक शुभ परिणामे वर्त्ततो जीव शातावेदनीय कर्म उपार्जे अने तेथी विपरीत चालतो एटले गुरुने विराधतो अक्षमाये वर्त्ततो, निःकरुणाये प्रवर्त्ततो, व्रत लइ विराधतो, समाचारी लोपतो, घणो कषाय उदीरतो, कृपणताये धर्मने अस्थिरपणे, चैत्यादिकनी आशातनाये, तथा शील लोपतां, हाथी, घोडा, उंट प्रमुखने दमतां, नाथतां, अंकनां पीडा देतां, परने शोक संताप उपजावतां तथा अविरति अने अहित परिणामे जीव अशातावेदनीय बांधे.

हवे मिथ्यात्व मोहनीयना बंध हेतु कहे छे.

उमग्ग देसणामग्ग, नासणा देव दव्व हरणेहिं ॥
दंसणमोहं जिणमुणि, चेइअ संघाइ पडिणीओ ॥५६॥

उमग्गदेसणा–उन्मार्गनी देशनाए	देवदव्व–देवद्रव्ये	जिण–तीर्थंकर
मग्गनासणा–सन्मार्गनो विनाश करतां	हरणेहिं–हरणकरवे	मुणि–साधु
	दंसणमोहं-दर्शनमोहनीय बांधे	चेइअ–जिनप्रतिमा
		संघाइ–संघआदिना
		पडिणीओ–प्रत्यनीकपणे

अर्थः–उन्मार्गनी देशनाये, सन्मार्गनो विनाश करतां देवद्रव्य हरण करतां, वळी जिनेश्वर, मुनि, चैत्य, अने संघ

आदिनुं प्रतिकूलपणुं आचरतो, निंदा करतो जीव दर्शन मोहनीय कर्म बाधे ॥ ५६ ॥

उन्मार्ग एटले ससार हेतु जे हिंसादिक आश्रव तेने मोक्ष हेतुपणे देखाडता तथा एकात मार्गनो उपदेश करता, वळी ज्ञान, दर्शन चारित्रना समुदायरुप जे मोक्षमार्गनो विनाश करतो, सन्मार्ग रहेला परजीवने एकातनयनी देशनाये करी मार्गथी चुकवतो, वळी देवद्रव्य तथा ज्ञानद्रव्य हरण करतो, देरासरनी वस्तु पोताना काममां वापरतो, परने देवद्रव्य विणासतो देखी छती शक्तिये उवेखी मुकनार मिथ्यात्व मोहनीय कर्म बाधे, वळी केवळी तथा तीर्थकरना अवर्ण वाद बोलनारो, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका आदिनी निंदा करतो, द्वेष धरतो, जिन प्रवचननु माठु देखाडतो घणा जीवनां बोधिबीज हणे तेणे करीने मिथ्यात्व मोहनीय बाधे अने पूर्वे बाध्यु होय तेने निकाचित करे

हवे चारित्र मोहनीयना बध हेतु कहे छे.

दुविहंपि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विवसमणो॥
बंधइ निरयाउ महा, रंभ परिग्गह रओ रुद्दो ॥५७ ॥

दुविहपि–बे प्रकारनु	हासाइ–हास्यादि	निरयाउ–नरकायु
चरणमोह–चारित्र मोहनीय	विसयविवस–विषयवश	महारभ–महाआरभे
	मणो–चित्तथको	परिग्गह–परिग्रहमा
कसाय–कषाय	बधई–बाधे	रओ–रक्तथको
		रुद्दो–रौद्रध्यानी

अर्थ –एक कषाय मोहनीय तथा बीजु नोकषाय मोहनीय बांधे ते कषाय हास्यादिक तथा विषयने विषे तत्पर लोलुपी परवश चित्त थको बाधे, अने नरकायु बाधे ते जीव महारंभे वर्त्ततो, परिग्रहमा रातो थको, रौद्रध्याने वर्त्ततो एटले महाकषायवत, जीवघातनो करनार, दुष्ट परिणामी होय॥५७॥

जे जीव कषायने उदये वर्त्ते ते कषाय मोहनीय बांधे. जेम अनतानुबधीया क्रोधादिकने उदये सघळा कषाय बांधे, अप्रत्याख्यानीयाने उदये बार कषाय

बांधे, प्रत्याख्यानीयाने उदये (चार प्रत्याख्यानीया तथा चार संज्वलना) आठ कषाय बांधे, अने संज्वलना चार बांधे, हास्य बोलतो, भांड कुचेष्टा करतो, बहु बोलतो जीव हास्य मोहनीय कर्म बांधे, देश देखवाने रसे, लवाडीपणे, कामन, मोहन, करतो, रती मोहनीय कर्म बांधे राजवेध करतो, नवोराजास्थापतो, परने उचाट उपजावतो, परने अशुभ काम करावबानो उत्साह वधारतो, शुभ कार्यनो उत्साह भागतो, निष्कारणे आर्त्त ध्याने वर्त्ततो जीव अरति मोहनीय कर्म बांधे, परजीवने त्रास पमाडतो तथा निर्दय परिणामी जीव भय मोहनीय कर्म बांधे, परने शोक चिंता, संताप उपजावतो जीव शोक मोहनीय कर्म बांधे, साधुनी निंदा करतो, तथा दुगंच्छा करनार जीव जुगुप्सामो० कर्म बांधे, शब्द, रुप, रस, गंध, स्पर्श ए अनुकुल विषयने विषे अत्यंत आशक्त थको परनी अदेखाइ, मत्सरधरतो, मायामृषा सेवतो, कुटिल परिणामे परदारा सेवतो जीव स्त्रीवेद बांधे, सरलपणे, स्वदारा संतोषे, इर्ष्यारहित मंद कषाये जीव पुरुषवेद बांधे, तिव्र कषाये दर्शत्रीनुं शील भंगावतो, तीव्र विषयी, पशुघातक, मिथ्यात्वीजीव, नपुंसक वेद बांधे, चारित्रियाना दोष देखाडतो असाधुना गुण ग्रहण करतो कषाय उदिरतो जीव चारित्र मोहनीय कर्म बांधे.

हवे आयुःकर्मना बंध हेतु कहेछे—महारंभ चक्रवर्त्ति प्रमुखनी ऋद्धि भोगवतो, घणी मूर्च्छा परिग्रह सहित, अविरति परिणामि, अनंतानु बंधिया कषायने उदये पंचेंद्रिनी हत्या निःशंकपणे करतो, साते कुव्यसन सेवतो, विश्वासघाती, मित्रद्रोही, मोटां पाप आचरतो, उत्सूत्र भांखतो, मिथ्यात्वनो महिमा वधारतो, अशुभ परिणामे कृष्णादिक त्रण लेश्याये वर्त्ततो जीव अशुभ परिणामे करी नारकीनुं आयु बांधे.

हवे तिर्यंच आयुना बंध हेतु कहेछे.

तिरिआओ गूढहिअओ, सढोससल्लोतहामणुस्साओ॥
पयइय तणु कसाओ, दाणरुई मज्झिम गुणोअ॥५८॥

तिरिआओ—तिर्यंचायु
गूढहिअओ-गुढहृदयवालो
सढो—मूर्ख
ससल्लो—शल्यसहित
तहा—तेमज
मणुस्साओ—मनुष्यायु
पयईय—प्रकृतिये
तणुकसाओ-अल्पकषायी
दाणरुई—दानरुचिवालो
मज्झिमगुणोअ—मध्यम गुणवालो

अर्थ –तिर्यंचनुं आयु, जे जीव गूढ हृदयवाळो, मूर्ख, धूर्त्त, मिथ्यात्वादिक शल्य सहित होय ते जीव बांधे तथा जे जीव प्रकृतिये एटले स्वभावे अल्पकषायवंत होय, दान देवाने रुचिवंत, मध्यम गुणवंत होय ते जीव मनुष्यायु बांधे ॥५८॥

गूढ हृदय एटले जेना हृदयनी कोइने खबर न पडे तेवो होय, कपटी होय, मुखे मीठो अने परिणामे दारुण होय, आर्त्तध्यानी, आ लोकमा मान पूजा हेतुये तप करतो, करेला पापने पूर्ण आलोचे नही, शल्य राखे ते जीव तिर्यंचायु बांधे

हवे मनुष्यायु बांधवाना हेतु कहे छे–त्यां देवता तथा नारकीनो सम्यक्त्व कर्त्तव्यताये शुभभावे करी मनुष्यनु आयु बांधे ते भणी भवप्रत्यये तेने देवायु न बंधाय, तथा मनुष्य तिर्यंच जेह प्रकृति केहतां स्नेहेज उपाय कर्या विना मिथ्यात्वने मंद रसोदये करी कषायनो पण मंद रसोदय होय तेथी तणु एटले दुर्बळ पड्या एवा कषाय जेम धान्य न मळवाथी शरीर दुर्बल थाय एवो प्रकृतिये भद्रक धूलि रेखा समान कषाये वर्त्ततो, सेहेजे सुपात्र कुपात्र परीक्षा कर्या विना विशेष यश.कीर्ति प्रमुख अणवांछतो पण स्वभावे दान देवानी रुचि जेने तीव्र होय एवो क्षमा, आर्जव, मार्दव, सत्य, शौचादिक मध्यम गुणे वर्त्ततो, कापोत लेश्या परिणामे जीव मनुष्यायु बांधे.

हवे देवायुना बंध हेतु कहेछे

अविरय माइसुराओ, बालतवोऽकाम निज्जरोजयइ ॥
सरलो अगारविल्लो, सुहनाम अन्नहा असुहं ॥ ५९ ॥

अविरयमाइ–अविरतिसम्यक्दृष्टिआदि	अकामनिज्जरो–अकाम निर्जरायेकरी	अगारविल्लो गारवरहित
सुराओ–देवायुबांधे	जयइ–उपार्जे	सुहनाम–शुभनाम
बालतवो–बालतपेकरी	सरलो–सरळ	अन्नहा–अन्यथा
		असुहा–अशुभनाम

अर्थ –अविरति सम्यक् दृष्ट्यादिक देवायुबांधे, बाल तपे करी, ब्रह्मचर्ये करी अकामनिर्जरा उपार्जे, अने निष्कपटी,

गारवरहितथको शुभनाम कर्मनी प्रकृतियो बांधे तथा अन्यथा कपट गारवसहित अशुभ नामकर्मनी प्रकृतियो बांधे ॥५९॥

अविरति सम्यक्दृष्टि, मनुष्य, तिर्यंच देवायु बांधे, घोलना परिणामे सुमित्र संयोगे, धर्म रुचिपणे, देशविरति गुणे, सराग संयमे देवायु बांधे. बालतप एटले दुःखगर्भित, मोहगर्भित वैरागे करी, दुष्कर कष्ट, पंचाग्नि साधन, रस परित्यागादिक अनेक मिथ्यात्वज्ञाने तप करतो, अत्यंत आकरो, रोष गारवे तप करतो, असुरादिक योग्य आयु बांधे तथा अकाम निर्जराये, अज्ञानपणे भूख, तृषा, टाढ, ताप, रोगादिक कष्ट सेहेतो, स्त्री अणमिलते शीयळ धारण करतो विषय संपत्तिने अभावे विषय अणसेवतो, इत्यादिक अकाम निर्ज्जराये तथा बालमरण एटले कांहिएक तत्थायोग्य शुभ परिणामे वर्त्ततो रत्नत्रयि विराधनाये व्यंतरादि योग्यः आयु बांधे. तथा आचार्य प्रत्यनीकताये किल्बिषिकायु बांधे. तथा मुग्धजन मिथ्यात्वीना गुण प्रशंसतो, महिमा वधारतो, परमाधामीनुं आयुष्य बांधे.

शुभनाम प्रकृतिना बंध हेतु कहेछे—सरल, कूडां मान मापे करीनहीं ठगनारो, परवंचन बुद्धिरहित, रुद्धिगारव रसगारव अने शाता गारव रहित, पापभीरु, परोपकारी सर्वजन प्रिय, क्षमादि गुणयुक्त, एवो पुरुष शुभ नामनी त्रीस प्रकृति बांधे तथा अप्रमत्तपणे चारित्र पालतो, आहारादिक बांधे, अरिहंतादिक वीश स्थानक आराधतो, गुणवंतनुं वैयावच्च करतो जीन नामकर्म बांधे,तेथी विपरित पणे वर्त्तनारो जीव नरकगत्यादिक चोत्रीस अशुभ नामकर्मनी प्रकृति बांधे ए सडसठ प्रकृतिना बंध हेतु कह्या.

हवे उच्चगोत्र कर्मना बंध हेतु कहे छे.

गुणपेही मय रहिओ, अज्झयणज्झावणा रुई निच्चं ॥
पकुणइ जिणाइ भत्तो, उच्चं निअं इअरहाओ ॥६०॥

गुणपेही—गुणनोदेखनार उपर
भयरहिओ—मदरहित
अज्झयण—अध्ययन भणवा उपर
अज्झावणा—भणाववा
रुइनिच्चं—नित्यं रुचिवाळो
पकुणइ—प्रकर्षेकरी
जिणाइभत्तो—जिनादिकनोभक्त
उच्चं—उच्चगोत्र
निअं—नीचगोत्र
इअरहाओ—तेथी इतर एटले विपरीतगुणवाळो

अर्थ –पारका गुणनो देखनार (अवगुण देखीने निंदेनहीं) आठमदरहित, जणवा जणाववा उपर निरतर रुचिवाळो होय. प्रकर्षे करी. जिन अरिहंतनो जक्त उच्चैर्गौत्र उपार्जे अने तेथी अन्यथा विपरीत गुणे करी नीचैर्गौत्र उपार्जे ॥ ६० ॥

हवे अतराय कर्मना बध हेतु कहे छे.

जिणपूआ विग्घकरो, हिंसाइ परायणोऽजयइविग्घं ॥
इय कम्म विवागोअ लिहिओ देविंदसूरिहिं ॥६१॥

जिणपूआ–जिनपूजानो	अज्यइ–उपार्जे	पाकग्रथ
विग्घकरो–विघ्न करनार	विग्घ–अतरायकर्म	लिहिओ–लख्यो
हिंसाइ–हिंसादिकमा	इअ–एणीपेरे	देविंदसूरिहिं–श्री देवेंद्र
परायणो–तत्परथको	कम्मविवागोअ–कर्मवि-	सूरिए

अर्थ –जिनपूजादिकनो विघ्न करनार,(पूजानिषेधनो करनार), हिंसादिक आश्रवने विषे तत्पर थको, अंतराय कर्म उपार्जे (वळी अढार पापस्थानकनो सेवनार साधुने दानादिकनो अंतराय करनार जीव अतराय कर्म उपार्जे) एणीपेरे कर्म विपाक एवे नामे ग्रथ ते श्री देवेंद्र सूरिए लख्यो ॥ ६१ ॥

अथ कर्मस्तवनामा द्वितिय कर्मग्रंथ.

तह थुणिमो वीरजीणं, जह गुणठाणेसु सयल कम्माइं
बंधुदयो दीरणया, सत्तापत्ताणि खविआणि ॥ १ ॥

तह–तेम	विषे	उदीरणया–उदीरणा
थुणिमो–स्तवीश	सयल–सघळां	सत्ता–सत्ता
वीरजीणं–वीरस्वामीने	कम्माइं–कर्म	पत्ताणि–पामीने
जह–जेम	बंध–बंध	खविआणि–खपाव्यां
गुणठाणेसु–गुणठाणाने	उदय–उदय	

अर्थः–श्री महावीर स्वामी प्रत्ये तेम स्तवीश, जेम गुणठाणाने विषे सघळांए कर्म, प्रकृति प्रत्ये बंध, उदय अने उदीरणाए करी सत्ताए पामीने खपाव्यां ॥ १ ॥

गुणठाणांः–शीवमंदिर चडवाने पगथीआं सरखा जीवना शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम अध्यवसाय विशेष तेने गुणठाणां कहीए; ते अध्यवसाय असंख्याता छे, तोपण स्थूल व्यवहारे चौद छे.

बंधः–जे कर्मवर्गणा दलसाथे मिथ्यात्वादिक आश्रवें करी जीव प्रदेशने दुध पाणीनीपरे एकमेक थवुं तेने बंध कहीये.

उदयः–ते बांधेलां कर्मनो अबाधा काल (मुदत) वीते थके वेदवामां (भोगववामां) आवे ते उदय, अने ते कर्मने खेंचीने उदयमां लाववुं ते उदीरणा.

सत्ताः–ज्यां सुधी बांधेलां कर्मनी निर्जरा नथी थइ त्यां सुधीते कर्मसत्तामां छे एम कहेवाय.

ते दृष्टांत आपी समजावे छे.

जेम आपणे कोइ माणसना बे महिनाना वायदे रुपीआ लीधा, ते रुपीआ बे मास थाय त्यारे भरवा पडे, तेम कोइ कर्म बांध्या पछी अमुक मुदतने अबाधा काल कहीए. वायदो थयेथी जेम रुपीआ भरवा पडे तेम अबाधाकाल वीते थके कर्म भोगववानी शरुआत थइ ते उदय आव्युं कहेवाय. उदय

आव्या पछी तेने जीववीर्य विशेषे करी खेंचीने उदयावलिमा आणी वेदवुं ते उदीरणा. अने ज्या सुधी ते कर्मनी निर्जरा नथी थइ त्या सुधी सत्तामा छे ते बध, उदय, उदीरणा अने सत्ता ए चारमां बधन अने उदिरणा ए जीवनी क्रिया विशेष छे अने उदय तथा सत्ता ए भावार्थ छे

हवे गुणठाणाना नाम तथा सत्ता कहे छे

मिच्छे सासण मीसे, अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ॥
निअट्टिअनिअट्टिसुहुमु,वसमखीणसजोगिअजोगीगुणा२

मिच्छे–मिथ्यात्व	पमत्त–प्रमत्त	उवसम–उपशातमोह
सासण–सास्वादन	अपमत्ते–अप्रमत्त	खीण–क्षीणमोह
मीसे–मिश्र	निअट्टि–निवृत्ति	सजोगि–सयोगीकेवली
अविरय–अविरति	अनिअट्टि–अनिवृत्ति	अजोगि–अयोगीकेवली
देसे–देश विरति	सुहुम–सूक्ष्मसपराय	गुणा–गुणस्थानक

अर्थ –(१) मिथ्यात्व, (२) सास्वादन सम्यक्दृष्टि, (३) मिश्र, (४) अविरति सम्यक्दृष्टि, (५) देशविरति, (६) प्रमत्त, (७) अप्रमत्त, (८) निवृत्ति (अपूर्व), (९) अनिवृत्ति (बादरसंपराय) (१०) सूक्ष्म सपराय, (११) उपशांत मोह, (१२) क्षीण मोह वीतराग गुणठाणुं, (१३) सयोगी केवली, (१४) अयोगी कवली, ए चौद गुणठाणा छे ॥२॥

१ मिथ्यात्व गुणठाणुः–मिथ्यात्व मोहनीयना जोर करी, कुदेव, कुगुरु, अने कुधर्म अगीकारकरे, तथा जिन वचनथी विपरीत चाले, तेमज जैनधर्म उपर अश्रद्धा राखे, तेने मिथ्यादृष्टि जाणवो त्या कोइ शका करे के मिथ्यात्व दोषे दुष्टने गुणठाणी केम कहीए तेनो उत्तर जे, मिथ्यात्वी पण मुक्ति हेतु क्रिया करे, तथा सर्व जीवने सदा अक्षरनो अनतमो भाग उघाडो रहे छे, ते गुणनी अपेक्षाए गुणठाणु कहीए.

२ सास्वादन गुणठाणु'–उपशम समकित पामी एक समय तथा छ आवलि शेष सम्यक्त्व काल होये थके अनतानुबधी कषायना उदयथी ते सम-

कित वमतां खीरनीरना स्वाद सरखो भाव मिथ्यात्व गुणस्थानक पाम्या पेहेलां जे होय. एटले कोइ माणसे खीर खाधेली होय तेने उलटी थतां जेम खीरनो स्वाद मुखमां रही जाय तेम सास्वादन गुणठाणुं जाणवुं.

३ मिश्रगुणठाणुंः—मिश्र मोहनीयना उदयथी जीनधर्म उपर रुचिपण न होय तेम अरुचि पण न होय, मिश्रपणुं होय एवा जे, अध्यवसाय ते.

४ अविरति सम्यक्‌दृष्टि गुणठाणुंः—विरति गुण जाणतो, अप्रत्याख्यानीया कषायोदये आदरी शके नहीं. तेना त्रण भांगा छे.

१ जाणीने न आदरे, न पाले ते श्रेणिक राजानी पेठे.
२ जाणीने न आदरे, पाले ते अनुत्तर विमानना देवतानी पेठे.
३ जाणीने आदरे न पाले ते संविग्न.

ए त्रण भांगे वर्त्ततो क्षायक, औपशमिक अने वेदक ए त्रणमांथी एक समकितनी रुचि पामी जे जे अध्यवसाये जिनवचन यथावस्थित पण परिणमे ते.

५ देशविरति गुणठाणुंः—देशविरति जे श्रावक तेना गुण सम्यक्त्व सहित जाणे, आदरे अने पाले. अहीं समकित सहित नोकारशी करे ते पण एमां जाणवी.

६ प्रमत्तगुणठाणुंः—चारित्र लीधां छतां पण जे अध्यवसाय प्रमादे (मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथाए) करी मलीन होय.

७ अप्रमत्तगुणठाणुंः-प्रमाद रहित अनंतगुण विशुद्ध निश्चय चारित्रे स्थिरता रुप सहित जे अध्यवसाय.

८ निवृत्तिगुणठाणुंः—चारित्र मोहनीयनी एकवीश प्रकृति खपाववा तथा उपशमाववा रुप अत्यंत विशुद्ध अध्यवसाय, अहीं एक समये अनेक जीव गुणठाणे चढ्या, ते शुद्ध शुद्ध तरादिक अध्यवसाय भेदे करी निवृत्ति केहेतां फेरफार होय त्यां एनुं नाम निवृत्ति गुणठाणुं कहीए अहीं समये समये अनंतगुण विशुद्धि होय.

९ अनिवृत्तिगुणठाणुं—आ गुणठाणे एक समये अनेक जीव चढे, पण तेमना अध्यवसायमां फेरफार न होय तेथी तेनुं नाम अनिवृत्ति कह्युं. तथा एनुं वीजुं नाम वादर संपराय पण कहीए कारण के अहीं कषायना मोटा खंड करे.

१० सूक्ष्मसंपराय-शेष रहेली मोहनीय कर्मनी प्रकृतिनो क्षय तथा उपशम थवाना जे विशुद्ध अध्यवसाय ते सूक्ष्मसंपराय, अहींआं कषायना सूक्ष्म खंड करे.

११ उपशांतमोहनीय-मोहनीयना उपशमथी अध्यवसाय निर्मळ थाय परंतु सत्ताये कषाय रहेला छे ते जो उदय आवे तो मेला थवाना संभव छे, तेथी तेनु नाम उपशांत मोहनीय, एने छद्मस्थ वीतराग गुणठाणु कहीए अहीं अवश्य पडे अने जो मरण पामे तो अनुत्तरवासी देवता थाय अने चोथे गुणठाणे आवीने रहे, अन्यथा पडेतो दशमे आवे, तथा नवमे, आठमे, सातमे, पण आवे अथवा पेहेले पण आवे

१२ क्षीणमोह वीतराग गुणठाणु-अहींआ सर्व मोहनीय प्रकृति खपावे थके जे अत्यंत विशुद्ध अध्यवसाय स्थानक ते

१३ सयोगी केवली गुणठाणु-केवलज्ञान पाम्या पछी ज्या सुधी बादरयोग (वेपार) मन, वचन, काया प्रवर्ते हाले, चाले, बोले त्या सुधी सयोगी केवली गुणठाणु कहीए

१४ अयोगी केवली गुणठाणु-शुक्ल ध्याननो चोथो पायो ध्यावतां बादर योगना अभावे (सूक्ष्मकाययोगे) अयोगी केवली गुणठाणु जाणवु.

ए रीते चौद गुणठाणानु स्वरूप कह्यु हवे तेनु काळ मान कहे छे

मिथ्यात्व गुणठाणानु काळमान अभवी जीवने अनादि अनंत अने भवी जीवने अनादि सांत तथा सादि सांत होय सास्वादननो काळ छ आवलि प्रमाण, त्रीजा, आठमा, नवमा, दशमा, अगीआरमा अने बारमा गुणठाणानो काल अंतर्मुहूर्त्तनो छे. चोथानु काळमान तेत्रीस सागरोपम अधिक, पांचमा, छठ्ठा, सातमा अने तेरमा गुणठाणानु काळमान देशे उणा क्रोड पूर्वनु. अने चौदमानु पांच ह्रस्व अक्षर बोलतां जेटलो वखत थाय तेटलु जाणवु

हवे बंध प्रकृति कहेछे

अभिनव कम्मग्गहणं, बंधोओहेण तत्थ वीस सयं ॥
तित्थयरा हारग दुग, वज्जं मिच्छंमि सतर सयं ॥३॥

अभिनव–नवां	वीससयं–एकसोवीस	वज्जं–वर्जीने
कम्मग्गहणं–कर्मनुं ग्रहवुं	तित्थयर–तीर्थंकर नाम	मिच्छंमि–मिथ्यात्वे
वंधो–वंध	आहारगदुग–आहारकद्विक	सत्तरसयं–एकसोसत्तर
ओहेण–ओघे		

अर्थ–नवां कर्मनुं जे ग्रहवुं तेने बंध कहीए, त्यां जीवने ओघे एकसोवीस प्रकृतिनो बंध होय. तेमांथी तीर्थंकरनाम अने आहारकद्विक (आहारक शरीर तथा आहारक अंगोपांग) ए त्रण प्रकृति वर्जीने बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो बंध मिथ्यात्व गुणठाणे होय ॥३॥ उपरनी त्रण प्रकृति न बंधाय तेनुं कारण के ते त्रण प्रकृति शुद्ध चारित्र अने समकित आश्रीने छे अने शुद्ध चारित्र तथा समकित मिथ्यात्वगुण ठाणे होय नहीं ॥

हवे पेहेले गुणठाणे केटली प्रकृतिनो विच्छेद थाय ते कहेछे.

नरय तिग जाइ थावर, चउ हुंमा यव छिवठ नपु मिच्छं ॥
सोलंतो इगहिअसय, सासणि तिरि थीण दुहग तिगं॥४॥

नरयतिग–नरकत्रिक	छिवठ–छेवठु संघयण	सासणि–सास्वादने
जाइ–जातिचतुष्क	नपुं–नपुंसक वेद	तिरि–तिर्यंचत्रिक
थावरचउ–थावरचतुष्क	मिच्छं–मिथ्यात्वमोहनीय	थीण–थीणद्धीत्रीक
हुंड–हुंडसंस्थान	सोलंतो-ए सोलनोअंत करे	दुहगतिगं–दौर्भाग्यत्रिक
आयव–आतपनाम	इगहिअसय–एकसोएक	

अर्थः–नरकत्रिक, जातिचतुष्क, स्थावर चतुष्क, हुंड संस्थान, आतपनामकर्म, छेवठु संघयण, नपुंसकवेद अने मिथ्यात्व मोहनीय एम सोळ प्रकृतिनो अंत मिथ्यात्व गुणठाणे होय, अने शेष एकसोने एक प्रकृतिनो बंध सास्वादन गुणठाणे होय ॥ हवे सास्वादने केटली प्रकृतिनो विच्छेद होय ते कहे छे ॥ तिर्यंचत्रिक, थीणद्धीत्रिक, अने दोर्भाग्यत्रिक. ए नव ॥४॥

नरकत्रिक=नरकनीगति, अनुपूर्वी, अने आयु जाति चतुष्क=एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरिंद्रि स्थावर चतुष्क=स्थावरनाम सूक्ष्मनाम, अपर्याप्त नाम अने साधारण नाम तिर्यंचत्रिक ते नरकत्रिकनी पेठे,, थीणद्धित्रिक=थीणद्धी, निद्रा निद्रा, अने प्रचलाप्रचला दौर्भाग्यत्रिक–दौर्भाग्यनाम, दुस्वरनाम अने अनादेयनाम

अण मज्झागिइसंघय, ण चउनिउज्जोअकुखगइत्थित्ति॥
पण वीसंतो मीसे, चउसयरि दुहाउअ अबंधा ॥ ५ ॥

अण–अनंतानुबंधी	उज्जोअ–उद्योतनाम	मीसे–मिश्रगुणठाणे
मज्झागिइ–मध्याकृति	कुखगइ–अशुभविहायोगति	चउसयरि–चुम्मोतेर
संघयण–संघयण	त्थित्ति–स्त्रीवेद	दुहाउ–बे आयुष्यनो
चउ–ए त्रणचतुष्क	पणवीसंतो–पचीसनो अंत	अबंधा–अबंध छे
नि–नीचगोत्र		

अर्थ –अनंतानुबंधी (क्रोध, मान, माया, लोभ) चतुष्क, वच्चेनां चार संस्थान (न्यग्रोध, सादि, वामन अने कुब्ज), मध्यसंघयण (ऋषभ नाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, अने कीलिका) ए त्रण चतुष्क, नीच गोत्र, उद्योतनाम, अशुभविहायोगति अने स्त्रीवेद मोहनीय ए सोळ तथा प्रथमनी नव मळी पचीस प्रकृतिनो अंत बंध विछेद सास्वादन गुणठाणे थाय ए रीते जोता मिश्रगुणठाणे छोतेरनो बंध थवो जोइए पण अहीआ (देवायु तथा मनुष्यायु ए) बे आयुनो अबंध होय तेथी चुम्मोतेरनो बंध होय ॥ ५ ॥

अहींआ आयुबंध योग्य अध्यवसायनथी तथा त्यां देवायु अने मनुष्यायु पण न बंधाय, पण आगल चोथे गुणठाणे बंध करशे तेथी तेनो विच्छेद न कयो पण अबंध कयो अहींआं कोइ प्रकृतिनो बंध विच्छेद नथी

सम्मे सगसयरि जिणा, उबंधिवइरनरतिअबिअकसाया॥
उरल दुगंतो देसे, सत्तठी तिय कसायंतो ॥ ६ ॥

सम्मे–सम्यक्‌दृष्टिए	वइर–वज्र ऋषभनाराच	देसे–देशविरतिए
सगसयरि–सीत्योतेर	नरतिअ–मनुष्यात्रिक	सत्तट्ठी–सडसठ
जिण–जिननाम	बिअकसाया:बीजा अप्रत्याख्यानीचारकषाय	तिअ–त्रीजाप्रत्याख्यानी
आउ–मनुष्यायु तथा देवायु	उरल दुगंतो–औदारिक द्विकनो अंत करे	कसायंतो–कषायनो अंत करे
बंधि–बांधे		

अर्थः–चोथा अविरति सम्यक्‌दृष्टि गुणठाणे सीत्योतेर प्रकृतिनो बंध होय. कारण के अहीं जिननामकर्म, मनुष्यायु अने देवायु ए त्रण शुभ प्रकृतिनो बंध थाय. अने वज्रऋषभ नाराच संघयण, मनुष्यत्रिक (मनुष्यगति, अनुपूर्वी अने आयु) अने बीजा (अप्रत्याख्यानीया) चार कषाय तथा औदारिकद्विक (शरीर अने अंगोपांग) ए दशनो विछेद थाय एटले पांचमा देशविरति गुणठाणे सडसठ प्रकृतिनो बंध करे. अने त्यां त्रीजा (प्रत्याख्यानीया चार) कषायनो अंत करे ॥६॥ एटले—

तेवठि पमत्ते सो, ग अरइ अथिर दुगअजसअस्सायं॥
वुछिज्ज छच्च सत्तव, नेइसुराओजया निठं ॥ ७ ॥

तेवट्ठि–त्रेसठनो	अजस–अयशनामकर्म	सत्तव–सातप्रकृति
पमत्ते–प्रमत्तगुणठाणे	अस्सायं–अशातावेदनीय	सुराओ–सुरायु
सोग–शोक मोहनीय	वुच्छिज्ज–विच्छेदपामे	जया–जो
अरइ–अरति मोहनीय	छच्च–छ प्रकृति अथवा	निट्ठं–नेष्ठा
अथिरदुग–अथिरद्विक		

अर्थः–त्रेसठ प्रकृतिनो बंध छठा प्रमत्त गुणठाणे होय. अने शोक मोहनीय, अरतिमोहनीय, अस्थिरद्विक (अस्थिर नाम अने अशुभनाम), अयशनाम, अशातावेदनीय, ए छ प्रकृतिनो विछेद होय. अथवा सात प्रकृतिनो विछेद जो कोइ प्रमत्त साधु,

देवायु वांधवा मांडे अने सपूर्ण करी नेद्दा पमाडे तो करे ॥७॥

गुणसहि अप्पमत्ते, सुराउ वद्दं तु जइ इहा गच्छे ॥
अन्नह अठावन्ना, जं आहारग दुगं वंधे ॥ ८ ॥

गुणसहि–ओगणसाठ	जइ–जो	जं–जे भणी
अप्पमत्ते–अप्रमत्ते	इहागच्छे–अहीं आवेतो	आहारग दुग–आहारक द्विक
सुराउ–देवायु	अन्नह–अन्यथा	
वद्धतु–बांधतो थको	अठावन्ना–अठावननो	वंधे–बांधे

अर्थ–सातमा अप्रमत्त गुणठाणे ओगणसाठ प्रकृतिनो वध होय, पण ते देवायु वांधतो थको जो आ गुणठाणे आवे तो अन्यथा तो अठावन प्रकृतिनो वध होय जो के प्रमत्तगुणठाणे त्रेसठ प्रकृतिनो वध हतो, तेमाथी ठ नो वध विछेद थतां सत्तावन रहे, परंतु अप्रमत्त गुणठाणे आहारकद्विकनो वध होय एटले ओगणसाठ अथवा सुरायु विना अठावन प्रकृतिनो वध सातमा गुणठाणे होय ॥ ८ ॥

अडवन्न अपुवा इमि, निद्ददुगंतो छपन्न पण भागे ॥
सुरडुगपणिंदिसुखगइ, तसनवउरलविणुतणु वगा ॥९॥

अडवन्न–अठावन	छपन्न–छप्पननो वध	तस–त्रसनवक
अपुव्वाइमि–अपूर्व करण नी आदिने विषे	पण भागे–पांच भागे	उरलविण–औदारिकविना
निद्ददुगंतो–निद्राद्विकनो अतकरे	सुरदुग–सुरद्विक	तणु–शरीर चार
	पणिंदि–पचेंद्रिय जाति	उवगा–उपाग वैक्रिय तथा आहारक
	सुखगइ–शुभविहायोगति	

अर्थ–हवे अपूर्वकरण गुणठाणाना सात भाग करीए तेमाना प्रथमभागने विषे उपर कहेली अठावन प्रकृतिनो वध होय, अने ते पछीना पांच भागने विषे निद्रादिक (निद्रा अने

प्रचला) नो अंत करे एटले छप्पन प्रकृतिनो बंध होय अने छठे भागे सुरद्विक (देवतानी गति अने अनुपूर्वी), पंचेंद्रि जाति, शुभविहायोगति, त्रसनवक (त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सौभाग्य, सुस्वर अने आदेय), औदारिक विना चार शरीर तथा (वैक्रिय अने आहारक विना) बे अंगोपांग मळी ओगणीस ॥ ए ॥

समचउरनिमिणजिणवन्न अगुरुलहुचउछलंसितीसंतो ॥
चरमे छवीस बंधो, हास रई कुच्छ भय भेओ ॥ १० ॥

समचउर–समचतुरस्र	अगुरुलहुचउ–अगुरु लघु चतुष्क	छवीस बंधो–छव्वीसनो बंध
निमिण–निर्माणनाम	छलंसि–छठेभागे	हासरइ कुच्छभय–हास्य रति, दुगंछा, भय
जिण–जिननाम	तीसंतो–तीसनो अंतथाय	भेओ–टाळे (भेदकरे)
वन्न–वर्णचतुष्क	चरमे–छेल्ले	

अर्थः–समचतुरस्र संस्थान, निर्माण नाम, जिननाम, वर्णचतुष्क (वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श), अने अगुरुलघुचतुष्क (अगुरुलघु, उपघात, उश्वास, पराघात) ए अगियार मळी कुल त्रीस प्रकृतिनो विछेद अपूर्वकरण गुणठाणाना छठा भागे होय. तेवारे छेल्ले सातमे भागे छव्वीस प्रकृतिनो बंध होय त्यां हास्य, रति, जुगुप्सा अने भय ए चार प्रकृतिने बंधथी टाळे॥१०॥

अनिअट्टि भाग पणगे, इगेगहीणो दुवीसविह बंधो ॥
पुम संजलण चउण्हं, कमेण छेओ सतर सुहुमे ॥ ११ ॥

अनिअट्टि–अनिवृत्तिना	दुविसविहबंधो–बावीस प्रकृतिनो बंध होय.	चउण्हं–चोकडीनो
भागपणगे–पांचमाभागे	पुम–पुरुषवेद	कमेणछेओ–अनुक्रमेछेदथाय
इगेगहीणो–एकेकप्रकृति ओछीकरवी	संजलण–संज्वलन	सत्तर–सत्तर
		सुहुम–सूक्ष्म संपराये

अर्थ –नवमा अनिवृत्तिकरण गुणठाणाना, पाच भागने विषे भाग भाग दीठ एक एक प्रकृतिये हीन बावीश प्रकृतिनो बध होय एटले पेहेले भागे बावीशनो बध, बीजे भागे पुरुषवेद ओछो थता एकवीसनो बंध, तथा त्रीजे भागे सजवलन कषायनी चोकडी माहेथी क्रोध छेदातां वीसनो बध, चोथे भागे मान छेदाता ओगणीसनो, पाचमे भागे माया छेदाता अढारनो बध अने पाचमा भागने अते लोभनो विछेद थता दशमा सूक्ष्म सपराय गुणठाणे सत्तर प्रकृतिनो बध होय॥११॥

चउ दंसणुच्चजसना, ण विग्घ दसगंति सोलसुच्छेओ ॥
तिसुसायवधछेओ, सजोगिवंधंतअणतोअ॥वंधोसम्मत्तो॥

चउदसणुच्च–चारदर्शनावरणीय तथा उच्चैर्गोत्र	दसगति–एदशप्रकृति	छेओ–छेदाय
जस–यशनामकर्म	सोलस–सोलनो	सजोगी–सयोगीने अते
नाण–ज्ञानावरणीपांच	उच्छेओ–विच्छेदहोय	बधत–शातावेदनीयना बधनो पण अत
विग्घ–पाच अतराय	तिसु–त्रणगुणठाणे सायबध–शातावे०नोबध	अणतोअ–अनतो करे

अर्थ –(दशमा गुणठाणे सत्तरमाथी) चार दर्शनावरणीय, उच्चैर्गोत्र, यश कीर्त्ति नामकर्म, ए छ तथा पाच ज्ञानावरणीय, पांच अंतराय, ए दश एम सर्व मळी सोळ प्रकृतिना बधनो विछेद होय अने अगीयारमे, बारमे तथा तेरमे ए त्रण गुणठाणे एक शाता वेदनीयनो बध छे, ते पण छेदाय एटले सयोगी गुणठाणाने अते शातावेदनीयना बधनो पण अत अनतो करे ॥ अहींआ बध अधिकार सपूर्ण थयो ॥ १२ ॥

बंधयंत्र.

पहेला कर्मग्रंथनी एकत्रीसमी तथा बत्रीसमी गाथामां दर्शाव्या प्रमाणे जे प्रकृतिओनो समावेश बीजी प्रकृतिओमां बंधनी अपेक्षाए थाय छे, ते अहींआं जणावी नथी ते सिवायनी एकसोवीस मध्येथी जे प्रकृतिनो जे गुणठाणे विच्छेद थाय छे त्यां ० आवी निशानी छे. अने जेनो बंध होय त्यां १ आवी निशानी छे.

कया गुणठाणे कइ प्रकृतिनो बंध होय.

मूल प्रकृति नाम		उत्तर प्रकृति नाम	मिथ्यात्वे	सास्वादने	मिश्रे	अविरतिये	देशविरतिये	प्रमत्तसंयते	अप्रमत्तसंयते	अपूर्व करण: पहेलाभाग	बीजाभाग	त्रीजाभाग	चोथाभाग	पांचमाभाग	छट्ठाभाग	सातमाभाग	अनिवृत्ति: पहेलाभाग	बीजाभाग	त्रीजाभाग	चोथाभाग	पांचमाभाग	सूक्ष्मसंपराय	उपशांतमोहे	क्षीणमोहे	सयोगीकेवलीये	अयोगीकेवलीये
			१	२	३	४	५	६	७				८						९			१०	११	१२	१३	१४
		मूल प्रकृति संख्या	८	८	७	८	८	८	७ ८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	१	१	१	०
		उत्तर प्रकृतिसंख्या	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९ ५८	५८	५६	५६	५६	५६	५६	२६	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१	१	१	०
ज्ञान	१	मतिज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	२	श्रुतज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०

ज्ञानावरण	३	अवधिज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	४	मन:पर्यवज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	५	केवलज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
दर्शनावरणीय	६	चक्षुदर्शनावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	७	अचक्षुदर्शनावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	८	अवधिदर्शनावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	९	केवलदर्शनावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	१०	निद्रा	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११	निद्रानिद्रा	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	प्रचला	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१३	प्रचलाप्रचला	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१४	थीणद्धी	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वेदनीय	१५	शातावेदनीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१६	अशाता वेदनीय	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मोहनीय	१७	मिथ्यात्व मोहनीय	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१८	अनतानु बंधी क्रोध	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१९	अप्रत्याख्यानीय क्रोध	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२०	प्रत्याख्यानीय क्रोध	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२१	सज्वलन क्रोध	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०
	२२	अनतानुबंधी मान	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२३	अप्रत्याख्यानीय मान	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२४	प्रत्याख्यानीय मान	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२५	सज्वलन मान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०

			१	२	३	४	५	६	७	८/१	८/२	८/३	८/४	८/५	८/६	८/७	९/१	९/२	९/३	९/४	९/५	१०	११	१२	१३	१४
	२६	अनंतानुबंधी माया	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२७	अप्रत्याख्यानीय माया	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२८	प्रत्याख्यानीय माया	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२९	संज्वलन माया	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	३०	अनंतानुबंधी लोभ	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३१	अप्रत्याख्यानीय लोभ	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३२	प्रत्याख्यानीय लोभ	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३३	संज्वलन लोभ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
हास्यषट्क	३४	हास्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३५	रति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३६	अरति	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३७	शोक	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३८	भय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३९	दुगंछा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४०	पुरुषवेद	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४१	स्त्रीवेद	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४२	नपुंसक वेद	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
आयुकर्म	४३	देवायु	१	१	अबंध	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४४	मनुष्यायु	१	१		१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४५	तिर्यगायु	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४६	नरकायु	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४७	नरकगति नामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

४८	तिर्यंचगतिनामकर्म	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४९	मनुष्यगतिनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५०	देवगतिनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५१	एकेंद्रिय जातिनामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५२	बेइंद्रियजाति	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५३	तेइंद्रियजाति	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५४	चौरिंद्रियजाति	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५५	पचेंद्रियजाति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५६	औदारिकशरीरनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५७	वैक्रियशरीरना०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५८	आहारकशरीरना०							१	१	१	१	१	१	१	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५९	तेजसशरीरना०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६०	कर्मणशरीरना०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६१	औदारिकअंगोपांगना०	१	१	१	१	□	□	□	□	□	०	□	□	□	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६२	वैक्रियअंगोपांगना०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	□	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६३	आहारकअंगोपांगना०							•१	१	१	१	१	१	१	०	□	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६४	वज्रऋषभनाराच स०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६५	ऋषभनाराचसंघयण०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६६	नाराचसंघयणना०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६७	अर्द्धनाराचसंघयण०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६८	कीलिकासंघयणना०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६९	छेवटुसंघयणना०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७०	समचतुरस्रसंस्थानना०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

९४ त्रसनामकर्म	९५ बादरनामकर्म	९६ पर्याप्तनामकर्म	९७ प्रत्येकनामकर्म	९८ स्थिरनामकर्म	९९ शुभनामकर्म	१०० सौभाग्यनामकर्म	१०१ सुस्वरनामकर्म	१०२ आदेयनामकर्म	१०३ यशोनामकर्म	१०४ स्थावरनामकर्म	१०५ सूक्ष्मनामकर्म	१०६ अपर्याप्तनामकर्म	१०७ साधारणनामकर्म	१०८ अस्थिरनामकर्म	१०९ अशुभनामकर्म	११० दौर्भाग्यनामकर्म	१११ दुःस्वरनामकर्म	११२ अनादेयनामकर्म	११३ अयशोनामकर्म	११४ उच्चैर्गोत्र	११५ नीचैर्गोत्र	११६ दानांतराय
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०		१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०	०	१	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०	०	१	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०	०	१	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०	०	१	१	०	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
																				गोत्रकर्म		

अंतरायकर्म	११७	लाभांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	११८	भोगांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	११९	उपभोगांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	१२०	वीर्यांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
		एकंदर दरेक कर्मनी	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९/५८	५६	५६	५६	५६	५६	५६	२६	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१	१	१	०
		ज्ञानावरणीयकर्मनी	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
		दर्शनावरणीयकर्मनी	९	९	६	६	६	६	६	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०	०	०	०
		वेदनीयकर्मनी	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
		मोहनीयकर्मनी	२६	२४	१९	१९	१५	११	९	९	९	९	९	९	९	९	५	४	३	२	१	०	०	०	०	०
		आयुकर्मनी	४	३	०	२	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
		नामकर्मनी	६४	५१	३६	३७	३२	३२	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
		गोत्रकर्मनी	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
		अंतरायकर्म	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०	०
		गुणठाणां	१	२	३	४	५	६	७							८					९	१०	११	१२	१३	१४

हवे बांधेली प्रकृति पोतपोतानो अबाधा काल वीतेथके शुभाशुभ विपाक देखाडे एटले भोगववे, जे माटे बंध पछी उदय करे तिहां प्रथम उदय लक्षण तथा ते सरखा भणी उदीरणा करण विशेष तेनु पण लक्षण कहेवा पूर्वक चौद गुणठाणा आश्रीने उदय स्वामीत्व विवरे छे

उदओ विवाग वेअण, मुदीरण मपत्ति इह दुवीससय ॥
सत्तर सयं मिच्छे मी, स सम्म आहार जिणणुदया ॥१३॥

उदओ–उदय (ते)	इह–ए	सम्म सम्यक्त्वमोहनीयनो
विवाग–विपाक (काळे)	दुवीससय–एकसोबावीस	आहार–आहारकद्विकनो
वेअण–वेदवु	सतरसय–एकसोसत्तर	जिण–जिन नाम कर्मनो
उदीरण–उदीरणा (ते)	मिच्छे–मिथ्यात्वे	अणुदया–उदय न होय
अपत्ति–अणपहोंचे खेंची ने वेदवु	मीस मिश्रमोहनीयनो	

अर्थ–कर्मरसनु विपाककाळे वेदवु तेने उदय कहीए अने उदयकाल अण पहोंचे खेंचीने वेदवु ते उदीरणा. एमा एकसोने बावीस प्रकृतिओघे होय. अने एकसोने सत्तर प्रकृतिनो उदय मिथ्यात्व गुणठाणे होय, केमके ए गुणठाणे मिश्र मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय, आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग अने तीर्थंकर नाम कर्म ए पांच प्रकृतिनो उदय न होय ॥ १३ ॥

बंधमां जे एकसोवीस प्रकृति हती ते करतां सम्यक्त्व मोहनीय अने मिश्र मोहनीय ए बे प्रकृति उदयमा वधारे होयछे, तेमांथि उपरनी पांच प्रकृतिनो उदय मिथ्यात्व गुणठाणे न होय कारण के मिश्र मोहनीयनो उदय मिश्र गुणठाणे होय, सम्यक्त्व मोहनीयनो उदय चोथाथी सातमा गुणठाणा सुधी होय, आहारक शरीर अने अंगोपांग चौद पूर्वधर मुनिने प्रमत्त गुणठाणे होय, अने तीर्थंकर नाम कर्मना दलनो उदय चोथाथी बारमा गुणठाणा लगे होय, तेमां पण उपशांत मोह गुणठाणु तीर्थंकरने नज होय तीर्थंकर नाम कर्मनो रसोदय तो तेरमे अने चौदमे गुणठाणे होय. तीर्थंकरने मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र अने उपशांत मोह ए चार गुणठाणा न होय, ते तीर्थंकर नाम कर्मनो उदय तेरमे

चौदमे गुणठाणे लाभे बीजा बार गुणठाणे न लाभे. तेथी ए पांच प्रकृतिनो उदय मिथ्यात्व गुणठाणे न लाभे. ते पांच अनुदय काढतां एकसोसत्तर प्रकृतिनो उदय आगले गुणठाणे जाणवो. अने आ पांच प्रकृतिनो उदय आगळ यथावस्थान लाभशे तेथी तेना उदयनो विच्छेद न कह्यो ॥

हवे जे प्रकृतिनो उदय मिथ्यात्वेजछे पण आगळ नथी ते कहेछे.

सुहुम तिगा यव मिच्छं, मिच्छंतं सासणे इगारसयं ॥
निरयाणुपुव्विणुदया, अण थावर इग विगल अंतो १४

सुहुमतिग—सूक्ष्मत्रिक	सासणे—सास्वादने	अण—अनंतानुबंधिचार
आयव—आतपनाम	इगारसयं—एकसो अगियार	थावर—स्थावरनाम
मिच्छं—मिथ्यात्वमोहनी	निरयाणुपुव्वि—नरकानुपूर्व्वीनो	इग—एकेंद्रियजाति
मिच्छंतं—मिथ्यात्वगुणठाणाने अंते	अणुदया—अनुदयछे	विगल—विकलेंद्रि
		अंतो—अंत होय

अर्थः—सूक्ष्मत्रिक (सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणनाम) आतपनामकर्म, मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृतिनो उदयविच्छेद मिथ्यात्व गुणठाणाने अंते होय. अने नरकानु पूर्व्वीनो अहींआं अनुदय छे तेथी बीजा सास्वादन गुणठाणे एकसो अगिआर प्रकृतिनो उदय लाभे. अने अनंतानु बंधी चार, स्थावरनाम कर्म, एकेंद्रि जाति अने त्रण विकलेंद्रिजाति ए नव प्रकृतिना उदयनो अंत सास्वादने होय ॥ १४ ॥

मीसे सय मणुपुव्वी, णुदया मीसो दएण मीसंतो ॥
चउसय मजए सम्मा, णु पुव्वी खेवा बीअ कसाया १५॥

मीसे—मिश्रगुणठाणे	मीसंतो—मिश्रनो अंत थाय त्यारे	सम्म—सम्यक्त्वमोहनीय
सयं—सो		अणुपुव्वी—चारअनुपुर्व्वी
अणुपुव्वीणुदया—अनुपुर्व्वीनो उदय न होय	चउसयं—एकसोचारनो	खेवा—क्षेपवीए, मुकीए
मीसोदएण—मिश्रमोहनीयनो उदय होय	अजए—अविरति सम्यक्दृष्टिगुणठाणे.	बीअ—बीजाअप्रत्याख्यानी
		कसाय—कषायनी चोकडी

अर्थ.–मिश्र गुणठाणे सो प्रकृतिनो उदय होय अहींआं देव, मनुष्य अने तिर्यंचानुपूर्व्वी ए त्रणनो उदय होय नहीं अने मिश्र मोहनीयनो उदय होय एटले (एकसो अगिआरमाथी नवनो विछेद अने त्रणनो अनुदय एम बार काढता नवाणु रही, तेमा मिश्र मोहनीयनो उदय होय ते वधारता) एकसोनो उदय होय अने मिश्र गुणठाणानो अत थाय तेवारे एकसोचार प्रकृतिनो उदय चोथा अविरति सम्यकूदृष्टि गुणठाणे होय एवी रीते के, अहीं मिश्र मोहनीनो विछेद थता नवाणु रही अने सम्यक्त्व मोहनी तथा चार अनुपूर्व्वी उमेरता एकसोचार थई अहीं बीजा अप्रत्याख्यानीय कषायनी चोकडी ॥ १५ ॥

मणुतिरिऽणुपुव्विविउव, छदुहगअणाइज्जदुगमतरछेओ ॥
सगसीइ देसि तिरि गइ, आउ नि उज्जोअतिकसाय॥१६॥

मणुतिरि–मनुष्य अने तिर्यंचनी	अणाइज्जदुग–अनादेयद्विक	आउ–तिर्यंचायु
	सतरछेओ सत्तरनो विच्छेद	नि–नीचैर्गोत्र
अणुपुव्वी–अनुपूर्व्वी	सगसीइ–सत्याशी	उज्जोअ–उद्योतनाम
विउव छ–वैक्रियाष्टक	देसि–देशविरतिने विषे	ति–त्रीजा प्रत्याख्यानी
दुहग–दौर्भाग्यनाम	तिरिगइ–तिर्यंचगति	कसाया–कषायनी चोकडी

अर्थ –मनुष्यानुपूर्व्वी, तिर्यंचानुपूर्व्वी, वैक्रियाष्टक (वैक्रिय शरीर, वैक्रिय अगोपाग, देवगति, देवायु, देवानुपूर्व्वी, नरकगति, नरकायु, नरकानुपूर्व्वी) दौर्भाग्य नामकर्म, अनादेयद्विक (अनादेय अने यश नाम कर्म) ए सत्तर प्रकृतिनो उदय विछेद चोथा गुणठाणे थाय एटले सत्याशी प्रकृतिनो उदय देशविरति पाचमे गुणठाणे होय अहींया तिर्यंच गति,

तिर्यंचायु, नीच्चैर्गोत्र, उद्योतनाम, अने त्रीजा प्रत्याख्यानावरणनी चोकडी ॥ १६ ॥

अठच्छेओ इगसी, पमत्ति आहार जुअल पख्खेवा ॥
थीणतिगाहारग दुग, छेओ छ सयरि अपमत्ते ॥१७॥

अठच्छेओ-आठनोविच्छेद	पख्खेवा-क्षेपवीए	छेओ-विच्छेद थाय
इगसी-एकाशी	थीणतिगः-थीणद्धित्रिक	छसयरि-छोतेर
पमत्ति-प्रमत्तगुणठाणे	आहारगदुग-आहारकद्विक	अपमत्ते-अप्रमत्तगुणठाणे
आहारजुअल-आहारकयुग०		

अर्थः-उपरनी आठ प्रकृतिनो विछेद पांचमे गुणठाणे होय. अने आहारक शरीर तथा आहारक अंगोपांग ए बे प्रकृति खेपवतां (उमेरतां) एकाशी प्रकृतिनो उदय छठे प्रमत्त गुणठाणे होय, अने त्यां थीणद्धीत्रिक तथा आहारकद्विक ए पांच प्रकृतिनो विछेद होय. एटले छोतेर प्रकृतिनो उदय सातमे अप्रमत्त गुणठाणे होय ॥ १७ ॥

सम्मत्तंतिमसंघयण, तिअगच्छेओबिसत्तरिअपुव्वे ॥
हासाइछक्कअंतो, छसट्ठि अनिअट्टि वेअतिगं ॥ १८ ॥

सम्मत्त-समकित मोहनी	बिसत्तरि-बोतेर	अंतो-अंत
अंतिम-छेल्लां	अपुव्वे-अपूर्वकरणे	छसट्ठि-छासठ
सघयणतिअगः संघयणत्रिक	हासाइ-हास्यादि	अनिअट्टि-अनिवृत्तिकरणे
च्छेओ-विच्छेद	छक्क-षट्कनो	वेअतिगंः-वेदत्रिक

अर्थः-सातमे गुणठाणे सम्यक्त्व मोहनीय, छेल्लां त्रण संघयण (अर्द्धनाराच, छेवठुं अने कीलिका) ए चारनो विछेद होय एटले बोतेर प्रकृतिनो उदय आठमा अपूर्व गुणठाणे होय त्यां हास्यादिक (हास्य, रति, अरति, शोक, भय अने दुगं-

च्छा) ० प्रकृतिना उदयनो विच्छेद होय, त्यारे ०सा० प्रकृतिनो उदय नवमा अनिवृत्ति गुणठाणे होय तेमांथी वेदत्रिक (पुरुष, स्त्री, अने नपुसक) ॥ १८ ॥

संजलण तिग ० छेओ, स०ी सुहुममि तुरिअ लोभतो॥
उवसंत गुणे गुण स, ०ि रिसह नाराय दुग अंतो ॥१९॥

संजलणतिग सज्वलनात्रिक	तुरिअ–चोथो	गुणसट्ठि–ओगणसाठनो
छछेओ–छनोविच्छेद	लोभतो–लोभनो अत	रिसहनारायदुग–ऋषभनाराचदुगनो
सट्ठि–साठनो	उवसंतगुणे–उपशात मोह गुणठाणे	अंतो–अतथाय
सुहुममि–सूक्ष्मसपराये		

अर्थ –सज्वलनत्रिक (क्रोध, मान, माया) ए ० प्रकृतिना उदयनो विछेद थाय तेवारे सूक्ष्म सपराय दशमे गुणठाणे सा० प्रकृतिनो उदय होय त्या सज्वलन लोभना उदयनो अंत थाय एटले उपशात मोह अगीयारमे गुणठाणे ओगणसा० प्रकृतिनो उदय होय त्या ऋषभनाराच अने नाराच सघयण ए बे प्रकृतिना उदयनो अत थाय ॥ १९ ॥

सगवन्न खीण दुचरिमि, निद्द दुगंतो अचरिमिपणवन्ना ॥
नाणंतराय दंसण, चउछेओ सजोगि बायाला ॥२०॥

सगवन्न–सत्तावन	चरिमि–छेलासमये	दसणचउ–दर्शनावरणीय
खीण–क्षीणमोहना	पणवन्ना–पचावन	च्छेओ–छेदाय [चार
दुचरिमि–छेलाबेसमयलगे	नाण–ज्ञानावरणीयपाच	सजोगि–सजोगीगुणठाणे
निद्दुगंतो–निद्राद्विकनो अतथाय	अतराय–अतरायपाच	बायाला–बेतालीस

अर्थ –उपर प्रमाणे सत्तावन प्रकृतिनो उदय क्षीणमोह गुणठाणाना छेल्ला बे समयमाना पहेला समय लगे होय त्या वळी निद्राद्विक (निद्रा प्रचला) नो उदय विच्छेद थाय, ते

वारे पंचावन प्रकृतिनो उदय छेल्ले समये होय त्यां ज्ञानावरणीय पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरणीय चार, एम चौद प्रकृतिनो उदय विच्छेद थाय, तेवारे सयोगी गुणठाणे बेतालीस प्रकृतिनो उदय होय, अहींआं हिसावे तो एकताळीस रही परंतु आगली गाथामां समजावशे ॥ २० ॥

तित्थुदयाउरलाथिर, खगइ दुग परित्त तिग छ संठाणा ॥
अगुरुलहु वन्नचउ निमि, ण तेअ कम्माइग संघयणं ॥ २१ ॥

तित्थुदया—तीर्थंकरनाम कर्मनो उदय	परित्ततिग—प्रत्येकत्रिक	निमिण—निर्माणनाम
उरल—औदारिकद्विक	छसंठाणा—छसंस्थान	तेअ—तेजस शरीर
अथिर—अस्थिरद्विक	अगुरुलहु—अगुरुलघु चतुष्क	कम्मा—कार्मणशरीर
खगइदुग—खगतिद्विक	वन्नचउ—वर्णचतुष्क	इगसंघयण—एकसंघयण

अर्थः—अहींआं तीर्थंकर नामकर्मनो उदय होय. माटे बेतालीस प्रकृतिनो उदय कह्यो. अहीं औदारिक द्विक (शरीर तथा अंगोपांग,) अथिरद्विक (अस्थिर अने अशुभनाम,) खगतिद्विक (शुभ अने अशुभ विहायोगति,) प्रत्येकत्रिक (प्रत्येक, स्थिर अने शुभनाम,) छए संस्थान. अगुरु लघु चतुष्क (अगुरुलघु, उपघात, पराघात, अने उश्वास,) वर्ण चतुष्क, निर्माणनाम, तेजसशरीर, कार्मणशरीर, एक संघयण (वज्रऋषभनाराच) ए सत्तावीश प्रकृति. ॥ २१ ॥

सूसर दूसर साया, ऽसाए गयरं च तीस वुच्छेओ ॥
बारस अजोगि सुभगा, इज्ज जसऽन्नयर वेअणिअं ॥ २२ ॥

सूसर—सुस्वरनाम	असाया—अशातावेदनीय	तीस—त्रीसनो
दूसर—दुःस्वरनाम	अेग—(एमांनी) एक	वुच्छेओ—विच्छेद होय
साया—शातावेदनीय	अपरंच—ए रीते	बारस—बारनो उदय

अजोगि–अयोगीगुणठाणे	आइज्ज–आदेयनाम	अन्नयरवे आणिय–वे मा-
सुभग सौभाग्यनाम	जस–यशनाम	हेनु अनेरु एकवेदनीय

अर्थ–सुस्वरनाम, दुस्वरनाम, शाता अने अशाता ए बेमाथी एक वेदनीय, ए त्रण तथा प्रथमनी सत्तावीस मळी त्रीस प्रकृतिनो विछेद तेरमे गुणठाणे थाय तेवारे बार प्रकृतिनो उदय अयोगी-केवली गुणठाणे होय, ते कहे छे सौभाग्य नाम, आदेयनाम, यश कीर्तिनाम अने वे माहेनु अनेरु एक शातावेदनीय ए चार ॥ २२ ॥ तथा

तस तिग पणिंदि मणुआ, उगइ जिण उच्चंति चरिम समयंतो ॥ उदओ सम्मत्तो ॥ उदउव्वुदीरणया, परम पमत्ताइ सग गुणेसु ॥ पाठांतरे ॥ पमत्ताइ सगति गुणा ॥ २३ ॥

तसतिग–त्रसत्रिक	चरिमसमय–अंतसमये	परम–एटलु विशेपके
पणिंदि–पचेंद्रिजाति	अंतो–अंत थाय	अपमत्ताइ–अप्रमत्तादि
मणुआउगइ–मनुष्यआयु अने गति	उदओ–उदयनो अधिकार	सगगुणेसु–सातगुणठाणे
जिणुच्चंति–जिननाम अने उच्चैर्गोत्र	सम्मत्तो–समाप्त थयो	तिगुणा–त्रिऋउणुजाणवु
	उदउव्व–उदयनी पेरे	
	उदीरणया–उदीरणा जाणवी	

अर्थ–त्रसत्रिक (त्रस, बादर, पर्याप्त,) पचेंद्रिय जाति, मनुष्याउ अने मनुष्यगति, जिननाम अने उच्चैर्गोत्र, ए बार प्रकृतिनो अयोगी गुणठाणाने अंत समये अंत थाय अहींआ उदयनो अधिकार समाप्त थयो हवे उदीरणा ते उदयनी पेरज जाणवी पण एटलु विशेप के अप्रमत्तादि सात गुणठाणे उदयनी प्रकृति कहीछे, तेथी उदीरणामा त्रण त्रण प्रकृति ओछी करवी ॥२३॥

जं वेअणि आहार दुग, थीणतिग नराउ अप्पमत्तंता॥
गुणयाल सजोगि उदी, रणंतु अणुदीरगुअजोगी॥२४॥

जं वेआणि-जे वेदनीय(वे)	अड—आठ	सजोगि—सजोगिगुणठाणे
आहारदुग-आहारकद्विक	पमत्तंता—प्रमत्तगुणठाणे अंतथाय	उदीरणंतु=उदीरणा
थीणातिग—थीणद्धीत्रिक		अणुदीरगु—अनुदीरक
नराउ—मनुष्याउ	गुणयाल—ओगणचालीश	अजोगी—अयोगीगुणठाणे

अर्थः—जे वेदनीय बे तथा आहारकद्विक, थीणद्धीत्रिक, मनुष्याउ ए आठ प्रकृतिनी उदीरणानो विछेद प्रमत्त गुणठाणे थाय, तेथी अप्रमत्तादि गुणठाणे उदयथी उदीरणा त्रण त्रण प्रकृतिनी उंछी करीए, तेवारे यावत् ओगणचालीस प्रकृतिनी उदीरणा सयोगि गुणठाणे होय, अने अयोगी गुणठाणे अनुदीरक होय ॥ २४ ॥

एसा पयडी तिगुणा, वेअणि आहार जुअलथीणतिगं॥
मणुआउ पमत्तंता,अजोगि अणुदीरगो भयवं ॥ २५ ॥
उदीरणा सम्मत्ता ॥

एसापयडी—एउदीरणाप्रकृति	आहारजुअल.आहारकद्विक	अजोगी=अयोगी
तिगुणाः—त्रणउणीजाणवी	थीणातिगं—थीणद्धीत्रिक	भयवं—भगवन
वेअणि—वेदनीयबे	मणुआउ—मनुष्यायु	अणुदीरगो—अनुदीरक
	पमत्तंता—प्रमत्तनाअंतलगे	

अर्थः—ए उदीरणा प्रकृति उदयथकी त्रण उंछी जाणवी. वेदनीय बे, आहारकद्विक, थीणद्धीत्रिक, मनुष्याउ ए आठ प्रकृतिनी उदीरणा प्रमत्तगुणठाणाना अंत लगीज होय. अयोगी भगवान सर्व कर्मना अनुदीरक जाणवा ॥२५॥ ए उदीरणा अधिकार समाप्त थयो.

उदय अने उदीरणा छट्ठा गुणठाणा सुधी सरखी होय छे, पण सातमे गुणठाणे उदयमां छोतेर प्रकृति होय अने उदीरणामा तोतेर होय त्यांथी दरेक गुणठाणे उदय करता उदीरणामां मनुष्यायु अने शाता तथा अशाता वेदनीय ए त्रण प्रकृति ओछी जाणवी. कारण के मनुष्यायु प्रमत्तना योगे करी उदरीये तेथी बहूकाळ वेदवा योग्य ते थोडा कालमा वेदी, अपवर्त्तन करण विशेषे करी वेदे तेथी सोपक्रम आयु होय. अकाळ मरण पामे अने अप्रमत्तादि गुणठाणे अकाल मरण न होय, तथा शाता अशातानी उदीरणा पण प्रमत्त पणे होय.अने उदयतो सर्व गुणठाणे लाभे.

हवे सत्ता अधिकार कहे छे

सत्ता कम्माण ठिइ, बंधाइअ लद्ध अत्त लाभाणं ॥
संते अडयाल सयं, जा उवसमु विजिणु बिअ तइए।२६।

सत्ता–सत्ता	लाभाण–लाभ कर्मपणु	णठाणा सुधी
कम्माण–कर्मनी	संते–सत्ताए होय	विजिणु–जिननाम विना
ठिइ–स्थिति	अडयालसयं–एकसो अ-	बीअ–बीजा (सास्वादन
बंधाइअ–बंध आदिये करी	डतालीस	गुणठाणे)
लद्द–लाध्यु छे	जा–यावत्	तइए–त्रीजा (मीश्रगुणठाणे)
अत्त–आत्म	उवसमु–उपशात मोह गु-	

अर्थ –सत्ता एटले कर्मनी स्थिति अवस्थान बंध तथा संक्रमण आदिके करी लाध्यु छे आत्मलाभ कर्मपणु जेणे. (आत्माना बांधेला कर्म ज्या सुधी खरे नहीं तथा अन्य प्रकृतिपणे संक्रमे नहीं त्या सुधी ते कर्म सत्तामा छे एम जाणवुं) एवी सत्तामा एकसो अडतालीस कर्मनी प्रकृति यावत् उपशात मोहनामे अगिआरमा गुणठाणा सुधी जाणवी पण बीजे सास्वादने अने त्रीजे मिश्रगुणठाणे जिननाम विना एकसोसूडतालीस कर्मप्रकृति सत्ताए होय ॥ २६ ॥

तीर्थंकर नामकर्म जेने सत्तामां छे एवो जीव बीजे त्रीजे गुणठाणे आ-

वंता नथी, अने मिथ्यात्व गुणठाणे जिननामनी सत्ता अंतर्मुहूर्त्त संभवे, जेम कोइ क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि जीव पूर्वे मिथ्यात्व प्रत्ययें नरकायु बांधी पछी सम्यक्त्व पामी जिननाम बांधी ते मरण समये सम्यक्त्वथी मिथ्यात्वे जाय, पण सास्वादने न जाय, तेथी मिथ्यात्व गुणठाणे अंतर्मुहूर्त्त मात्र जिननाम सत्ताए होय, पण सास्वादन अने मिश्र गुणठाणे न होय तेथी ते बे गुणठाणे एकसोछ-इत्ताळीसनी सत्ता होय.

अपूव्वाइच्च चउक्के, अणतिरि निरयाउ विणु वियालसयं॥
सम्माइ चउसुसत्तग, खयंमि इग चत्तसय महवा॥२७॥

अपूव्वाइअ–अपूर्वकरणादिक	निरयाउ–नरकायु	सत्तग–सात प्रकृति
चउक्के–चारगुणठाणे	विणु–ते विना	खयंमि–क्षय गइ
अण–अनंतानुबंधि चोकडी	वियालसयं–एकसो बेताळीस	इगचत्तसयं–एकसो एकतालीस
तिरि–तिर्यंचायु	सम्माइ–सम्यक्दृष्टि आदि	अहवा–अथवा
	चउसु–चार गुणठाणे	

अर्थः–अपूर्वकरणादिक चार गुणठाणे एटले ८-९-१०-११ मे गुणठाणे अनंतानुबंधिया चोकडी, तिर्यंचायु अने नरकायु ए प्रकृति विना एकसो बेताळीस प्रकृतिनी सत्ता होय. अने अविरति सम्यक्दृष्टि आदि एटले ४-५-६-७ ए चार गुणठाणे वर्त्तता क्षायक सम्यक्दृष्टि जीवने (अनंतानुबंधीनी चोकडी, सम्यक्त्वमोहनी, मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीय) ए सात प्रकृति क्षय गइ माटे एकसो एकतालीस प्रकृति सत्ताए होय अथवा पक्षांतरे ए अर्थ आगली गाथामां कहेवाशे २७

खवगंतुपप्पचउसुवि, पणयालं निरय तिरि सुराउ विणा॥
सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअट्टी पढम भागो॥२८॥

खवगतुपप्प–क्षपक केवली, चरम शरीरी	तिरि–तिर्यंचायु	जा–यावत्
चउसुवि–ए चार गुणठाणे	सुराउ–देवायु	अनिअट्टी–अनिवृत्तिना
पणयाल–एकसोपीस्तालीस	विणा–विना	पढम भागो–प्रथम भाग लगी
निरय–नरकायु	सत्तगविणु–सात विना	
	अडतीस–एकसो अडत्रीस	

अर्थ.–(पक्षांतरे) चरम शरीरीक्षपककेवलीने ४-५-६-७ ए चार गुणठाणे नरकायु, तिर्यंचायु अने देवायु ए त्रण विना एकसो पीस्तालीस प्रकृत्ति सत्ताए कही अने सात प्रकृति विना क्षायिक सम्यकदृष्टिने एकसो अडत्रीसनी सत्ता चोथा गुणठाणाथी यावत् अनिवृत्ति नवमा गुणठाणाना प्रथम भाग लगे होय. ॥ २७ ॥

थावर तिरि निरयायव, डुग थीण तिगे ग विगल साहार ॥
सोल खओ डुविस सय, बिअंसि बिअ तिअ कसायतो॥२ए॥

थावर–स्थावरद्विक	एग–एकेंद्रिजाति	डुविससय–एकसोबावीस
तिरि–तिर्यंचद्विक	विगल–विकलेंद्रियत्रिक	बिअंसि–बीजे भागे (नवमाना)
निरय–नरकद्विक	साहार–साधारण नाम	
आयव–आतपद्विक	सोल–सोलनो	बिअतिअ बीजा अने त्रीजा
थीणतिग–थीणद्धित्रिक	खओ–क्षय	कसायतो–कषायनो अतथाय

अर्थ.–स्थावरद्विक (स्थावर अने सूक्ष्मनामकर्म,) तिर्यंचद्विक तिर्यंचगति अने अनुपूर्वी,) नरकद्विक (नरकगति अने अनुपूर्वी,) आतपद्विक (आतप अने उद्योतनाम,) थीणद्धीत्रिक (थीणद्धी, निद्रानिद्रा, अने प्रचलाप्रचला,) एकेंद्रिजाति, विगलत्रिक (बेइंद्रि, तेइंद्रि, चोरिंद्रिजाति) तथा साधारण नामकर्म ए, सोल प्रकृतिनो क्षय नवमा गुणठाणाना

अर्थः--पंचाशी प्रकृत्तिनी सत्ता सयोगी गुणठाणे होय अने अयोगी गुणठाणे पण द्विचरम समयलगे पंचाशीनी सत्ता होय त्यां (देवगति, अने देवानुपूर्वीए) देवद्विक, (शुभ विहायोगति अने अशुभ विहायोगति ए बे) खगतिद्विक, (सुरभि अने दुरभि ए) गंधद्विक, स्पर्श आठ (कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण. स्निग्ध, रुक्ष), वर्ण पांच (कृष्ण, नील, लोहित, हारिद्र, श्वेत), रसपांच (तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल, मधुर), शरीर पांच (औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस, कार्मण), तेज नामे बंधन पांच अने तेज नामे संघातन पांच अने निर्माण नामकर्म एवं चालीस प्रकृति ॥ ३२ ॥

संघयण अथिर संठा, ण छक्क अगुरुलहु चउ अपजत्तं
सायं च असायं वा, परित्तुवंगातिग सुसर निअं ॥३३॥

संघयण-संघयण	चउ-चार	परित्त-प्रत्येकत्रिक
अथिर-अस्थिर	अपज्जत्तं-अपर्याप्तनाम	उवंगातिक-उपांगत्रिक
संठाण-संस्थान	सायंच-शाता वेदनीय	सुसर-सुस्वर नाम
छक्क-ए त्रणषट्क	असायं-अशाता वेदनीय	निअं-निचैगोत्र
अगुरुलहु-अगुरु लघु	वा-अथवा	

अर्थः-(उपरनी चालीस प्रकृति तथा) छ संघयण (वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, छेवठुं), अस्थिरषट्क (अस्थिरनाम, अशुभनाम, दोर्भाग्यनाम, दुःस्वरनाम, अनादेयनाम, अयशनाम), छ संस्थान (समचतु-

रुष्ठ, न्यग्रोध, सादि वामन, कुब्ज, हुंडक) ए त्रण षट्क, अगुरुलघु चतुष्क (अगुरुलघु, उपघात, पराघात, अने उश्वास), अपर्याप्तनाम, शातावेदनीय अथवा अशातावेदनीय वेमांथी एक, प्रत्येकत्रिक (प्रत्येक, स्थिर, अने शुभ), उपांगत्रिक (औदारिक, वैक्रिय, आहारक,) सुस्वरनाम अने नीचैर्गोत्र एव बोतेर थइ ॥ ३३ ॥

विसयरि खउ अचरिमे, तेरस मणुअ तसतिग जसाइज्जं
सुभग जिणुच्चपणिंदिअ, सायासा एगयर छेउ ॥३४॥

विसयरि-बोंतेर	तसतिग-त्रसत्रिक	उच्च-उचैर्गोत्र
खओ-क्षय होय	जस-यशनाम	पणिंदिय-पचेंद्रिजाति
चरिमे-छेल्ले समये	आइज्ज-आदेय नाम	सायासाय-शाता अशाता
तेरस-तेर	सुभग-सौभाग्यनाम	एगयर-वेमांनी एक (इतर)
मणुअ-मनुष्यत्रिक	जिण-जिननाम	छेओ-छेद

अर्थ —ए बहोतेर प्रकृतिनो क्षय होय. वळी छेल्ले समये तेर प्रकृतिनी सत्ताविछेद थाय ते कहे छे. (मनुष्यगति, अनुपूर्वी, आयु ए) मनुष्यत्रिक, (त्रस, बादर अने पर्याप्त ए) त्रसत्रिक, यशकीर्त्तिनाम, आदेयनाम, सौभाग्यनाम, जिननाम उचैर्गोत्र, पचेंद्रियजाति, अने शाता अशाता वेमांनी एक उदयवती एम तेरनो विछेद होय ॥ ३४ ॥

आ बोतेर प्रकृति आप आपणुं दळ बीजी पोतानी जातिनी जे प्रकृति उदयवती होय तेमां सक्रमे, सक्रमावी खपावे जेम मनुष्य गति उदयवती छे,

ते मध्ये शेष त्रणगतिनुं दलिक संक्रमावी खपावे, तेम बीजी पण यथायोग्य जाणवी. तेने स्तिबुक संक्रम कहीए. जेम पाणीनो परपोटो पाणीमांज संक्रमे. तेम जे सहेजे स्वस्तोक दलिक परप्रकृतिमांहे संक्रमे पण जीव वीर्ये न संक्रमे तेथी ए स्तिबुक संक्रमण करणमांहे गण्यो.

नर अणुपुव्वि विणा वा, बारस चरिम समयंमि जो खविउ॥
पत्तो सिद्धिं देविं, द वंदिअं नमह तं वीरं ॥ ३५ ॥

नरअणुपुव्वि-मनुष्यानुपूर्वी	जोखविउ-जे खपावीने	वंदिअं वंदित
विणावा-विना	पत्तो-पाम्यो	नमह-नमस्कार करो
बारस-बारप्रकृति	सिद्धिं-सिद्धगति	तंवीरं-ते महावीर स्वामीने
चरिमसमयंमि-छेल्ले समये	देविंद-देवेंद्रसूरिए	

अर्थः-मनुष्यानुपूर्वीनो उदय नथी तेथी ते विना मतांतरे बार प्रकृति छेल्ले समये जे खपावीने मोक्षगति प्रत्ये पाम्यो ते प्रत्ये देवेंद्रे वंदित तथा देवेंद्रसूरिये वंदित एवा महावीरस्वामीनां चरणकमल प्रत्ये नमस्कार करो ॥ ३५ ॥

मनुष्यगति, मनुष्यायु, त्रस, बादर, पर्याप्ति, यशःकीर्त्ति, आदेय, सौभाग्य, तीर्थंकर नाम, उच्चैर्गोत्र पचेंद्रियजाति, एक वेदनीय ए बार प्रकृति चरम समये उदयवती छे ते माटे ए स्तिबुक संक्रम विना स्वभावे स्थिति क्षय थाय ते माटे ए बार प्रकृति शुक्ल ध्याननो चोथो पायो समुच्छिन्न क्रिया अनिवृत्ति एवे नामे छे तेणे करीने खपावे.

॥ इति श्री द्वितिय कर्मस्तव कर्मग्रंथ समाप्तः ॥

उदययंत्र.

मूळ प्रकृति.	अनुक्रम.	उत्तर प्रकृति	१ मिथ्यात्व	२ सास्वादन	३ मिश्र	४ अविरत	५ देशविरत	६ प्रमत्त	७ अप्रमत्त	८ अपूर्वकरण	९ अनिवृत्तिकरण	१० सूक्ष्मसंपराय	११ उपशांतमोह	१२ क्षीणमोह	१३ सयोगिकेवली	१४ अयोगिकेवली
		ओघे मूल प्रकृति	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	४	४
		ओघे उत्तर प्रकृति	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७६	७२	६६	६०	५९	५७ ५५	४२	१२
१ ज्ञानावरणीय	१	मतिज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	२	श्रुतज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	३	अवधिज्ञानावर०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	४	मनःपर्यवज्ञानाव०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	५	केवलज्ञानावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२ दर्शनावरणीय	६	चक्षुदर्शनावरणीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	७	अचक्षुदर्शनावर०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	८	अवधिदर्शनावर०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	९	केवलदर्शनावर०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	१०	निद्रा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	११	निद्रानिद्रा	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	प्रचला	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	१३	प्रचला प्रचला	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०
	१४	थीणद्धी	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०
३ वेदनीय	१५	शातावेदनीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	} १
	१६	अशातावेदनीय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
४ मोहनीयकर्म	१७	सम्यक्त्वमोहनीय	०	०	०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
	१८	मिश्रमोहनीय	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१९	मिथ्यात्वमोहनीय	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२०	अनतानुबंधीक्रोध	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२१	अप्रत्याख्यानक्रोध	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२२	प्रत्याख्यानक्रोध	१	१	१	१	१		०	०	०	०	०	०	०	०
	२३	सज्वलनक्रोध	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	२४	अनतानुबधीमान	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२५	अप्रत्याख्यानीय०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२६	प्रत्याख्यानीयमा०	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२७	सज्वलनमान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	२८	अनतानुबंधीमाया	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२९	अप्रत्याख्यानीय०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	प्रत्याख्यानीय०	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३१	सज्वलनमाया	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	३२	अनतानुबधीलोभ	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३३	अप्रत्याख्यानीय०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३४	प्रत्याख्यानीय	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३५	सज्वलन लोभ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०
	३६	हास्य नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	३७	रति नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	३८	अरति नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	३९	शोक नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	४०	भय नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	४१	जुगुप्सा नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०
	४२	पुरुषवेद नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	४३	स्त्रीवेद नोकषाय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
	४४	नपुसकवेद नोक०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
५ आयुकर्म	४५	देवायु	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४६	मनुष्यायु	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४७	तिर्यंचायु	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४८	नरकायु	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

७ नामकर्म

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
४९	नरकगतिनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५०	तिर्यंचगतिनामकर्म	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५१	मनुष्यगतिनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५२	देवगतिनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५३	एकेंद्रियजातिना०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५४	बेइंद्रियजातिनाम०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५५	तेइंद्रियजातिनाम०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५६	चउरेंद्रियजातिना०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५७	पंचेंद्रियजातिनाम	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५८	औदारिकशरीर०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
५९	वैक्रियशरीरनाम०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६०	आहारकशरीरना०						१	०	०	०	०	०	०	०	०
६१	तैजमशरीरनाम०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
६२	कार्मणशरीरनाम०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
६३	औदारिकअंगो०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
६४	वैक्रिय अंगोपांग	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६५	आहारकअंगोपांग						१	०	०	०	०	०	०	०	०
६६	वज्रऋषभनारा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
६७	ऋषभनाराचसं०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०
६८	नाराचसंघयण	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०
६९	अर्द्धनाराचसंघ०	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
७०	कीलिकासंघय०	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
७१	छेवट्ठुसंघयण	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
७२	समचतुरस्रसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७३	न्यग्रोधसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७४	सादिसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७५	वामनसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७६	कुब्जसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७७	हुंडसंस्थान	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७८	वर्णनाम	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
७९	गंधनाम	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
८०	रसनाम	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
८१	स्पर्शनाम	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
८२	नरकानुपूर्वी	१	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	८३	तिर्यचानुपूर्व्वी	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	८४	मनुष्यानुपूर्व्वी	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	८५	देवानुपूर्व्वी	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	८६	शुभविहायोगति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	८७	अशुभविहायोगति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	८८	पराघातनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	८९	उच्छ्वासनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	९०	आतपनामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	९१	उद्योतनामकर्म	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	९२	अगुरुलघुनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	९३	तीर्थंकरनामकर्म													१	१
	९४	निर्माणनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	९५	उपघातनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	९६	त्रसनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६ नामकर्म	९७	बादरनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	९८	पर्याप्तनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	९९	प्रत्येकनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१००	स्थिरनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१०१	शुभनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१०२	सौभाग्यनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१०३	सुस्वरनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१०४	आदेयनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१०५	यश कार्त्तिनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१०६	स्थावरनामकर्म	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१०७	सूक्ष्मनामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१०८	अपर्याप्तनामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१०९	साधारणनामकर्म	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११०	अस्थिरनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१११	अशुभनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	११२	दौर्भाग्यनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११३	दुःस्वरनामकर्म	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	११४	अनादेयनामकर्म	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११५	अयश कीर्त्तिनाम०	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
७ गोत्रकर्म	११६	ऊच्चैगोत्र	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	११७	नीचैगोत्र	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८ अंतरायकर्म	११८	दानांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	११९	लाभांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	१२०	भोगांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	१२१	उपभोगांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
	१२२	वीर्यांतराय	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०

उदीरणा यंत्र.

	ओघ	१ मिथ्यात्व	२ सास्वादन	३ मिश्र	४ अविरत	५ देशविरत	६ प्रमत्त	७ अप्रमत्त	८ अपूर्वकरण	९ अनिवृत्ति	१० सूक्ष्मसंपराय	११ उपशांतमोह	१२ क्षीणमोह	१३ सयोगीकेवळी	१४ अयोगीकेवळी
मूळ प्रकृति	८	८	८	८	८	८	८	६	६	६	६	५	५	२	०
उत्तर प्रकृति	१२२	११७	१११	१००	१०४	८७	८१	७३	६८	६३	६७	५६	५४ ५२	३९	०

उदीरणा यंत्र उदयनी परेज छे, परंतु सातमे गुणठाणेथी वे वेदनीय तथा मनुष्यायुए त्रण प्रकृति ओछी थायछे. अने चौदमे गुणठाणे अयोगी भगवान अनुदीरक होय. तेथी त्यां कोइ प्रकृतिनी उदीरणा न होय. बाकी सर्व उदय प्रमाणेछे तेथी तेनो यंत्र विस्तारे बताव्यो नथी.

सत्तानो यंत्र.

अनुक्रम	गुणठाणु	मूलप्रकृति	उत्तरप्रकृति	उपशमश्रेणीये	क्षपकश्रेणीये	कइ प्रकृतिनी सत्ताविच्छेद होय
१	मिथ्यात्वे	८	१४८			
२	सास्वादने	८	१४७			अहीं जिननाम कर्मनी सत्ता न होय
३	मिश्रे	८	१४७			"
४	अविरतें	८	१४८	१४१	१४५ १३८	अहीं सत्तामा १४८ प्रकृति होय उपशम श्रेणीवाळो–अनतानुबधी चोकडी, मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, समकित मोहनी, ए सातनी सत्ता खपावे एटले १४१ क्षपक श्रेणी वाळो–१४८ माथी देवायु, नरकायु, तथा तिर्यचायु ए त्रण खपावे एटले १४५ क्षायकसमकिती–१४८ माथी उपरनी दस प्रकृति खपावे एटले १३८
५	देशविरतिये	८	१४८	१४१	१४५ १३८	"
६	प्रमत्तें	८	१४८	१४१	१४५ १३८	"
७	अप्रमत्तें	८	१४८	१४१	१४५ १३८	"
८	अपूर्व करणे	८	१४८ १४२	१३९	१३८	१४८माथी अनतानुबंधीनी चोकडी तथा तिर्यचायु अने नरका

						युजतां १४२ तथा उपशम श्रेणीए १४१ मांथी नरकायु तथा तिर्यंचायुनी सत्ता न होय एटले १३९
९ अनिवृत्ति करणना भाग नव	पेहेले भागे	८	१४८ १४२	१३९	१३८	स्थावरद्विक, तिर्यंचद्विक, नरकद्विक, आतपद्विक, थीणद्धीत्रिक एकेंद्रि जाति विगलत्रिक, साधारणनाम ए १६ प्रकृति अहीं खपावे एटले बीजे भागे १२२
	बीजे भागे				१२२	अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी चोकडी ए आठनी सत्ता अहीं खपावे १२२–८=११४
	त्रीजे भागे				११४	अहीं नपुंसकवेदनो क्षय करे, एटले चोथे भागे ११४–१=११३
	चोथे भागे				११३	अहीं स्त्रीवेदनो क्षय करे एटले पांचमे भागे ११३–१=११२
	पांचमे भागे				११२	अहीं हास्यषटकनी छ प्रकृति खपावे एटले छट्ठे भागे ११२–६=१०६
	छट्ठे भागे				१०६	अहीं पुरुषवेदनो क्षय करे एटले सातमे भागे १०६–१–१०५
	सातमे भागे				१०५	अहीं संज्वलन क्रोधनो क्षय करे एटलेआठमेभागे१०५–१–१०४
	आठमे भागे				१०४	अहीं संज्वलन माननो क्षय करे एटले नवमेभागे१०४–१–१०३
	नवमे भागे				१०३	अहीं संज्वलन मायानोक्षय एटले दशमे गुणठाणे १०३–१–१०२

१०	सूक्ष्मसपराये	८	१४८ १४७	१३९	१०२	अहीं सजवलन लोभनो क्षय करे एटले अगीआरमे गुणठाणे १०२-१=१०१
११	उपशात मोहे	८	१४८ १४७	१३९	१०१	अहीं निद्रा तथा प्रचलानो क्षय थाय एटले बारमे गुणठाणे १०१-२=९९
१२	क्षीणमोहे	७	१०१ ९९	०	१०१ ९९	चार दर्शनावरणीय, पाच ज्ञानावरणीय, तथा पाच अंतराय ए चौदनो क्षय थाय एटले तेरमे गुणठाणे ९९-१४=८५
१३	सयोग केवलीये	४	८५	०	८५	
१४	अयोगी छेल्लाना पहेला समये	४	८५ १३ १२	०	८५ १३ १२	देवद्विक२, खगतिद्विक२, गधद्विक२, स्पर्श८, वर्ण५, रस५, शरीर ५, वधन५, सघातन५, निर्माणनाम१, सघयण६, अस्थिरषटक ६, सस्थान६, अगुरुलघुचतुष्क ४, अपर्याप्तनाम१ वेमाथी एक वेदनीय१, प्रत्येकत्रिक३, उपाग त्रिक३, सुस्वरनाम१ नीचगोत्र १, ए वोतेर प्रकृति खपावे त्यारे ८५-७२=१३
	छेल्ले समये	४	१३	०	१३	मनुष्यत्रिक, त्रसत्रिक, यशनाम, आदेयनाम, सौभाग्यनाम जिन नाम, उच्चगोत्र, पचेंद्रिये जाति वाकीनी एक वेदनीय ए तेर प्रकृतिनी सत्ता अयोगी गुणठाणाना छेल्ला समये खपावे

अथ श्री बंध स्वामित्व नामा तृतीय कर्मग्रंथ ॥

बंध विहाण विमुक्कं, वंदिअ सिरि वद्धमाण जिणचंदं ॥
गइ आईसु वुच्छं, समासओ बंध सामित्तं ॥ १ ॥

बंध–जीवसाथेकर्मनुं बंधावुं
विहाण–करवुं, निपजाववुं
विमुक्कं–विशेषे मूकाणा (रहित)
वंदिअ–वांदीने
सिरि–श्री
वद्धमान–वीरस्वामी
जीणचंद–जीनोने विषे चंद्र समान
गइआइसु–गति आदि चौद मार्गणाओने विषे
वुच्छं–कहीशुं
समासओ–संक्षेपथी
बंधसामित्तं–बंध स्वामित्वपणुं

अर्थः–जीव प्रदेश साथे कर्मनो जे संबंध ते बंध कहिये, तेनुं मिथ्यात्वादिक हेतुए करीने निपजाववुं, ते बंध विधान, तेथी विमुक्त (रहित) एवा श्री वर्द्धमान स्वामी जे सामान्य केवलीमांहे चंद्र सरखा ते प्रत्ये वांदीने, गति आदि मार्गणा स्थानने विषे संक्षेपथी बंध स्वामित्वपणुं (कयो जीव केटली प्रकृति बांधे ते) कहीश ॥ १ ॥

हवे चौद मार्गणानां नाम कहे छे.

गइ इंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणेय ॥
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ २ ॥

गइ–गतिमार्गणा
इंद्रिए–इंद्रियमार्गणा
काए–कायमार्गणा
जोए–जोगमार्गणा
वेए–वेदमार्गणा
कसाय–कषायमार्गणा
नाणेय–ज्ञानमार्गणा
संजम–चारित्रमार्गणा
दंसण–दर्शनमार्गणा
लेसा–लेश्यामार्गणा
भव–भव्यमार्गणा
सम्मे–सम्यक्त्वमार्गणा
सन्नि–संज्ञिमार्गणा
आहारेक–आहारकमार्गणा

अर्थ.-गति, इंद्रिय, काय, जोग, वेद, कषाय, ज्ञान, चारित्र, दरशन, लेश्या, भव्य, सम्यक्त्व, सन्नि अने आहारक ए चौद मूळ मार्गणा छे, तेना उत्तर बासठ भेद थाय छे ॥२॥

१ गतिमार्गणा ४	४जोगमार्गणा ३	७ ज्ञानमा० ८	९ दर्शनमा० ४	१२सम्यक्त्वमा० ६
देव	मनयोग	मतिज्ञान	चक्षु	मिथ्यात्वी
मनुष्य	वचनयोग	श्रुतज्ञान	अचक्षु	सास्वादनीय
तिर्यंच	काययोग	अवधिज्ञान	अवधि	मिश्र
नारकी	५ वेदमा० ३	मनःपर्यवज्ञान	केवळ	क्षायोपशमिक
२ इंद्रियमार्गणा५	स्त्रीवेद	केवळज्ञान	१०लेश्यामा६०	औपशमिक
एकेंद्रि	पुरुषवेद	मतिअज्ञान	कृष्णलेश्या	क्षायक
बेइंद्रि	नपुसकवेद	श्रुतअज्ञान	नील	१३सन्निमा०
तेइंद्रि	६कषायमा० ४	विभंगज्ञान	कापोत	सन्नि
चौरिंद्रि	क्रोध	८चारित्रमा०७	तेजो	असन्नि
पचेंद्रि	मान	सामायक	पद्म	१४आहारकमा०
३ कायमार्गणा ६	माया	छेदोपस्थाप०	शुक्ललेश्या	आहारक
पृथ्वीकाय	लोभ	परिहारविशु०	११भव्यमा० २	अनाहारक
अपकाय		सूक्ष्मसपराय	भव्य	
तेउकाय		यथाख्यात	अभव्य	
वायुकाय		देशविरति		
वनस्पतिकाय		अविरति		
त्रसकाय				

जीणसुर विउवाहारदु,देवाउ अ निरय सुहुम विगलतिग
एगिंदि थावरा यव, नपु मिच्छ हुंड छेवठ्ठ ॥ ३ ॥

जीण-जीननामकर्म	निरय-नरकत्रिक	आयव-आतपनामकर्म
सुर-सुरद्विक	सुहुम-सूक्ष्मत्रिक	नपु-नपुसकवेद
विउव-वैक्रियद्विक	विगल-विकलेंद्रित्रीक	मिच्छ-मिथ्यात्वमोहनीय
आहार-आहारकद्विक	तिग-त्रिक (उपलक्षण)	हुंड-हुंड सस्थान
दु-द्विक (उपलक्षण)	एगिंदि-एकेंद्रियजाति	छेवठ्ठ-छेवट्ठु सघयण
देवाउ-देवायु	थावर-स्थावरनामकर्म	

अर्थः-(हवे १२० मांहेली केटलीक प्रकृतिनो अनुक्रम संग्रह कहेछे, आगळ जे प्रकृतिथी जेटली प्रकृति लेवी कहेशे त्यांथी तेटली प्रकृति अनुक्रमे लेवी,) जिननाम (१) सुरद्विक ३, (देवगति, देवानुपूर्व्वी),वैक्रियद्विक५ (वैक्रियशरीर, वैक्रियअंगोपांग), आहारकद्विक ७ (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग), देवायु ८, नरकत्रिक ११ (नरकगति, नरकनी अनुपूर्वी, नरकायु) सूक्ष्मत्रिक १४, (सूक्ष्म. अपर्याप्त, साधारण), विगलत्रिक १७ (बेंइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्रि), एकेंद्रियजाति १८, स्थावर नामकर्म १९, आतप नामकर्म २०, नपुंसकवेद २१, मिथ्यात्वमोहनीय २२, हुंडसंस्थान २३, अने छेवहुं संघयण २४ ॥३॥

अण मज्झा गिई संघयण, कुखगई निअ इत्थि दुहग थीणतिगं ॥ उज्जोअ तिरिदुगं तिरि, नराउ नर उरल दुग रिसहं ॥४॥

अण-अनंतानुबंधि चार कषाय	निअ-निच्चैर्गोत्र	तिरि-तिर्यंच (आयु)
मज्झागिइ-मध्याकृति (वच्चेनां चार संस्थान	इत्थि-स्त्रीवेद	नर-नर, मनुष्य (आयु)
संघयण-संघयण (मध्यनां चार)	दुहग-दौर्भाग्य (त्रीक)	आउ-आयुष्य
कुखगइ-अशुभखगति	थीण-थीणद्धि (त्रिक)	नर-मनुष्य (द्विक)
	तिगं-त्रिक	उरल-औदारिक (द्विक)
	उज्जोअ-उद्योतनाम	रिसहं-वज्रऋषभनाराच
	तिरिदुगं-तिर्यंचद्विक	

अर्थः-अनंतानुबंधि (क्रोध, मान, माया, लोभ) कषाय चार, मध्यनां चार संस्थान (न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज), मध्यनां चार संघयण (ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका) एवं ३६, अशुभविहायोगति ३७, निच्चैर्गोत्र ३८,

स्त्रीवेद ३९, तथा दौर्भाग्यत्रिक (दौर्भाग्य, दुस्वर, अनादेय), थीणद्वीत्रिक (निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, थीणद्वी) एव ४५, उद्योत नाम कर्म ४६, तिर्यचद्विक ४७, (तिर्यच गति, तथा अनुपूर्व्वी) तिर्यचायु ४९, मनुष्यायु ५०, मनुष्यद्विक ५२, (मनुष्य गति तथा अनुपूर्व्वी),औदारिकद्विक ५४, (औदारिक शरीर तथा अंगोपाग), वज्रऋषभ नाराच सघयण ५५, ए पचावन प्रकृतिनी क्रम सज्ञा जाणवी ॥ ४ ॥

नरकगतिने विषे बध स्वामित्वपणु कहे छे

सुरइ गुण वीस वज्ज, इगसउ उहेण बंधहि निरया ॥
तित्थविणा मिच्छि सय, सासणि नपु चउविणा छनुइ॥५॥

सुर–सुरादिक	बधहिं–बांधे	सय–सो
इगुणवीस–ओगणीस	निरया–नारकी	सासणि–सास्वादने
वज्ज–वर्जीये	तित्थ–तीर्थंकरनामकर्म	नपुचउ–नपुसकादिकचार
इगसओ–एकसोएक	विणा–विना	विणा–विना
ओहेण–ओघे, सामान्यपणे	मिच्छि–मिथ्यात्वे	छनुइ–छनु

अर्थ –हवे गति मार्गणाए बध कहेछे प्रथम नरकगतिए सुरद्धिग आदि आतप नामकर्म सुधीनी ओगणीस प्रकृति वर्जीने एकसोएक प्रकृति सामान्ये (गुणठाणानी अपेक्षा विना) सर्व नारकी समुच्चयपणे बाधे, (नारकीने भव स्वभावे ज ए ओगणीसनो बध न होय) मिथ्यात्व गुणठाणे तीर्थंकर नामनो बध न होय ते माटे ते विना सो प्रकृतिनो बध होय सास्वादने नपुसकादि (नपुसक, मिथ्यात्व, हुड, छेवट्ठु) चार विना छन्नुनो बध होय ॥ ५ ॥

विणु अण छवीसमीसे, बिसयरि सम्मंमि जिण नराउजुआ
ईअ रयणाइसु भंगो, पंकाइसु तित्थयर हीणो ॥ ६ ॥

विणुअण–अनंतानुबंधि आदि विना	क्त्व गुणठाणे	त्रण नरके
छवीस–छव्वीस	जिण–जिननामकर्म	भंगो–भांगो
मीसे–मिश्रगुणठाणे	नराउ–मनुष्याउए	पंकाइसु–पंक प्रभादिक त्रण नरके
बिसयरि–बोतेर	जुआ–युक्त	तित्थयर–तीर्थंकरनामकर्म
सम्मंमि–अविरति सम्य-	इअ–ए	हीणो–हीन (ओछो)
	रयणाइसु–रत्नप्रभादिक	

अर्थः–अनंतानुबंधि आदिथी नरायु लगे छव्वीस प्रकृति विना मिश्र गुणठाणे सित्तेर प्रकृति बांधे. अने जिननाम तथा मनुष्यायु मेळवतां बोतेर प्रकृति अविरति सम्यक् गुणठाणे बांधे एम रत्नप्रभादि त्रण नरके ओघेथी चार गुणठाणां सुधी एज भांगो जाणवो, पंक प्रभादि त्रण नारकीए तीर्थंकर नाम कर्मनो बंध हीन करीये (तेवारे ओघे १०१, मिथ्यात्वे १००, सास्वादने ९६, मिश्रे ७०, अने सम्यक्त्वे ७२ प्रकृतिनो बंध पहेली, बीजी अने त्रीजी नारकीए होय, अने ओघे १००, मिथ्यात्वे १००, सास्वादने ९६, मिश्रे ७०, सम्यक्त्वे ७१ प्रकृतिनो बंध चोथी पांचमी अने छठी नारकीए होय, कारण के ए त्रण नारकीमांथी आव्यो जीव तीर्थंकर न थाय ते माटे ते नामकर्मनो बंध न होय. ॥ ६ ॥

शास्त्रमां कह्युं छे के प्रथम नरकनो आव्यो जीव चक्रवर्त्ति थाय, बीजीनो आव्यो वासुदेव थाय, त्रीजी सुधीनो आव्यो तीर्थंकर थाय, चोथी सुधीनो आव्यो केवळी थाय, पांचमी सुधीनो आव्यो यति थाय, छठ्ठी सुधीनो आव्यो देश विरति थाय, अने सातमी सुधीनो आव्यो मत्स्यादिक सम्यक्त्व पामे पण देश विरतिपणुं ना पामे.

अजिण मणुआउ ओहे, सत्तमिए नरडुगुच्च विणु मिच्छे
इग नवई सासाणे, तिरिआउ नपुंस चउ वज्जं ॥ ७ ॥

अ–नहीं	नरदुग–मनुष्यद्विक	सासाणे–सास्वादने
जिण–जिननामकर्म	उच्च–उच्चैर्गोत्र	तिरिआउ–तिर्यचायु
मणुआउ–मनुष्यायु	विणु–विना	नपुसचउ–नपुंसकादिचार
ओहे–ओघे	मिच्छे–मिथ्यात्वे	वज्ज–वर्जीने
सत्तमिए–सातमीए	इगनवइ–एकाणु	

अर्थ.–जीननाम तथा मनुष्यायु ए बे प्रकृति एकसो एकमाथी हीन करीए ते वारे ओघे नवाणु प्रकृति सातमी नारकीए बधाय, [सातमी नारकीनो आव्यो जीव मनुष्य न थाय माटे] अने मनुष्यद्विक तथा उच्चैर्गोत्र ए त्रण प्रकृति विना मिथ्यात्वे छन्नुनो बंध होय, तथा तिर्यचायु, अने नुपुसकादि (नपुसकवेद, मिथ्यात्व, हुंडसंस्थान, अने छेवठ्ठुसंघयण ए)चार एम पाच प्रकृति वर्जीने एकाणु प्रकृतिनो बध सास्वादन गुणठाणे होय ॥ ७ ॥

अण चउवीस विरहिआ, सनर दुगुच्चाय सयरि
मीसडुगे ॥ सतरसओ ओहि मिच्छे, पज तिरिआ
विणु जिणाहार ॥ ८ ॥

अण=अनतानुबधि	सयरि–सित्तेर	पज–पर्याप्ता
चउवीस–चोवीस	मीसदुगे–मिश्रद्विक (मिश्र अने अविरति)	तिरिआ–तिर्यचपचेंद्रि
विरहिआ–विरहित	सतरसओ–एकसोसत्तर	विणु–विना
स–सहित	ओहि–ओघे	जिण–जीननामकर्म
नरदुग–मनुष्यद्विक	मिच्छे–मिथ्यात्वे	आहार–आहारकद्विक
उच्चाय–उच्चैर्गोत्र		

अर्थः—अनंतानुबंधि आदिथी तिरिदुग सुधीनी चोवीस प्रकृति एकाणुं प्रकृतिमांथी ओछी करीये, तथा मनुष्यद्विक अने उच्चैर्गोत्र ए त्रण प्रकृति [सहित करीए] मेळवीए, तेवारे मिश्र अने अविरति सम्यक्त्व ए बे गुणठाणे सितेर प्रकृतिनो बंध होय, सातमी नरकेथी नीकळ्यो मनुष्य न थाय पण मनुष्यद्विकने भवांतरे उदय आवे. हवे तिर्यंचगति बंध कहे छे--पर्याप्ता तिर्यंच पंचेंद्रिने जिननाम अने आहारकद्विक ए त्रण विना एकसो सत्तर प्रकृतिनो बंध ओघे अने मिथ्यात्वे होय. तिर्यंचमां गति प्रत्ययेज जिननामनो बंध न होय अने संयमविना आहारकद्विक पण न बंधाय. ॥८॥

विणु निरय सोल सासणि, सुराउ अण एगतीस
विणु मीसे ॥ स सुराउ सयरि सम्मे, बीअ कसाए
विणा देसे ॥ ९ ॥

विणु—विना	अण—अनंतानुबंधिआदि	सयरि—सित्तेर
निरय—नरक (त्रिकादि)	एगतीस—एकत्रीश	सम्मे-सम्यक्त्वें
सोल—सोळ	मीसे—मिश्रगुणठाणे	बीअं—बीजा(अप्रत्याख्यानावरणीय चार)
सासणि—सास्वादन	स—सहित	कसाए—कषाय
सुराउ—देवायु	सुराउ—देवायु	देशे—देशविरतिगुणठाणे

अर्थः--नरकत्रिक आदि [लइने हुंडक छेवठ लगेनी] सोळ प्रकृतिविना सास्वादन गुणठाणे एकसोने एक प्रकृति बांधे, देवायु अने अनंतानुबंधि आदिथी रिसह लगेनी एकत्रीस मळी बत्रीस प्रकृति विना अगनोतेर प्रकृति मिश्र गुणठाणे बांधे, अने देवायु सहित सित्तेर प्रकृति सम्यकत्व गुणठाणे बांधे, तथा बीजा अप्रत्याख्यानीया चार कषायविना छासठ

प्रकृति पांचमा देशविरति गुणठाणे बांधे पर्याप्ता तिर्यच पंचेंद्रिने ए पाचज गुणठाणा होय ॥ ९ ॥

हवे मनुष्य गति मध्ये बंध स्वामित्वपणु कहे छे

इअ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाई ॥ जिण इक्कारस हीण, नवसय अपजत्त तिरिअ नरा ॥ १० ॥

इअ–एमज	सजिण–जिननाम सहित	हिण–हिन
चउगुणेसु–चार गुणठाणे	ओहु–ओघे	नवसय–एकसोनव
विनरा–मनुष्यनेपण	देसाइ–देशविरतिआदिये	अपजत्त–अपर्याप्तपचेंद्रि
परम्–विशेष	जिणइक्कारस–जिन एका-	तिरिअनरा–तिर्यच तथा
अजया–अविरति गुणठाणु	दशक	मनुष्यो

अर्थ –एज प्रमाणे चार गुणठाणाने विषे तिर्यचनी पेठे मनुष्यने पण जाणवु [एटले मनुष्य ओघे १२०, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, मिश्रे ६९, बाधे] पण एटलु विशेष के अविरति सम्यक्त्व गुणठाणे जिननाम सहित ७१ बाधे देश विरत्यादिक गुणठाणे ओघ एटले कर्मस्तवोक्तनीपरे [बीजा कर्मग्रथमा कह्या प्रमाणे] कहेवु [ते केवी रीते ? पाचमे ६७, छट्ठे ६३, सातमे ५९, आठमा गुणठाणाना पेहेला भागे ५८, बीजा, त्रीजा, चोथा, पाचमा अने छठ्ठा भागे ५६, सातमा भागे २६, नवमा गुणठाणाना पेहेले भागे २२, बीजे २१, त्रीजे २०, चोथे १९, अने पाचमे १८, दशमा गुणठाणे १७, अगियारमा, बारमा अने तेरमा गुणठाणे १ तथा चउदमा गुणठाणे अबधक होय अने जिनादिकथी नरकत्रिक लगे जिनएकादशनी अगियार प्रकृति हिन कीधे एकसोनव प्रकृतिनो बंध अपर्याप्ता नि-

र्यंच अने अपर्याप्ता मनुष्य बांधे. कारण के एने एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं होय. यद्यपि करण अपर्याप्ता मनुष्यने सम्यक्त्व होय त्यां जीननाम पण बांधे छे, पण अहीं लब्धि अपर्याप्ता मनुष्यनी ज विवक्षा करीछे, ते माटे एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं होय ॥ १० ॥

हवे देवगतिने विषे बंध कहे छे.

निरयव्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदि तिग सहिआ ॥ कप्पदुगे विअएवं, जिणहीणो जोइ भवण वणे ॥ ११ ॥

निरयव्व–नारकीनी पेठे	एगेंदितिग–एकेंद्रित्रिक	जिण–जीननामकर्म
सुरा–देवता	सहिआ–सहित	हिणो–विना (हीण)
नवरं–विशेष	कप्पदुगे–बे देवलोके	जोइ–ज्योतिषि
ओहे–ओघे	विअ–पण	भवण–भुवनपति
मिच्छे–मिथ्यात्वे	एवं–एमज	वणे–व्यंतर

अर्थः–नारकीनी पेरे देवताने पण बंध कहेवो, पण एटलुं विशेष जे ओघे अने मिथ्यात्व गुणठाणे एकेंद्रिय, स्थावर, अने आतप ए त्रण प्रकृति सहित कहेवा, जे माटे देवता एकेंद्रियपणुं बांधेछे, ते माटे ओघे १०४, मिथ्यात्वे १०३, सास्वादने ए६, मिश्र ७०, सम्यक्त्वे ७२, नो बंध होय. पहेला बे देवलोके पण एमज बंध कहेवो. ज्योतिषि भुवनपति अने व्यंतरे जिननाम हिण (ओछुं) कहेवुं. कारण के त्यांनो आव्यो जीव जीन थाय नहीं, ते माटे ओघे १०३, मिथ्यात्वे १०३, सास्वादने ए६, मिश्रे ७०, सम्यक्त्वे ७१ बांधे. ॥ ११ ॥

रयणुव सणं कुमारा, इ आणयाइ उज्जोअ चउरहिआ ॥
अपज्ज तिरिअवनवसय, मिगिंदि पुढविजलतरुविगले ॥
॥ १२ ॥

रयणुव-रत्नप्रभानी पेठे	चार	अगिंदी-एकेंद्रि
सणकुमाराइ-सनत्कुमार आदि	रहीआ-रहित	पुढवी जळ-पृथ्वीकाय, अपकाय
आणयाइ-आनत आदि	अपज्ज-अपर्याप्ता	तरु-वनस्पतिकाय
उज्जोअचउ-उद्योतादिक	तिरिअव-तिर्यंचनी पेठे	विगले-विगलेंद्रिय
	नवसय-एकसो नव	

अर्थ -रत्नप्रभा नारकीनी पेठे सनत्कुमारादि (सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लांतक, महाशुक्र, सहसार) छ देवलोकना देवताने बंध कहेवो, एकेन्द्रिमा उपजवुं नथी ते माटे एकेंद्रिक त्रिक न बांधे, तेथी ओघे १०१, मिथ्यात्वे १००, सास्वादने ९६, मिश्रे ७०, सम्यक्त्वे ७२, बांधे आनतादि (आणत, प्राणत, आरण, अच्युत) चार देवलोके अने नवग्रैवेयकना देवता उद्योतनाम, तिर्यंचद्विक (गतितथा अनुपूर्वी) अने तिर्यंच आयु ए चार प्रकृति विना रत्न प्रभानी पेरे बांधे, ए देवता तिर्यंचमा न जाय ते माटे ए चार प्रकृति न बांधे, ते वारे ओघे ९७, मिथ्यात्वे ९६ सास्वादने ९२, मिश्रे ७०, अविरतिये ७२, बांधे, (अनुत्तर विमाने एक सम्यक्त्व गुणठाणु छे. माटे त्या ७२ बांधे), (हवे इन्द्रिय मार्गणा तथा काय मार्गणाए बंध कहे छे) अपर्याप्ता तिर्यंचनी पेरे मिथ्यात्व गुणठाणे एकसो नव प्रकृतिनो बंध ओघे एकेन्द्रि, पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय, अने विकलेंद्रिने होय ॥ १२ ॥

छनवइ सासणि विणु सुहु, म तेर केइ पुण बिंति चउनवइ ॥ तिरिअ नराऊहि विणा, तणु पज्जत्तिं न जंति जउ ॥ १३ ॥

छनवइ–छन्नु	केइ–कोइक	नरा–मनुष्य
सासणी–सास्वादन	पुण–वळी	आउहि–आयुष्य
विणु–विना	बिंति–कहेछे	विणा–विना
सुहुम–सूक्ष्म	चउनवइ–चोराणुं	तणुपज्जत्ति–शरीरपर्याप्ति
तेर–तेर	तिरिअ–तिर्यंच	नजंतिजओ–पूरी न करे

अर्थः–सास्वादन गुणठाणे सूक्ष्म त्रिकादिथी छेवट्ठं लगेनी तेर प्रकृति १०ए मांथी उंछो करतां छन्नुं प्रकृतिनो बंध होय, अने कोइक आचार्य एवी रीते कहे छे के अपर्याप्ता, तिर्यंचायु अने मनुष्यायु ए बे विना चोराणुं प्रकृति सास्वादने बांधे कारणके एकेंद्रियादिक सास्वादन वंत थका शरीर पर्याप्ति पण पूरी न करी शके तो आयुष्य केम बांधे ? ॥ १३ ॥

त्यां पेहेले मते शरीर पर्याप्ति थया पछी पण सास्वादन रहे, त्यां आयु बंधाय, त्यारे ते ९६ बांधे, अने बीजे मते तो शरीर पर्याप्तिथी अगाउज सास्वादने जाय तो आयु क्यांथी बांधे ? त्यारे ते ९४ बांधे. ए बे मत जाणवा. ए बेमां ९४ नो मत खरो भासे छे, जे भणी एकेंद्रियादिकनुं जघन्य आयुपण २५६ आवळिकानो क्षुल्लक भव होय ते आयुना बे भाग गये एकसो इकोतेरमी आवळिकाए आयु बंधाय अने सास्वादनपणुं तो उत्कृष्टुं पण छ आवलिकानुं होय तेटलामांहे परभवनुं आयु केम बंधाय ? ते माटे ९४ ज बंधाय ए मत शुद्ध जणाय छे.

उहु पणिंदि तसेगइ, तसे जिणिक्कार नर ति गुच्च विणा ॥ मणवय जोगे उहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से ॥ १४ ॥

ओहु–ओघवंध
पणिंदि–पचेंद्रि (मार्गणा)यें
तसे–त्रसकाय (मार्गणा)यें
गइतसे–गतित्रस(तेउका-य अने वाउकाय मार्गणा)
जिणिकार–जिनादिक अगीआर

नरतिग–मनुष्यत्रिक
उच्च–उच्चैर्गोत्र
विणा–विना
मनवच–मनवचन
जोगे–योगमार्गणाये
ओहो–ओघे

उरले–औदारिक औदारिक काययोगे
नर–मनुष्य बंधनीपेरे
भए–भांगो
त–तेमज
मिस्से–औदारिक मिश्रयोग

अर्थः–पचेंद्रिय अने त्रसकाय मार्गणाये चौदे गुणठाणे ओघ ते बीजे कर्मग्रंथे कह्यो छे तेम कहेवो. हवे गतित्रस ते तेउकाय वाउकाय, तेने जीन नाम आदे देइने नरकत्रिक लगे आगयार अने मनुष्यत्रिक तथा उच्चैर्गोत्र एम पदर प्रकृति एकसो वीसमाथी टाळीने एकसो पांचनो बंध होय, गुणठाणु एकज मिथ्यात्व होय. (हवे योग मार्गणाये बंध कहे छे.) मनोयोग वर्गणा चार ज्ञेदे (सत्य मनोयोग, मृषामनोयोग, सत्यामृषा मनोयोग, असत्या मृषा मनोयोग) तेमज (मनोयोगनी पेरे] वचनयोग चार ज्ञेदे ए आठ योगने विषे तेर गुणठाणे ओघ ते कर्मस्तवना पेरे बंध कहेवो. औदारिक काय योगने मनुष्यनी परे बंधनो ज्ञागो कहेवो तेमज आगळ तेर गुणठाणें औदारिक मिश्रयोगे बंध कहे छे ॥ १४ ॥

हवे ते औदारिक कार्मण साथे मिश्रकाययोगी अपर्याप्तावस्थाये जे मनुष्य तथा तिर्यंच होय त्यां बंध कहे छे

आहारछग विणोहे, चउदससउ मिच्छिजिण पणगहीण॥
सासणि चउ नवइविणा, तिरिअ नराउ सुहुम तेर ॥१५॥

आहारछक–आहारछग
विण–विना
ओहे–ओघे
चउदससउ–एकसो चौद
मिच्छि–मिथ्यात्वे

जिणपणग–जिनपचक
हिण–हिण (ओछी)
सासणि–सास्वादन
चउनवइ–चोराणु

तिरिअनराउ–तिर्यचायु तथा मनुष्यायु
सुहुम–सूक्ष्म
तेर–तेर

अर्थः–आहारकादि (आहारकद्विक, देवायु, नरकत्रिक ए) ठ विना ओघपणे एकसो चौदप्रकृति बांधे (औदारिक मिश्र काययोगी मनुष्य तिर्यंचने अपर्याप्त पणे औदारिक मिश्र होय, आहारकद्विकतो अप्रमतज बांधे, ते अपर्याप्त पणे होय नहीं अने देवायु तथा नरकत्रिक ए चारतो पर्याप्तोज बांधे, ते माटे ए ठ प्रकृति न बांधे.) अने मिथ्यात्वे जिन पंचक (जिननाम, सुरद्विक, अने वैक्रियद्विक) नी पांच प्रकृति हिन करीये त्यारे एकसो नव प्रकृति बांधे, तथा सास्वादन गुणठाणे तिर्यंचायु, मनुष्यायु, अने सूक्ष्मत्रिकादिक तेर एम पंदर प्रकृति १०एमांथी काढतां चोराणुनो वंध होय, औदारिक मिश्रनो तो अपर्याप्तपणे पण अल्पकाळ ठे. तेटला माटे आयुर्बंध न होय अने सूक्ष्मादिक तेर प्रकृतितो सास्वादनेज बंधाय, मिश्रगुण ठाणुं तो होयज नही ॥ १५ ॥

अण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगि-
णो सायं ॥
विणुतिरि नराउ कम्मे, वि एवमाहारउगि ओहो ॥१६॥

अण–अनंतानुबंध्यादिक	जोगिणो-सयोगी गुणठाणे	कम्मेवि–कार्मण काय योगीने पण
चउवीसाइ–चोवीस	सायं–शातावेदनीय	एवं–एमज
विणा–विना	विणु–विना	आहारदुगि-आहारकद्विक
जिणपण–जिनपंचक	तिरिनराउ–तिर्यंच अने मनुष्यायु	ओहो–ओघ
जुअ–युक्त, सहित		
सम्मि-सम्यकत्व गुणठाणें		

अर्थः–ते चोराणुं मांहेथी अनंतानुबंधीआदिथी तिर्यंचद्विक लगे चोवीस प्रकृति टाळीए अने जिनपंचक (जिननाम,

सुरद्विक, वैक्रियद्विक, ए पांच) सहित करीए, तेवारे पचोतेर प्रकृति अविरति सम्यक्त्व गुणठाणे बांधे अने सयोगी गुणठाणे एक शातानो बंध तथा तिर्यंच अने मनुष्यायु ए बे प्रकृति विना शेष कार्मण काययोगीने पण औदारिक मिश्र योगीने पेरे, एमज आहारक काययोगे अने आहारक मिश्रकाययोगे पण ओघ एटले कर्मस्तवमां कह्या मुजब बंध कहेवो ॥१६॥

सयोगि गुणठाणे केवळि समुद्घात करतां २-६-७ समये औदारिक मिश्रकाय योगी होय त्यातो एक शाता वेदनीज बांधे, पूर्व भव थकी इहां उत्पत्ति देशे आव्यो थको जीव प्रथम समये केवळ कार्मण काययोगेज आहार ले, पछी बीजा समयथकी औदारिकें मिश्रित कार्मणें आहार ले त्यारे औदारिक मिश्रकाययोगी कहीये. शरीर निप्पत्ति लगे शरीर नीपन्या पछी औदारिक काययोग कहीये

यतउक्त जोएणकम्मएण आहारेइ अणतर जीवो ॥
तेणपर मीसेण । जावसरीर निप्पत्ती ॥ १ ॥

ए औदारिक मिश्रने पेहेलु बीजु चोथु तेरमु ए चार गुणठाणां होय त्यां पेहेले गुणठाणे तिर्यंचायु मनुष्यायु बंधे कह्यां ते औदारिक मिश्रपणु तो शरीर पर्याप्ति पूरी कर्या अगाउज होय ते पछी औदारिक योग होय, अने आयु तो शरीर पर्याप्ति पछीज बंधाय, त्यारे मिश्रने ए बे आयुनो बंध केम घटे ? तथा वळी चोथे गुणठाणे तिर्यंच ७० बांधे, मनुष्य ७१ बांधे, अने औदारिक मिश्रकाययोगी ७५ बांधे एम कह्यु ते घणु विचारवा योग्य छे, कारण के मनुष्यद्विक तथा औदारिकद्विक अने वज्रऋषभ नाराच संघयण ए पांच प्रकृति तिर्यंच मनुष्य सम्यक्दृष्टी न बांधे अने औदारिक मिश्रकाययोगी बांधे, ते मनुष्य तिर्यंच टाळीने बीजो औदारिक मिश्रकाययोगी कोण होय ? ते माटे ए पांच प्रकृति एने बंधे केम घटे ? ए प्रकारे कोण जाणे शा अभिप्राये आप्यु हशे ! ते पंडिते विचारवु ए संदेह टीकाकारे पण विवर्यो नथी

कार्मण काययोग भवांतराल वाटे वेहेतां अने उपजवाने पेहेले समये होय तथा केवळि समुद्घातने त्रीजे चोथे पांचमे समये होय, एने गुणठाणां (पेहेलुं, बीजु चोथु तेरमुं ए) चार होय ते तिर्यगायु तथा मनुष्यायु वर्जीने औदारिक

मिश्रनी पेरे बंध कहेवो. जेम ओघे ११२, मिथ्यात्वे १०७, सास्वादने ९४, सम्यक्त्वे ७५, अने तेरमे एक शातावेदनीय बांधे, आहारक काययोग अने आहारक मिश्रकाययोग ए बेनो उदय छठ्ठे गुणठाणे छे, ते माटे त्यां ओघनी पेरे ६३ नो बंध होय, ए आहारक प्रमत्त साधु चौदपूर्वीज करे, अने ते प्रारंभ वेळा औदारिक साथे मिश्र होय. (जीवविजयजी कृत टबामांथी)

सुर ओहो वेउव्वे, तिरिअ नराउ रहिओअ तम्मिस्से॥
वेअतिगा इम विअतिअ,कसाय नव दुचउ पंचगुणा१७।

सुर—देवतानीपेरे	तं—तेमज	तिअ—त्रीजा
ओहो—ओघे	मिसे—वैक्रिय मिश्रकाय योगीने	कसाय—कषाय
वेउव्वे—वैक्रिय काय योगने		नव—नव
तिरिअनराउ—तिर्यंचायु अने मनुष्यायु	वेयतिग—वेदत्रिक	दु—बे
	आइम—पेहेला	चउ—चार
		पंच—पांच
रहियो—रहित	विअ—बीजा	गुणा—गुणठाणां

अर्थः—वैक्रिय काययोगने देवतानी पेरे बंध कहेवो, तेमज वैक्रियमिश्रकाययोगीने तिर्यंचायु अने मनुष्यायु ए बेथी रहित वैक्रियनी पेरे कहेवुं. (हवे वेदादिक मार्गणाये बंध कहे छे) वेद त्रणेने प्रथम नव गुणठाणां होय, आदिम एटले अनंतानुबंधी चार कषायवंतने पेहेलां बे गुणठाणां होय, बीजा अप्रत्याख्यानीया चार कषायवंतने पेहेलां चार गुणठाणां होय, त्रीजा प्रत्याख्यानीया कषायवंतने पांच गुणठाणां होय ॥ १७ ॥

वैक्रिय काय योगे देवतानी पेठे ओघे १०४, मिथ्यात्वे १०३, सास्वादने ९६, मिश्रे ७०, सम्यक्त्वे ७२, नो बंध होय ते भवप्रत्ययी वैक्रिय काययोगीने जाणवुं, गुणप्रत्ययीने नहीं.

वैक्रिय मिश्रयोगे वैक्रिय योगनी पेठे जाणवुं, पण एटलुं विशेष के अहीं मिश्र गुणठाणुं न संभवे, तेथी जे भणी देवता तथा नारकीने अपर्याप्त अवस्थाये कार्मण साथे मिश्र वैक्रिययोग ते लीधो, त्यां मिश्र गुणठाणुं न होय. शेष

त्रण गुणठाणे पण तिर्यगायु अने मनुष्यायु न बांधे, लब्धि अपर्याप्तो देवता तथा नारकी न होय तेथी अपर्याप्तावस्थाये आयु न बांधे त्यारे ओघे १०२, मिथ्यात्वे १०१, सास्वादने ९४, मिश्रगुणठाणु होय नहीं अने चोथे गुणठाणे ७१ नो बध होय. बाकीनां गुणठाणा होय नहीं

त्रणे वेदने प्रथमनां नव गुणठाणा होय त्यां ओघे १२०, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, मिश्रे ७४, अविरतिये ७७, देशविरतिये ६७, प्रमत्ते ६३, अप्रमत्ते ५९-५८, अपूर्वकरणे ५८-५६-२६, बादर सपराये २२-२१, ते पछी अवेदो थाय.

पेहेला अनतानुबधी चार कषाये ओघे ११७, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, बीजा अप्रत्याख्यानीयने ओघे ११८, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, मिश्रे ७४, सम्यक्त्वे ७७, तथा प्रत्याख्यानीयने ओघे ११८, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, मिश्रे ७४, अविरतिये ७७, देशविरतिये ६७

संजलण तिगे नव दस, लोहे चउ अजइदुतिअनाणतिगे
बारस अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइचरिम चउ१८।

सजलणतिगे सज्वलनत्रिक	दुति-बीजु अथवा त्रीजु	पढमा-पेहेलां
नवदस-नवमा दशमा	अनाणतिगे-अज्ञानत्रिक	अहखाइ-यथाख्यात
लोहे-लोभ	बारस-बार	चरिम-चारित्र
चउ-चार	अचक्खुचक्खुसु-अचक्षु दर्शने	चउ-चार
अजइ-अविरति		

अर्थ -सज्वलनत्रिक (क्रोध, मान, माया)ने नव गुणठाणां होय, त्या ओघनी पेरे बध, संज्वलन लोभने दश गुणठाणां होय त्या सयमद्वारे अविरतिने चार गुणठाणा ओघे ११८, मिथ्यात्वे ११७, सास्वादने १०१, मिश्रे ७४, सम्यक्त्वे ७७. अज्ञान त्रणने बे अथवा त्रण पण गुणठाणा होय ओ० ११७, मि० ११७, सा० १०१, स० ७४. चक्षु दर्शनी तथा अचक्षु दर्शनीने विषे १२ गुणठाणा होय, त्या ओघ ते कर्मस्तव (बीजा

कर्मग्रंथ) नी पेरे बंध कहेवा. यथाख्यात चारित्रने छेल्लां चार गुणठाणां होय, त्यां त्रण गुणठाणे एक शातानो बंध अने अयोगी अबंधक (बंधरहित) होय. ॥ १८ ॥

मणनाणि सगजयाइ, समइअ छेअचउ दुन्नि परिहारो ॥
केवल दुगि दो चरिमा, अजयाइ नव मइसु ओहि दुगे १९

मणनाणी-मनःपर्यवज्ञानीने	परिहारो-परिहार विशुद्धिने	दिथी
सग-सात	केवळदुगि-केवळद्विक (ज्ञान, दर्शन)	नव-नवमा सुधी
जयाइ-प्रमत्तादिकथी	दो-वे	मइसु-मतिज्ञानी तथा श्रुत ज्ञानीने विषे
समइअ-सामायक	चरिमा-छेल्लां	ओहिदुगे-अवधिज्ञान, तथा दर्शनीने विषे
छेअ-छेदोपस्थापनिय	अजयाइ-अविरति आ-	
चउ-चार (६ थी ९)		
दुन्नि-वे (६-७)		

अर्थः-मनःपर्यवज्ञानीने प्रमत्तादिक छठाथी बारमा लगे सात गुणठाणां होय. (ओघे ६५, प्रमत्ते ६३, अप्रमत्ते ५९, ५८, निवृत्तिये ५८, ५६-२६, अनिवृत्तिये २२-२१-२०-१९-१८, सूक्ष्मसंपराये १७, उपशांतमोहे १, क्षीण मोहे १.) सामायक तथा छेदोपस्थापनीय चारित्रने छठाथी नवमा लगे चार गुणठाणां होय (ओघे ६५, प्रमत्ते ६३, अप्रमत्ते ५९,-५८, निवृत्तिये ५८-५६-२६, अनिवृत्तिये २२-२१-२०-१९-१८,) परिहार विशुद्धि चारित्रने छठुं सातमुं ए वे गुणठाणां होय (ओघे ६५, प्रमत्त ६३, अप्रमत्ते ५८,) केवळज्ञानी तथा केवळदर्शनी ए वेने छेल्लां गुणठाणां होय, सयोगी एक शाता वांधे, अयोगी अबंधक, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, अवधिदर्शनी ए चारेने अविरति सम्यक्दृष्टि प्रमुख क्षीणमोह लगे नव गुणठाणां होय,

(त्यां ओघे ७९, सम्यक्त्वे ७१, देशे ६७, प्रमत्ते ६३, अप्रमत्ते ५९, ५८, निवृत्तिये ५८, ५६-२६, अनिवृत्तिये २२-२१ २० १९-१८, सूक्ष्मसपराये १७, उपशांतमोहे १, क्षीणमोहे १,) ॥ १९ ॥

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छ तिगि देसे॥
सुहुमि सठाणं तेरस, आहारग निअनिअ गुणोहो॥२०॥

अड—आठ (४ थी ११)	इक्कार-अगिआर (४थी १४)	ठाण—गुणठाणु
उवसमि—उपशमिक	मिच्छतिगि—मिथ्यात्व त्रिक	तेरस—तेर
चउ—चार (चोथाथी सात)	त्रण गुणठाणा	आहारग—आहारक मार्गणा
वेअगि—वेदक (क्षायोप	देसे—देशविरति	निअनिअ—पोतपोतानो
शमिक सम्यक्त्वी)	सुहुमि—सुक्ष्मसपराय	गुण—गुणठाणे
खइए—क्षायक (सम्यक्त्वी)	स—पोतपोतानु	ओहो—ओघे

अर्थ –(चोथाथी अगिआरमा सुधी) आठ गुणठाणां उपशमिक सम्यक्त्वीने होय (चोथाथी सातमा सुधी) चार गुणठाणा वेदक एटले क्षायोपशमिक सम्यक्त्वीने होय (चोथाथी चौदमा सुधी) अगिआर गुणठाणा क्षायक सम्यक्त्वीने होय मिथ्यात्वी, सास्वादनी, मिश्रदृष्टी, देशविरति, अने सूक्ष्म सपराय चारित्री एटलाने पोतपोताने नामे एक गुणठाणु होय. (समये समये आहार करे ते) आहारक मार्गणावाळाने सयोगी लगे तेर गुणठाणा होय, ए सर्वे पूर्वे कह्यां तेने आप आपणे गुणठाणे प्रकृतिनो बंध ओघते कर्म स्तवनी पेरे कहेवो २०

चोथुं, पाचमुं, छठु अने सातमु ए चार गुणठाणा ग्रंथिभेद करतां देशविरति सर्व विरति सहित उपशमिक सम्यक्त्व पामे तेथी नाना जीवनी अपेक्षाये होय. तथा आठमु, नवमु, दशमु अने अगिआरमु ए चार गुणठाणां उपशम श्रेणीये होय. वळी वेदक एटले क्षायोपशमिक सम्यक्त्व जाणवु पण अहीं सम्य-

क्त्व मोहनीय वेदे ते माटे वेदक नाम कह्युं. त्यां ४-५-६-७ ए चार गुणठाणां होय, त्यां ओघे बंध ७९, अविरतिये ७७, देश विरतिये ६७, प्रमत्ते ५९-५८.

क्षायक सम्यकत्व मार्गणाये चोथाथी मांडीने अयोगी गुणठाणा सुधी अगीआर गुणठाणाये ओघे बंध ७९, अविरतिये ७७, देशविरतिये ६७, प्रमत्ते ६३, अप्रमत्ते ५९-५८, निवृत्तें ५८-५६-२६, अनिवृत्तिये २२, इत्यादिक अहींआं विचारवा योग्य छे. जे भणी पूर्वे बद्धायु मनुष्य क्षायक सम्यक्त्व लहे तेने तो आयु बांधवुं नथी कारण के पूर्वे बांधी मुक्युं छे. अने अबद्धायु मनुष्य क्षायक सम्यक्त्व लहे, ते तो चरम शरीरी होय तेने पण आयुबंध न होय तो पांचमे अने छठ्ठे गुणठाणे सुरायु बंधनो स्वामी कोण ? तथा कोइ कहेशे जे "पठ्ठवगोउमणुसो, निठ्ठवगोचउसुविगइसु" ए अपेक्षाये दर्शनक्षायिक निष्टापक मनुष्य अने तिर्यंच देशविरति गुणठाणे सुरायु बांधे ते खोटुं छे कारण के तेतो असंख्याता वर्षायुवाला मनुष्य तिर्यंच होय तेने देशविरति गुणठाणुं न होय पण अहीं संभवीये छीये जे "तित्थयरत्तंसमत्तखई असत्तमाईतईआए ,, इत्यादिकनी पेरे साथे संभवीये छीये.

चउथ्थे भवंमि सिज्झंति खइच सम्मत्ते ॥ सुर निरयजुय लिसुगइइमंतु जिणकालियनराणं २ बद्धाउयाणएवं । सिज्झंति उतभ्यवे अबद्धाऊ ॥ पठ्ठवगोउ मणुस्सो । निठ्ठवगा चउसुविगई ॥३॥ एने गुणठाणां अगिआर होय

मिथ्यादृष्टीने ११७ बंध, सास्वादन सम्यक्त्वीने १०१, मिश्रदृष्टिने ७४, देशविरति ६७, सूक्ष्म संपराय चारित्रीने १७, नो बंध होय.

आहारीने ओघे १२०, मिथ्यात्वे ११७, इत्यादि यावत् सयोगीए एक बांधे.

परमुवसमि वट्टंता, आउ न बंधंति तेण अजय गुणे ॥
देव मणुआउ हीणो, देसाइसु पुण सुराउ विणा ॥२१॥

परम—विशेष
उवसमि—औपशमिक
वट्टंता—वर्त्तता

आउ—आवखुं
न—न
बंधंति—बांधे

तेण—ते भणी
अजय—अविरति सम्यक् दृष्टि

गुणे-गुणठाणे	हिणो-हिन	पुण-वळी
देव-देवायु	देसाइसु-देशविरति आदिने विषे	सुराओ-देवायु
मणुआउ-मनुष्यायु		विणा-विना

अर्थः-पण एटलु विशेष जे उपशमिक सम्यक्त्वे वर्त्तता जीव परभवनु आयु न बांधे ते माटे अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणे देवायु अने मनुष्यायु ए बे प्रकृति हिन करवी (एटले चोथे गुणठाणे ओघे ७७ छे ते इहां उपशम सम्यक्त्वी ७५ बांधे अने नरक तिर्यंगायु तो ओघमाज टाळया छे) देशविरति, प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणठाणाने विषे वळी एकज देवायु विना बंध कहेवो त्यारे देशे ६६, प्रमत्ते ६२, अप्रमत्ते ५८, मनुष्यायु तो ओघमांज टाळ्यु छे ॥ २१ ॥

हवे लेश्या मार्गणाद्वारे बंधस्वामित्व कहे छे

ओहे अट्ठारसय, आहार दुगूणमाइ लेस तिगे ॥
तंतित्थोण मिच्छे, साणाइसु सव्वहिं ओहो ॥ २२ ॥

ओहो-सामान्ये	आइलेसतिगे-आदिनी त्रण लेश्याने विषे	मिच्छे-मिथ्यात्वे
अट्ठारसय-एकसो अढार	त-ते	साणाइसु-सास्वादनादिके
आहारदुगूण-आहारकद्विक उणु	तित्थोण-तीर्थंकर नाम कर्म उणु	सव्वहिं-सर्व गुणठाणे
		ओहो-ओघे

अर्थ-सामान्ये आहारद्विक उणो करता एकसो अढार प्रकृतिनो बंध आदिनी त्रण (कृष्ण, नील, कापोत) लेश्याने विषे होय (ए त्रण लेश्या तो चोथा तथा छट्ठा लगे छे अने आहारक द्विकतो सातमे बंधाय ते माटे ते विना) ते तीर्थंकर नाम कर्म हीन करीए, ते वारे मिथ्यात्व गुणठाणे एकसोने सत्तर प्रकृति बांधे अने सास्वादनादिक आगले सर्व गुणठाणे

तो सर्व लेश्यावंतने कर्म स्तवनीपेरे सामान्ये बंध जाणवो. ।२२।

इहां त्रण लेश्यावंतने चोथे गुणठाणे बे आयुनो बंध कह्यो पण एकज मनुष्यायुनो बंध घटे, जे भणी नारकी देवताता मनुष्यायु बांधे, पण मनुष्य तिर्यंच देवायु न बांधे, जे माटे जे लेश्यामां आयु बंधाय ते लेश्यामां उपन्युं जोइए अने सम्यक् दृष्टि तो वैमानीकनुंज आयु बाधे, अने ते वैमानिकमां तो कृष्ण, नील अने कापोत नथी, ते माटे अशुद्ध लेश्यावंत सम्यकूदृष्टि देवायु न बांधे. एमज भगवती सूत्रना त्रीशमा शतकने पेहेले उद्देशे कह्युं जे क्रियावादी कृष्णादि त्रण लेश्यावंत सम्यक्दृष्टि देवायु न बांधे, देवता अने नारकी मनुष्यायु बांधे पण मनुष्य तिर्यंच एके आयु न बांधे एम कह्युं छे, अने घटे पण एमज पछी ग्रंथकारनो अभिप्राय तो बहु श्रुत जाणे ॥

तेऊ निरय नवूणा, उज्जोअ चउनिरय बार विणु सुक्का॥
विणु निरय बार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे॥२३॥

तेऊ–तेजोलेश्याये	निरयबार–नरकत्रिकादि-	पम्हा–पद्मलेश्या
निरय–नरकादिक	विणु–विना [बार	अ–नहीं (वर्जीने)
नवूणा–नव प्रकृतियेउणो	सुक्का–शुक्लेश्यावंतने	जिण–जिननाम
उज्जोअ–उद्योतादिक	विणु–विना	आहाराइ–आहारकद्विक
चउ–चार	निरयबार-नरकत्रिकादि बार	मिच्छे–मिथ्यात्वे

अर्थः–तेजो लेश्यावंत नरकादिक (नरकत्रिक, सूक्ष्मत्रिक, विगलत्रिक ए) नव प्रकृतिए उणो, एटले एकसो अगिआर प्रकृतिनो बंध ओघे करे, उद्योतादिक (उद्योतनाम, तिर्यंचद्विक, तिर्यंचायु,) चार तथा नरकादि (नरकत्रिक, सूक्ष्मत्रिक, विगलत्रिक, एकेंद्रि, थावर, आतप) बार ए सोळ विना एकसोचार प्रकृति शुक्ल लेश्यावंत बांधे, (अहीं छठा सातमा आठमा कल्पना देवता सर्व शुक्ल लेश्यावंत छे अने ते तो उद्योत चतुष्क बांधे छे त्यारे पंचेंद्रि तिर्यंचमां उपजे छे,

तो अहींआ उद्योत चतुष्क केम टाल्युं ए पण संशय बहुश्रुत गम्य छे) तथा नरकादिक बार प्रकृति विना पद्मलेश्यावंत ओघे एकसो आठ बांधे तथा जिननाम अने आहारद्विक ए त्रण प्रकृति वर्जीने बाकीनी मिथ्यात्वे कहेवी

तेजो, पद्म, शुक्ल लेश्याने ते केम ? तेजो लेश्याने ओघे १११, मिथ्यात्वे १०८, सास्वादने १०१, पछी ओघनीपेरे सात गुणठाणां होय पद्म लेश्यावंतने ओघे १०८, मिथ्यात्वे १०५, सास्वादने १०१, पछी ओघनीपेरे सात गुणठाणा लागे, शुक्ल लेश्यावंतने ओघे १०४, मिथ्यात्वे १०१, सास्वादने ९७, ते पछी ओघवत् तेर गुणठाणा लागे

सव्व गुण भव सन्निसु, ओहु अभव्वा असन्नि मिच्छिसमा।
सासणि असन्नि सन्निव, कम्मणभंगो अणाहारे ॥२४॥

सव्व गुण–सर्वे गुणठाणां	असन्नि–असन्नि	कम्मण–कार्मणकाययोगीनो
भव सन्नि–भव्य अने सन्निने विषे	मिच्छिसमा–मिथ्यात्व गुणठाणा सरखा	भंगो–भांगो
ओहु–ओघनी पेरे	सासणि–सास्वादने	अणाहारे–अणाहारीने विषे
अभव्वा–अभव्य	सन्निव–सन्निनी पेठे	

अर्थ.–भव्य अने सन्नी ए बे मार्गणाने विषे सर्वे गुणठाणां होय, त्यां प्रकृतिनो बंध ओघनी पेरे कहेवो, अभव्य मार्गणाए अने असन्नि मार्गणाए तो मिथ्यात्व गुणठाणा सरखा बंध कहेवा, अने सास्वादने असन्नि अने सन्निनी पेरे बंध कहेवो तथा अणाहारीने विषे कार्मणकाय योगीनो भांगो कहेवो ॥ २४ ॥

सिद्धांतमां केवलीने भाव मन नथी ते माटे नोसन्नी अने नोअसन्नी कह्या छे ते अभिप्राये तो सन्नीने बार गुणठाणा घटे पण अहीं केवलीने द्रव्य मन छे ते विवक्षाये सन्नी कह्या, ते माटे चौद गुणठाणां कह्यां.

यतःद्रव्य चित्तंविनाभावं चित्तं न स्याद संज्ञिवत्।
विनापिभाव चित्तंतु द्रव्यं केवलिनो भवेत् ॥१॥ इति वचनात्॥

अभव्य अने असंज्ञी ओघे अने मिथ्यात्वे ११७ बांधे, अभव्यने तो एकज गुणठाणुं होय, सास्वादने असंज्ञी ते संज्ञीनीपेरे १०१, बांधे. असंज्ञीने बेज गुणठाणां होय,

कार्मण काययोगीज अणाहारी होय ते माटे गुणठाणुं १-२-४-१३ ए चार होय त्यां ओघे ११२, मिथ्यात्वे १०१, सास्वादने ९४, अविरतिये ७५, सयोगीए एक होय.

तिसु दुसु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंध सामित्तं॥
देविंदसूरिरइअं, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥ २५ ॥

तिसु-त्रण लेश्याये	चउ-चार	देविंदसूरि-देवेंद्रसूरिये
दुसु-बे लेश्याये	सग-सात	रइअं-रच्युं
सुक्काइ-शुक्ललेश्या	तेरत्ति-तेर	नेयं-जाणवा
गुणा-गुणठाणां	बंधसामित्तं-बंधस्वामित्व	कम्मथ्थयं-कर्मस्तव
		सोउं-ते

अर्थः-(कृष्ण, नील, कापोत) त्रण लेश्याने विषे चार गुणठाणां होय (तेजो अने पद्म ए) बे लेश्याने विषे सात गुणठाणां होय, शुक्ल लेश्याने विषे तेर गुणठाणां होय (अयोगीतो अलेशी होय) एवी रीते ए बंध स्वामित्वपणुं श्री तपागछाधिराज भट्टारक श्री जगच्चंद्रसूरि शिष्य पट्टप्रभाकर श्री देवेंद्रसुरिये रच्युं, जाणवा निमित्ते बंधस्वामित्वने कर्मस्तव सांभळीने चित्तमां धारवो ॥ २५ ॥

इति बंध स्वामित्व नामे त्रीजो कर्मग्रंथ संपूर्ण थयो.

बासठ मार्गणाद्वारे दरेक गुणठाणे केटली प्रकृतिनो बंध होय तेनो यंत्र.

मार्गणा	केटलां गुणठाणां होय	ओघे बंध	मिथ्यात्व	सास्वादन	मिश्र	अविरति	देशविरति.	प्रमत्त.	अप्रमत्त	निवृत्ति.	अनिवृत्ति	सूक्ष्म संपराय.	उपशांत मोह	क्षीण मोह	सयोगी केवली	अयोगी केवली.
			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
नरकगति	४	१०१	१००	९६	७०	७२										
रत्नप्रभादि ३	४	१०१	१००	९६	७०	७२										
पंकप्रभादि ३	४	१००	१००	९६	७०	७२										
तमतमाप्रभा	४	९९	९६	९१	७०	७०										
तिर्यंच पर्याप्त	५	११७	११७	१०१	६९	७०	६६									
तिर्यंच अपर्याप्त	२	१०९	१०९													
मनुष्य पर्याप्त	१४	१२०	११७	१०१	६९	७१	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
मनुष्य अपर्याप्त	१	१०९	१००													
देवगति	४	१०४	१०३	९६	७०	७२										
भवन, व्यंतर, ज्योतिष	४	१०३	१०३	९६	७०	७२										
सौधर्म, ईशान	४	१०४	१०३	९६	७०	७२										

सनत्कुमारादि ६	४	१०१	१००	९६	७०	७२										
अनंतादि ४, नवग्रैवेयक	४	९७	९६	९२	७०	७२										
अनुत्तर विमान	१	७२				७२										
एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्रि,	२	१०९	१०९	९६ / ५४												
पंचेंद्रिय	१४	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय	२	१०९	१०९	९६ / ५४												
तेउकाय, वाउकाय	१	१०५	१०५													
त्रसकाय	१४	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
४मनोयोग, ४वचनयोग	१३	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
औदारिक काययोग	१३	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
औदारिकमिश्र काययोग	४	११४	१०९	९४		७५										
वैक्रिय काययोग	४	१०४	१०३	९६	७०	७२										
वैक्रिय मिश्र काययोग	३	१०२	१०१	९४		७१										
आहारक काययोग	१	६३						६३								
आहारकमिश्र काययोग	१	६३						६३								
कार्मण काययोग	४	११२	१०७	९४		७५										
स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद.	९	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२					

अनतानुवधी	२	११७	११७	१०१												
अप्रत्याख्यानीय	४	११८	११७	१०१	७६	७७										
प्रत्याख्यानीय	५	११८	११७	१०१	७४	७७	६७									
सज्वलन ३	९	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२					
संज्वलन लोभ	१०	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७				
मति, श्रुत, अवधिज्ञानी	९	७९				७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१		
मनपर्यवज्ञानी	७	६५						६३	५९	५८	२२	१७	१	१		
केवलज्ञानी	२	१													१	
मति, श्रुत, विभगअज्ञान	३	११७	११७	१०१	७४											
सामायक,छेदोपस्थापनीय	४	६५						६३	५९	५८	२२					
परिहार विशुद्धि	२	६५						६३	५९							
सूक्ष्मसपराय	१	१७										१७				
यथाख्यात	४	१											१	१	१	
देशविरति	१	६७					६७									
असयत	४	११८	११७	१०१	७४	७७										
चक्षु, अचक्षुदर्शन	१२	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१		
अवधिदर्शन	९	७९				७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१		
केवलदर्शन	२	१													१	
कृष्ण,नील,कापोतलेश्या	४	११८	११७	१०१	७४	७७										
तेजोलेश्या,पद्मलेश्या	७	१११	१०८	१०१	७४	७७	६७	६३	५९							

शुक्ल लेश्या	१३	१०४	१०१	९७	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
भव्य	१४	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
अभव्य	१	११७	११७													
उपशमिक	८	७७				७५	६६	६२	५८	५८	२२	१७	१			
सास्वादन	१	१०१	१०१													
क्षायोपशमिक	४	७९				७७	६७	६३	५९							
क्षायक	११	७९				७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
मिश्र	१	७४			७४											
मिथ्यात्व	१	११७	११७													
संज्ञी	१४	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
असंज्ञी	२	११७	११७	१०१												
आहारी	१३	१२०	११७	१०१	७४	७७	६७	६३	५९	५८	२२	१७	१	१	१	
अणाहारी	५	११२	१०७	९४	७५											

॥ ॐ नमोसिद्धं ॥

अथ षडशीतिनामा चतुर्थ कर्मग्रंथ

नमिअ जिण जिअ मग्गण, गुणठाणु वओग जोग लेसाउ
बंधप्प बहू भावे, संखिज्जाइ किमवि वुच्छं ॥ १ ॥

नमिअ–नमस्कार करीने	उवओग–उपयोगद्वार	भाव–भाव (उपशमादिक पांच)
जिण–जिनेश्वरने	जोग–योग	संखिज्जाइ–सख्यातादि
जिअ–जीवस्थानक	लेसाउ–लेश्याद्वार	किमवि–कांइक
मग्गण–मार्गणाद्वार	बंध–बंध	वुच्छं–कहीश
गुणठाण–गुणस्थानक	अप्पबहु–अल्प बहुत्वद्वार	

अर्थ.–जीनेश्वरने नमस्कार करीने १ जीवस्थानक, २ गत्यादि मार्गणास्थानक, ३ गुणस्थानक, ४ उपयोगद्वार, ५ योगद्वार, ६ लेश्याद्वार, ७ बंधद्वार, ८ अल्पबहुत्वद्वार, ९ भावद्वार, १० सख्यातादि (संख्याता, असंख्याता, अनंता) नो विचार ए दश द्वार स्वल्पमात्र कहीश ॥ १ ॥

नमिय जिण वत्तव्वा, चउदस जिअ ठाणएसु गुणठाणा॥
जोगुवओगो लेसा, बंधोदओ दीरणा सत्ता ॥ २ ॥

वत्तव्वा–कहेवा	गुणठाण–गुणठाणां	बंध–बंध
चउदस–चउद	जोग–योग	उदओ–उदय
जीअठाणेसु–जीवस्थानने विषे	उवओगो–उपयोग	दीरणा–उदिरणा
	लेसा–लेश्या	सत्ता–सत्ता

अर्थ.–जिनेश्वरने नमस्कार करीने ए बोल कहेवा चौद जीवस्थानकने विषे एक गुणठाण, बीजा योग, त्रीजा उपयोग,

चोथी लेश्या, पांचमो मूळ प्रकृतिनो बंध, छट्ठो उदय, सातमी उदिरणा, आठमी सत्ता ए आठ प्रतिद्वार कहीशुं ॥ २ ॥

तह मूल चउद मग्गण, ठाणेसु बासठि उत्तरेसु च ॥
जिअ गुणजोगु वओगा, लेसप्पबहुं च छठाणा ॥३॥

तह—तेमज	बासठि—बासठ	जोग—योग
मूल—मूल	उत्तरेसु—उत्तर (मार्गणा स्थान)ने विषे	उवओगा—उपयोग
चउद—चौद		लेस—लेश्या
मग्गण—मार्गणा	जीअ—जीव भेद	अप्पबहुं—अल्पबहुत्व
ठाणेसु—स्थानकने विषे	गुण—गुणठाणा	छट्ठाणा—ए छ स्थानक

अर्थः—तेमज वळी मूळ चौद मार्गणास्थानने विषे अने बासठ उत्तर मार्गणास्थानने विषे एक जीवभेद, बीजा गुणठाणां, त्रीजा योग, चोथा उपयोग, पांचमी लेश्या, छठुं अल्पबहुत्व, ए छ स्थानक कहीशुं ॥ ३ ॥

चउदस गुणेसु जिअजो, गुवओग लेसाय बंधहेऊय ॥
बंधाइअ चउअप्पा, बहुंच तो भाव संखाई ॥ ४ ॥

चउदसगुणेसु—चौद गुण ठाणाने विषे	उवओग—उपयोग	अप्पा बहुंच—अल्प बहुत्व
	लेसाय—लेश्या	तो—ते पछी
जिअ—जीवना भेद	बंधहेऊय—बंध हेतु	भाव—भाव
जोग—योग	बंधाइयचउ—बंधादिक चार	संखाइ—संख्यातादि

अर्थः—वळी चौद गुणठाणांने विषे, एक जीवना भेद, बीजा योग, त्रीजा उपयोग, चोथी लेश्या, पांचमा बंध हेतु, छठा बंध, सातमा उदय, आठमी उदिरणा, नवमी सत्ता, दशमुं एनुं अल्पबहुत्व, त्यार पछी अगियारमुं भाव. अने बारमुं संख्यातादिकनो विचार कहीशुं. ए त्रण गाथाए छवीस द्वार कह्यां ते अनुक्रमे कहेशे ॥ ४ ॥

इह सुहुम बायरेगिं, दि बि ति चउ असन्नि सन्नि पंचिंदी॥
अपजत्ता पजत्ता, कम्मेण चउदस जिअठाणा ॥ ५ ॥

इह–आ	ति–तेइंद्रि	पजत्ता–पर्याप्ता
सुहुम–सुक्ष्म	चउ–चौरिंद्रि	कम्मेण–अनुक्रमे
बायर–बादर	असन्नि–असन्नि पचेंद्रि	चउदस–चउद
एगिंदि–एकेंद्रि	सन्नि–सन्निपचेंद्रि	जिअट्ठाणा जीवनां स्थानक
बि–बेइंद्रि	अपज्जता–अपर्याप्ता	

अर्थः–अहींआं (आवी रीते सर्व ससारी जीवना चौद भेद थाय) सुक्ष्म एकेंद्रि अने बादर एकेंद्रि ए बे, तथा बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरिंद्रि ए पांच तथा असन्नि पचेंद्रि अने सन्नि पचेंद्रि ए सात, ए सात पर्याप्ता तथा सात अपर्याप्ता ए अनुक्रमे जीवना चौद स्थान जाणवां ॥ ५ ॥

बायर असन्नि विगले, अपजि पढमबिअ सन्नि अपजत्ते ॥
अजय जुअ सन्नि पज्जे, सवगुणा मिछ सेसेसु ॥ ६ ॥

बायर–बादर एकेंद्रि	पढमबिअ–पेहेलु बीजु	सन्निपज्जे–सन्नि पर्याप्ताने
असन्नि–असन्निपचेंद्रि	सन्निअपजते सन्निपर्याप्ताने	सव्वगुणा–सर्वगुणस्थानक
विगले–विगलेंद्रि	अजयजुअ–अविरति युक्त	मिच्छ–मिथ्यात्व गुणठाणु
अपजि–अपर्याप्ता	त्रण गुणठाणां	सेसेसु–शेष जीवोने

अर्थ –(हवे चौद जीवस्थानकने विषे गुणठाणां कहेछे) बादर एकेंद्रि अपर्याप्ता, असन्नि पचेंद्रि अपर्याप्ता अने त्रण विकलेंद्रि अपर्याप्ता ए पाचने विषे पेहेलु अने बीजु गुणठाणु होय* तथा सन्नि पचेंद्रि अपर्याप्ताने विषे अविरति गुणठाणा

---

* अहींआं ए सर्व जीव सदाय मिथ्यात्वी तो छेज पण कोइकने परभवथी सम्यक्त्ववमीने आवतां घटालाला न्याये सम्यक्त्वनो लेश आस्वादतां उत्पत्ति

सहित एटले पेहेलुं, बीजुं, अने चोथुं ए त्रण गुणठाणां होय; (सम्यक्त्व सहित जीवने उपजतां चोथुं होय पण अपर्याप्ताने मिश्र गुणठाणुं न होय, मिश्र थको काळ न करे ते माटे ("न सम्ममिछो कुणइकालं ॥ इति वचनात् ॥) अने सन्नि पंचेंद्रि पर्याप्ताने विषे सर्व चौदे गुणठाणां होय, (तेने सर्व शुभाशुभ परिणाम होय ते माटे) बाकीना (सूक्ष्म अपर्याप्ता, सूक्ष्मपर्याप्ता, बादर एकेंद्रि पर्याप्ता, बेइंद्रि तेइंद्रि चौरींद्रि ए त्रण पर्याप्ता असन्नि पंचेंद्रि पर्याप्ता) सातने एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं होय।६।

अपजत्त छक्कि कम्मुर, लमीस जोगा अपज्ज सन्नीसु ॥
ते सविउव्व मीसएसु तणु पज्जेसु उरल मन्ने ॥ ७ ॥

अपजत्त—अपर्याप्ता	अपज्जसन्नीसु—अपर्याप्ता सन्निने विषे	एसु—एमां वळी
छक्कि—छ जीवने विषे	ते—ते बे योगने	तणु पज्जेसु—शरीर पर्याप्ता ने विषे
कम्मुरल—औदारिककार्मण	सविउव्वमीस—वैक्रिय मिश्रे सहित त्रण योग	उरल—औदारिक योग
मीस—औदारिक मिश्र		मन्ने—मानेछे
जोगा—योग		

अर्थः—(सूक्ष्म एकेंद्री, बादर एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्री, असंन्नि पंचेंद्री) ए छ अपर्याप्ता जीव भेदने विषे

अपर्याप्ता अवस्थाये जीवने सास्वादनपणुं पामीये पण पछी न होय. इहां ए करण अपर्याप्तो जाणवो पण लब्धि अपर्याप्तो नही लब्धि अपर्याप्ताने तो सास्वादन होयज नहीं. अपर्याप्त सूक्ष्म एकेंद्रिमां पण सास्वादन न होय, सास्वादन तो लगारेक शुभ परिणाम रुप छे अने सूक्ष्ममांतो अति संक्लिष्ट परिणामी उपजे, ते माटे. इहां कोइक कहे के एकेंद्रियने सास्वादन नथी कह्युं एकेंद्रिय सर्व अज्ञानीज कह्या छे, अने विकलेंद्रियमां सास्वादन कह्युं छे. ते छतां ज्ञानी कह्या छे तो इहां एकेंद्रि अपर्याप्ताने सास्वादन केम कहो छो ? एनो उत्तर आगळ "सासण भावेनाणं" ए गाथाये ग्रंथकारज केहेशे त्यां जाणवो. (जीवविजयजी कृत टबामांथी)

औदारिक कार्मण अने औदारिक मिश्र ए वे योग होय (अंतराल गतिये अने उत्पत्तिने पेहेले समये कार्मण योग होय अने पछी शरीर पर्याप्ति पूरी थया पेहेला औदारिक मिश्र योग होय) सन्नि पंचेंद्री अपर्याप्ताने विषे पूर्वोक्त वे योग ने वैक्रिय मिश्र सहित करता त्रण योग होय (त्या मनुष्य तिर्यच अपर्याप्ताने कार्मण औदारिक मिश्र ए वे होय अने देवता नारकीने कार्मण वैक्रिय मिश्र ए वे होय वेने मळीने त्रण होय ए साते अपर्याप्ताने), शरीर अपर्याप्तिये पर्याप्ताने औदारिकयोग पण होय एम अनेरा आचार्य कहेछे (ते मते छ अपर्याप्ताने त्रण योग होय अने सन्नि अपर्याप्ताने विषे चार योग होय ग्रथकारे ए मतांतर कह्यु पण शरीर पर्याप्ताने मिश्रपणु टळ्यु त्यारे औदारिक योग होयज, त्यारे ए मत खरो जणायछे)॥७॥

हवे पदर योग कहेछे–जीवने परिस्पदनादिक वीर्य ते योग कहीए

१ सत्य मनोयोग–अस्तिजीव इत्यादि तथा सर्वने हित चिंतन ते.

२ मृषा मनोयोग–नास्तिजीव इत्यादि तथा परने विप्रतारण बुद्धि ते

३ सत्यामृषा मनोयोग–ते बये मिश्र एटले काइक सत्य अने काइक मृषा ते

४ असत्यामृषा मनोयोग–सत्य पण नहीं असत्य पण नहीं विचारणा रुप ते

५ सत्य वचनयोग, ६ मृषा वचनयोग, ७ सत्यामृषा वचनयोग, ८ असत्यामृषा वचनयोग ए चार वचनयोग मनोयोगनी पेरे जाणवा एव ८

९ औदारिक काययोग–मनुष्य तिर्यचने उपजतां प्रथम समये होय ते

१० औदारिक मिश्र–तेज मनुष्य तिर्यचने उपजतां एक समय पछी शरीर पर्याप्ति पूरी करे त्यां लगी कार्मण साथे मिश्रपणु ते औदारिक मिश्र तथा कवली समुद्घाते वीजे छठ्ठे सातमे समये औदारिक मिश्रकाययोग होय

११ वैक्रिय काययोग–देवता नारकीने तथा लब्धिवत मनुष्य, पचेंद्री तिर्यच अने वायुने होय.

१२ वैक्रियमिश्र काययोग–तेहीज देव नारकीने उपजतां कार्मण साथे वैक्रिय मिश्र होय तथा मनुष्य तिर्यंचने वैक्रियारंभ काळे अने छांडवाने काळे औदारिक साथे वैक्रिय मिश्र काययोग.

१३ आहारक काययोग–चौद पूरव धारीने आहारक शरीर काययोग होय.

१४ आहारक मिश्रकाययोग–तेने प्रारंभ काळे अने छांडवाने काळे औदारिक साथे आहारक मिश्रकाययोग होय.

१५ कार्मण काययोग–अष्ट कर्मनो जे विकार ते कार्मणकाययोग, ते जीवने अंतराळ गतिये अने उपजवाने पेहेले समये तथा केवळी समुद्घातने त्रीजे चोथे पांचमे समये एनुं प्रयोजन ते.

सव्वे सन्नि पजत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु ॥
बायरि सविउव्वि दुगं, पजसन्निसु बार उवउगा ॥ ८ ॥

सव्वे–सर्वे
सन्नि–संज्ञी
पजत्ते–पर्याप्ता
सुहुमे–सूक्ष्म (एकेंदिने)
ऊरलं–औदारिक
सभासु–भाषा सहित
तं–ते
चउसु–चार (विगलत्रिक अने असन्नि पंचेंद्रि)
बायरि–बादर (एकेंद्रि पर्याप्ताने)
सविउव्विदुगं–वैक्रियद्रिक साथे
पज्जसन्निसु–पर्याप्तासन्निने
बार उवओगा–बार उपयोग

अर्थः–सन्नि पचेंद्री पर्याप्ताने विषे सर्व पंदर योग होय, [औदारिकमिश्र अने कार्मण ए बेतो केवली समुद्घाते होय अने वैक्रिय मिश्र मनुष्य तिर्यंचने उत्तर वैक्रिय करतां होय, अने शेष बार योगतो यथायोग्ये होयज) सूक्ष्म एकेंद्रि पर्याप्ताने एकज औदारिक काय योग होय, विगलेंद्री अने असन्नि पंचेंद्रि ए चार पर्याप्ताने औदारिक योग अने भाषा सहित एटले सत्यामृषावचनयोग ए बे योग होय, बादर एकेंद्रि पर्याप्ताने विषे औदारिक साथे वैक्रिय अने वैक्रिय मिश्र सहित करतां त्रण योग होय, वायुने वैक्रियद्विक होय, (हवे

चौद जीवस्थानने विषे उपयोग कहे छे जीव लक्षण रूप अ-वबोध ते उपयोग कहीए ते पाच ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चार दर्शन एम बार प्रकारेछे) पर्याप्ता संज्ञी पचेंद्रियने विषे ए बारे उपयोग होय (अनुक्रमे होय पण समकाळे न होय "जुगव-दोनह्निउवउंगा इति वचनात्") ॥ ८ ॥

पज्ञ चउरिंदि असन्निसु, छुदंस दुअनाण दससु चक्खुविणा
सन्नि अपज्जे मणना, ण चक्खुकेवल छुग विहूणा ॥ ए ॥

पज्ञचउरिंदि–पर्याप्ता चौरिंद्री
असन्निसु–असन्नि पचेंद्रि (पर्याप्ता)
दु दस–बे दर्शन
दु अनाण–बे अज्ञान
दससु–दशने विषे
चक्खुविणा–चक्षु दर्शन विना
सन्नि अपज्जे–सज्ञी अपर्याप्ताने
मणनाण–मॅन पर्यवज्ञान '
चक्खु–चक्षु दर्शन
केवलदुग–केवळद्विक
विहूणा–विना

अर्थ.–चउरिंद्री पर्याप्ता अने असन्नि पंचेंद्री अपर्याप्ता ने चक्षु अचक्षु बे दर्शन तथा मतिश्रुत ए बे अज्ञान मळी चार उपयोग होय, तथा बाकीना दसने विषे (चार एकेंद्रि, बे बे इंद्री, बे तेइंद्रि, चउरिंद्री अपर्याप्ता, अने असन्नि पचेंद्री अ-पर्याप्ताने विषे) चक्षु दर्शन विना (अचक्षु दर्शन, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान) ए त्रण उपयोग होय, सन्नि पंचेंद्रि अपर्याप्ताने एक मन पर्यवज्ञान बीजुं चक्षु दर्शन त्रीजु केवळज्ञान चोथुं केवळदर्शन ए चार विना शेष आठ उपयोग होय ॥ ए ॥

सन्नि दुगि छ लेस अप, ज्ञ बायरे पढम चउ ति सेसेसु ॥
सतछ बंधुदीरण, संतुदया अठ तेरससु ॥ १० ॥

सन्नि दुगि–बे सन्निने विषे	तिसेसेसु–बाकीनाने विषे	दीरणा
छ लेस–छ लेश्या	त्रण	संतु दया–सत्ता तथा उदय
अपज्ज–अपर्याप्ता	सत्तट्ठ–सात तथा आठ	अट्ठ–आठ कर्मनो
बायरे–बादर एकेंद्रि	बंधुदीरण–बंध तथा उ-	तेरससु–तेरने विषे
पढमचउ–प्रथमनी चार		

अर्थः–(हवे चौद जीव स्थानके लेश्या कहेछे) सन्नि पंचेंद्रि पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बेने विषे छ लेश्या होय, अपर्याप्ता बादर एकेंद्रिने विषे पेहेली चार लेश्या होय. (कृष्ण नील अने कापोत ए त्रणतो सर्वने होयज, पण कोइक तेजो लेश्यावंत देवता मरीने पृथ्वी, अप तथा वनस्पति कायमां उपजे तेने अपर्याप्तपणे तेजो लेश्या होय ते माटे चार लेश्या कही) शेष अगिआर जीवस्थानके कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्या होय. हवे चौद जीव स्थानके मूळ प्रकृतिनो बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ता कहेछे, संज्ञी पर्याप्तो वर्जीने शेष तेर जीव स्थानकने विषे सात अथवा आठ प्रकृतिनो बंध अने उदीरणा होय तथा तेरे जीव स्थानकने विषे आठे कर्म सत्ताये अने उदये होय–ते केवी रीते?

आयुबंध काळे आठे कर्मनो बंध होय अने ते आयु न बांधतो होय त्यारे सातनो बंध, एक भवे आयुबंध एकजवार होय अने सात कर्मतो जीव सदाये समये समये बांधे छे. तथा ज्यारे भोगवता भवनुं आयु एक आवलि बाकी होय त्यारे ते आयुनी उदीरणा न होय, त्यारे सातनी उदीरणा होय अन्यथा आठनी होय. तथा उपशांत मोह लगे आठे कर्मनी सत्ता छे अने सूक्ष्म संपराय लगे आठनो उदय छे--अने ए तेर जीव स्थानकने विषे तो पेहेलुं बीजुं अने चोथुं गुणठाणुं पामीये।२०।

सत्तठ छे ग बंधा, संतु दया सत्त अठ चत्तारि ॥
सत्तठ छ पंचदुगं, उदीरणा सन्नि पज्जत्ते ॥ ११ ॥

सत्तठ–सात आठ	सत–सत्ता	पचदुग–पाच अने बे
छेग–छ तथा एक	उदया–उदय	उदीरणा–उदीरणा
बंधा–बंध	सत्तठ छ–सात, आठ, छ	सन्नि पज्जत्ते–सन्नि पर्याप्ता

अर्थ.–सातनो, आठनो, छनो तथा एकनो ए चारबंध संज्ञि पंचेंद्रि पर्याप्ताने होय अने सज्ञी पचेन्द्री पर्याप्ताने सत्ता अने उदय आश्रीने सातनु आठनु अने चारनु ए त्रणस्थानक होय, तथा सन्निपचेंद्रि पर्याप्ताने उदीरणा स्थानक सात, आठ, छ, पाच अने बे ए पाच होय ॥ ११ ॥

१ तेमां आयु वर्जीने सातना बंध ते जघन्यथी अंतर्मुहूर्तलगे उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम छ मासे ऊणा, ते वळी पूर्व कोडीने त्रीजे भागे अधिक एटलो रहे आउखाने बंध काळे आठनो बंध. ते जघन्यथी अने उत्कृष्ट पण अंतर्मुहूर्त रहे आउखानो बंधकाळ अंतर्मुहूर्तज होय ते माटे तथा आयु अने मोहनीय वर्जीने छ बांधे, सूक्ष्म संपराये ते जघन्य एक समय रहे, कोइक जीव त्यां एक समय रहीने अनुत्तर विमाने जाय त्यां अविरति गुणठाणे अवश्य सातनो बंधक थाय, ते माटे छनो बंधक जघन्य एक समय रहे उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त रहे सूक्ष्म संपरायनु एटलुज मानछे, पछी एकनो बंधक थाय तथा सातनो बंधक थाय तथा ते छ मांहेथी पाच प्रकृतिना बंधने व्यवछेदे एक शाता वेदनीयनो बंधक होय, जघन्यथी एक समय, उपशम श्रेणीये उत्कृष्ट पणे देशे उणी पूर्वकोडी लगे रहे, तेरमे गुणठाणे ए जीव पेहेलाथी सातमा गुणठाणा लगे सात तथा आठनो बंधक, त्रीजे आठमे नवमे सातनोज बंधक, दशमे छनो बंधक, अगीआरमे बारमे तेरमे एकनो बंधक होय.

२ त्यां आठनी सत्ता अभव्यने अनादि अनंत, भव्यने आश्रयी अनादि सांत होय तथा मोहने क्षये क्षीणमोह गुणठाणे सातनी सत्ता ते जघन्य अने उत्कृष्ट पण अंतर्मुहूर्त होय, घातिकर्म चारने क्षये चारनी सत्ता सयोगी गुणठाणे ते जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्टपणे नव वरसे उणी पूर्वकोडी होय, तथा आठनो उदय अभव्य आश्रीने अनादि अनंत, भव्य आश्रीने अनादि सांत होय उपशांत मोहथी पडेला भव्य आश्रयीने सादि सांत, ते उदय जघन्यथी अंतर्मुहूर्त उपशम

श्रेणी थकी पडीने अंतर्मुहूर्ते फरी श्रेणी पडिवज्जे तेने उत्कृष्टो देशे ऊणो अर्ध पुद्‌गळ परावर्त्त एटले काळे फरी श्रेणी करे. मोहनीय वर्जीने सातनो उदय ते उपशांत मोहे तथा क्षीणमोहे पामीये, त्यां जघन्य एक समय उपशांत मोहे सातनो उदयी थइने भवक्षये पडे ते पाछो आठनो उदयी थाय, उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त्त, ते उपशांत मोह क्षीणमोहनुं मान अंतर्मुहूर्त्तनुं छे पछी आठनो उदयी थाय, अथवा चारनो उदयी थाय चार घाति कर्मने क्षये चारनो उदयी तरमे चौदमे गुणठाणे जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट नव वरसे ऊणी पूर्वकोडि होय, एनो विशेष— मिथ्यात्वथी मांडीने उपशांत मोह लगे आठनी सत्ता क्षीणमोहे सातनी सत्ता, सयोगी अयोगीए चारनी सत्ता तथा मिथ्यात्वथी सूक्ष्म संपराय लगे आठनो उदय, उपशांत मोह तथा क्षीणमोहे सातनो उदय, सयोगी अयोगीए चारनो उदय होय.

३ त्यां ज्यारे भोगवता भवनुं आयु एक आवलिका शेष होय त्यारे आयु कर्मनी उदीरणा न होय, एटले सातनी उदीरणा होय. ते विना आठनी उदीरणा होय त्यां मिथ्यात्व थकी प्रमत्त लगे सात अथवा आठनी उदीरणा, अने मिश्रेतो सदैव आठनीज होय "मरणाऽभावात्" तथा अप्रमत्त थकी सूक्ष्म संपरायनी एक आवलिका थाकती होय त्यां लगे वेदनीय आयु वर्जीने छनी उदीरणा ते आवलिका थाकते मोहनीयनी उदीरणा न होय, आवलिका प्रविष्ट माटे तीहांथी यावत् बारमानी आवलिका थाकती होय त्यां लगे पांचनी उदीरणा, ते क्षीणमोहनी आवलिका थाकते ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रणनी आवलिका प्रविष्ट थया माटे उदीरणा नहोय. त्यारे नाम अने गोत्र ए बेनी उदीरणा होय एम सयोगीये पण बेनी उदीरणा अयोगीए अनुदीरक होय, यद्यपि अयोगीए भवोपग्राही चार कर्मनो उदय छे, तो पण योगने अभावे उदीरणा न होय उदीरणा तो योगने वश छे ते माटे ॥ (जीवविजयजी कृत भाषांतरमांथी)

गइ इंदि एअ काए, जोए वेए कसाय नाणेसु ॥
संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १९ ॥

गइ—गति (चार)	वेए—वेद (त्रण)	लेसा लेश्या (छ)
इंदि—इंद्रि (पांच)	कसाय—कषाय (चार)	भव—भव्य (बे)
एअ—एवं (नव)	नाणेसु—ज्ञान (आठ)	सम्मे—सम्यक्त (छ)
काए—काय (छ)	संजम—संयम (सात)	सन्नि—सन्नि (बे)
जोए—योग (त्रण)	दंसण—दर्शन (चार)	आहारे—आहार (बे)

अर्थः-(हवे चौद मार्गणास्थान कहेछे) १ गति चार, २ ईंद्रिपांच, ३ काय ६, ४ जोग त्रण, ५ वेद त्रण, ६ कसाय चार, ७ ज्ञान आठ, ८ संजम सात प्रकारे, ९ दर्शन चार, १० लेश्या ६, ११ भव्य बे, १२ सम्यक्त्व ६, १३ सन्नि बे, १४ आहार बे, एम चौद भेद मूळ तथा उत्तर बासठ भेद जाणवा ॥ १२ ॥

हवे चौद मूल मार्गणा द्वारनां उत्तर बासठ मार्गणाद्वार कहेछे

सुरनर तिरि निरयगइ, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि छक्काया।
भूजल जलणा ऽनिलवण, तसाय मण वयण तणु जोगा॥१३

सुर-देवगति
नर-मनुष्यगति
तिरि-तिर्यंचगति
निरय-नरकगति
गइ-ए चारगति मार्गणा
इग-एकेंद्रि
बिअ-बेइंद्रि
तिअ-तेइंद्रि
चउ-चउरिंदि
पणिंदि-पचेंद्रि (ए पांच इंद्रिय मार्गणा)
छकाया-छकाय मार्गणा
भू-पृथ्वीकाय
जल-अपकाय
जलण-तेउकाय
अनिल-वाउकाय
वण-वनस्पतिकाय
तसाय-त्रसकाय
मण-मनोयोग
वयण-वचनयोग
तणु-काययोग
जोगा-ए त्रणयोगमार्गणा

अर्थ -देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति अने नरकगति ए चार गतिमार्गणा, एकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरिंद्रि अने पचेंद्रि ए पाचइंद्रियमार्गणा, तथा पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय ए ६ कायमार्गणा, अने मनयोग, वचनयोग अनेकाययोग ए त्रण योगमार्गणा १३

वेअ नरि त्थि नपुसग, कसाय कोह मय माय लोभत्ति॥
मइ सुअऽवहि मण केवल, विभंग मइ सुअनाण सागारा १४

वेअ–वेदमार्गणा त्रण	माय–माया	विभंग–विभंगज्ञान
नर–पुरुपवेद	लोभित्ति–लोभ	मइ–मति (अज्ञान)
तिथ–स्त्रीवेद	मइ–मतिज्ञान	सुअ–श्रुत (अज्ञान)
नपुंसग–नपुंपकवेद	सुअ–श्रुतज्ञान	नाण–ज्ञान (ने)
कसाय-चार कपायमार्गण।	अवहि–अवधिज्ञान	सागारा–साकारोपयोग जाणवुं
कोह–क्रोध	मण–मनःपर्यवज्ञान	
मय–मान	केवल–केवलज्ञान	

अर्थः---वेदमार्गणा त्रण भेदे पुरुपवेद, स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद तथा कषायमार्गणा चार प्रकारे क्रोध, मान, माया, लोभ; तथा मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवळज्ञान, विभंगज्ञान, मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ए आठ ज्ञान मार्गणा जाणवी, तेमां प्रथमनां पांच सम्यक्त्व आश्रीने छे अने छेल्लां त्रण मिथ्यात्व आश्रीने छे ॥ १४ ॥

सामाइअ छेअ परिहा, र सुहुम अहखाय देस जय अजय॥
चक्खु अचक्खू ओही, केवलदंसण अणागारा ॥ १५ ॥

सामाइअ-सामायक चारित्र	देसजय–देशविरति	ओही–अवधिदर्शन
छेअ–छेदोपस्थापनीय	अजया–अविरति(ए सात संयम मार्गणा)	केवळ–केवळदर्शन (र्गणा)
परिहार–परिहारविशुद्धि	चक्खु–चक्षुदर्शन	दंसण–ए चारदर्शन (मा-
सुहुम–सूक्ष्म संपराय	अचक्खु–अचक्षुदर्शन	अणागारा–ते अनाकारोपयोग जाणवो
अहखाय–यथाख्यात		

अर्थः–सामायक चारित्र, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशविरति, अने अविरति ए सात संयम मार्गणा छे, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन अने केवळदर्शन ए चार दर्शन मार्गणा जाणवी–दर्शनते अनाकारोपयोग जाणवो ॥ १५ ॥

सामायक चारित्र–"सम" केहेतां ज्ञान दर्शन अने चारित्रनो ज्य। "आय" कहेतां लाभ होय ते माटे सामायक चारित्र सर्व सावद्य विरतिरुप प्रथम जाणवु.

छेदोपस्थापनीय–जे पूर्व पर्याय छेदीने बीजा विशुद्ध पर्यायनु उपस्थापन करवु, ते वे प्रकारे छे (१) सातिचार ते, श्री वीर तीर्थंकरना साधुने दूषण लागे थके जे व्रत पर्याय छेदे, एटले व्रत राखवा निमित्ते सदूषण व्रत पर्याय छेदी उठामणी करीये (२) निरतिचार ते श्री पार्श्वनाथना शिष्य श्री वीर भगवान पासे फरीथी व्रत उचरे, एटले तीर्थ थकी अन्य तीर्थे संक्रमण करे जेम पार्श्वनाथना साधु, केशी, गांगेय प्रमुख श्री वीरना शासनमां आवी पंच महाव्रत उचरी पूर्व पर्याय छेदी नवो पर्याय ग्रह्यो तेम

परिहार विशुद्धि–परिहार तपो विशेष त्यां साडानव पूर्वधर तो ओगणत्रीस वर्ष उपरांत वहे. तेने नवनो गच्छ होय ते म ये एक वाचनाचार्य अने चार साधु (परिहार) तपना करनार, तथा चार साधु तेमनु वैयावच करनार, ते छमासे तप पूरण करे ते वारे चार वेयावची साधु तप आदरे, अने तप करी रहेला चार तेमनु छमास सुधी वैयावच करे पछी वाचनाचार्य तप करे अने आठ साधु तेमनु वैयावच करे परिहार तपनी विगत–उष्णकाळे जघन्यथी चोथ, मध्यम छठ अने उत्कृष्ट अट्ठमनो तप करे शीतकाळे जघन्य छठ, मध्यम अट्ठम अने उत्कृष्ट दशम तप करे, वर्षाकाळे जघन्य अट्ठम, मध्यम दशम, अने उत्कृष्ट दुवालस तप करे, पारणे आयंबिल करे एम तप करी जिन कल्प पडिवजे तथा गच्छमां आवे–ते परिहार विशुद्धि चारित्र जाणवु

सूक्ष्म संपराय—ते दशमे गुणठाणे होय, त्यां कषायना सूक्ष्म खंड करे

यथाख्यात—छेला चार गुणठाणे श्री वीतरागनु निरतिचार चारित्र

देशविरति—निरपराध निरपेक्ष सकली त्रस जीवने नहणु

अविरति—एटले देशविरति तथा सर्व विरती वेमाथी एके चारित्र जेने नथी

किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हाय सुक्क भव्विअरा ॥
वेअग खइगुवसम मिच्छमीस सासाण सन्निअरे ॥१६॥

किण्हा–कृष्णलेश्या	तेऊ–तेजोलेश्या	भव्व–भव्य
नीला–नीललेश्या	पम्हाय–पद्मलेश्या	इअरा–अभव्य
काऊ–कापोतलेश्या	सुक्क–शुक्ललेश्या	वेअग–वेदक सम्यक्त्व

खइग-क्षायक सम्यक्त्व	मिच्छ-मिथ्यात्व सम्यक्त्व	म्यक्त्व
उवसम-औपशमिक स-म्यक्त्व	मीस-मिश्र सम्यक्त्व	सन्नि-सन्नि
	सासाण-सास्वादन स-	इअरे-असन्नि

अर्थः-लेश्यामार्गणा ७ प्रकारे छे. कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म अने शुक्ल. भव्यमार्गणा बे प्रकारे एक भव्य अने बीजी अभव्य तथा सम्यक्त्व मार्गणा ७ प्रकारे छे, वेदक, क्षायक, औपशमिक, मिथ्यात्व, मिश्र अने सास्वादन. तथा भव्य अने अभव्य एम बे प्रकारे भव्य मार्गणा, अने सन्नि तथा असन्नि एम बे प्रकारे संज्ञीमार्गणा जाणवी ॥ १६ ॥

लेश्या छ जंबुवृक्षना दृष्टांते जाणवी जेम कोइ छ पुरुष जांबु खावा गया त्यां एक जणे चिंतव्युं के जांबु वृक्ष थडमांथी छेदीए, ते कृष्ण लेश्यावंत बीजे कह्युं के शाखा छेदीए, ते नील लेश्यावंत, त्रीजे कह्युं के लघु शाखा छेदो ते कापोत लेश्यावंत. चोथे कह्युं के गुच्छ छेदो ए तेजो लेश्यावंत. पांचमे कह्युं के फल तोडी ल्यो ते पद्मलेश्यावंत. छठे कह्युं के नीचे पडेलां खाइए ते शुक्ल लेश्यावंत.

भव्यः-जे जीव कोइ वारे मुक्ति जवा योग होय ते, अने जे जीव कोइ काळे पण मुक्तिए न जाय ते अभव्य.

वेदक (क्षायोपशमिक)--नव तत्वनी श्रद्धाये करी जे सम्यक्त्व मोहनीयना प्रदेश वेदे एटले मिथ्यात्व मोहनीयनो रस सर्व घातिओ उदय आव्यो थको भोगवी क्षय कीधो, अने जेटलो उदय नथी आव्यो, ते उपशम्यो छे एना आंतरे जे आत्मानी तत्वरुचि ज्यां लगे जागे तेने पेहेलुं क्षायोपशम सम्यक्त्व कहीये.

क्षायक सम्यक्त्व--श्री जिनकाले प्रथम संघयणी मनुष्य क्षपक श्रेणी करतो अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ए चार कषाय तथा त्रण दर्शनमोहनीय खपावे ते वारे जे प्रथम कह्यो आत्मानो शुद्ध श्रद्धान भाव ते बीजुं क्षायक सम्यक्त्व, ते बद्धायु पामे तेनी अपेक्षाये तो चारे गति मध्ये पामीए

औपशमिक सम्यक्त्व---उपरनी साते प्रकृति रसथी तथा प्रदेशथी उपशमावे थके जे शुद्ध श्रद्धानभाव ते त्रीजुं औपशमिक सम्यक्त्व.

मिथ्यात्व--मिथ्यात्वने उदये जे विपरीतरुचि ते चोथुं मिथ्यात्व.
मिश्र--मिश्रने उदये जे मिश्ररुचि ते पाचमु मिश्र.
सास्वादन--ते सम्यक्त्व वमतो जे मिथ्यात्वे नथी पहोच्यो तेनी वच्चे जे शुद्ध रुचि ते छट्ठु सास्वादन.

आहारे अर भेआ, सुर निरय विभंग मइ सु ओहि दुगे॥
सम्मत्त तिगे पम्हा, सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १७ ॥

आहार–अहारक	मइ–मतिज्ञान	सुक्का–शुक्ल लेश्या
इअर–इतर (अणाहारक)	सु–श्रुतज्ञान	सन्नीसु–सन्निया
भेआ–भेद	ओहिदुगे–अवधिज्ञान अवधि दर्शन	सन्नि दुग–सन्निद्विक (सन्नि पचेंद्रि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता
सुर–देवगति	सम्मत्ततिगे सम्यक्त्व त्रिक	
निरय–नरकगति	पम्हा–पद्मलेश्या	
विभग–विभगज्ञान		

अर्थः–आहारक अने अणाहारक ए बे आहारक मार्गणाना भेद हवे बासठ मार्गणाये चौद जीव भेद कहे छे. देवगति, नरकगति, विभंगज्ञान, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन, एम सात. सम्यक्त्वनु त्रिक एम दश अने पद्मलेश्या, शुक्लेश्या अने, सन्नीआ ए तेर मार्गणाए सन्नी पंचेंद्रि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे भेद जीवना होय ॥ १७ ॥

अहींआं "कार्मण काययोगी विग्रहगति समापन्न" जीव तथा अयोगी केवली इत्यादि जीव अणाहारक जाणवा अने जे ओजाहार ते अपर्याप्ता अवस्थाये होय अने लोमाहार तथा प्रक्षेपाहार ए बे पर्याप्तावस्थाये होय एम त्रण प्रकारना क्षुधा उपशमावे ते आहारक जाणवा

देवगति तथा नरकगति ए बे मार्गणाने विषे पचेंद्रिय पर्याप्तो अने करण अपर्याप्तो लेवो केमके लब्धि अपर्याप्तो जीव देव अने नारकी नहोय माटे. त्रीजा विभगज्ञाने अपर्याप्त अवस्थाये विभगज्ञानी होय, ते अपेक्षाये लेवु तथा पंच सग्रह माहि विभगे एकज जीवभेद मात्र सन्निपर्याप्तानोज कह्यो छे ते असन्नि मां माहेथी आव्यो जे देवता अने नारकी तेने अपर्याप्तावस्थाये विभगज्ञान न-

होय, तेथी ते अपेक्षाये एकज भेद लीधो छे. ए विशेष छे.

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान ए त्रणज्ञान अने दर्शन मार्गणा मांहे एक अवधि दर्शन ए चार मार्गणाद्वारे सन्नि पंचेंद्रिय करण अपर्याप्तो जीव त्रण ज्ञान सहित सम्यक्दृष्टि अवतरे, ते अपेक्षाये अपर्याप्ता लीधा, तथा बीजा सन्निपर्याप्ता सम्यक्दृष्टि जीवने पण होय. एटले बे जीवभेद होय.

त्रण सम्यक्त्वे पण बे जीवभेद होय, त्यां बद्धायु सात प्रकृति मोहनी खपावी चार गति मांहे उपजे त्यां अपर्याप्ता अवस्थाये क्षायिक सम्यक्त्व होय. ते अपेक्षाये एक संज्ञी अपर्याप्ता लेवा तथा उपशम श्रेणीये उपशम सम्यक्दृष्टि पण मरण पामीने अनुत्तर वासी देवता थाय. ते अपेक्षाये बीजा संज्ञी अपर्याप्ता पण लेवा अहींआं कोइ एम कहेछे जे संज्ञी अपर्याप्ताने उपशम सम्यक्त्व केम होय? तेनो उत्तर जे अहींकरणअपर्याप्ता लेवा पण लब्धिअपर्याप्ता न लेवा.

वेदक सम्यक्त्वे, पद्मलेश्याये, शुक्ललेश्याये तथा संज्ञी मार्गणाये ए चार मार्गणाये तथा उपर जणावो ते नव, एम तेर मार्गणाये सन्निआना पर्याप्तो अने अपर्याप्तो ए बे भेद होय. त्यां अपर्याप्ता उपजती वेळाए करणथी लेवा, जे भणी लब्धि अपार्याप्ता तो तथाविध, विशुद्धिने अभावे ए तेर मार्गणाद्वारे न पामीए. ए तेर मार्गणाये जीवभेद कह्या अहीं वेदक अने क्षायोपशमिक सम्यक्त्व एकज छे. ए तेर मार्गणा कही.

तमसन्नि अपज्जजुअं, नरे सबायर अपज्ज तेउए ॥
थावर इगिंदि पढमा, चउबार असन्नि दुदु विगले ॥१८॥

तं-ते बे भेद	बायर अपज्ज-बादर	बार-प्रथमना बार भेद
असन्नि-असन्नी	अपर्याप्ता सहित	असन्नि-असंज्ञीमां होय
अपज्ज-लब्धि अपर्याप्ता	तेउए-तेजो लेश्यामां होय	दुदु-बे बे जीवभेद
जुअं-युक्त, सहित	थावर-स्थावर (पांच)	विगले-प्रत्येक विकलेंद्रि
नरे-मनुष्य गतिने विषे	इगिंदि-एकेंद्रि	मां होय
स-ते बे	पढमा चउ-पेहेली चार	

अर्थः-ते बे भेद असंज्ञी लब्धि अपर्याप्ता सहित. (एटले सन्नि पर्याप्तो, संन्निअपर्याप्तो अने असंज्ञीलब्धि अपर्याप्तो ए

त्रण भेद) मनुष्यगतिने विषे होय. अने ते बे भेद बादर अ- पर्याप्ता सहित तेजो लेश्याने विषे होय अने कायमार्गणामांथी त्रसकाय विना पाच स्थावरकाय अने इंद्रियमार्गणामाथी एकेंद्रि- यमार्गणा ए छने विषे प्रथमना चार भेद (सूक्ष्म एकेंद्रि पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए बे, तथा बादर एकेंद्रिय पर्याप्तो अने अपर्याप्तो ए बे मळी चार भेद)जीवोना होय तथा (सन्निपचेंद्रियपर्याप्ता अ- ने अपर्याप्ता विना)जीवना प्रथमना बार भेद असन्निमा होय अने बे बे जीवभेद प्रत्येक विकलेंद्रिमा होय (एटले बेइंद्रि मार्गणाये बेइंद्रिपर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए बे जीवभेद, तेइंद्रि मार्गणाये तेइंद्रि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, अने चौरिंद्रि मार्ग- णाये चौरिंद्रि पर्याप्ता अने अपर्याप्ता जीवभेद पामीये) ॥१८॥

दसचरिम तसे अजया,हारग तिरि तणु कसाय दु अनाणे।
पढम तिलेसा भविअर, अचक्खु नपु मिच्छि सव्वेवि॥१९॥

दस चरिम–दस छेल्ला	तिरि–तिर्यंचगति मा०	भविअर–भव्य तथा अ- भव्य मार्गणाये
तसे–त्रसकाय मार्गणाये	तणु–काययोग मार्गणाये	अचक्खु–अचक्षुदर्शनमा०
अजय–अविरति मार्गणाये	कसाय–कषाय मार्गणाये	नपु–नपुंसक वेदमा०
आहारक–आहारक मा- र्गणाये	दुअनाणे बे अज्ञान मार्ग- णाये	मिच्छि–मिथ्यात्वमा०
	पढम–प्रथमनी (	सव्वेवि–सर्व जीवभेद
	तिलेसा त्रणलेश्या मार्गणा	

अर्थ–जीवना दश छेल्ला भेद त्रसकायमार्गणाये पामीये तथा अविरतिमार्गणा, आहारकमा०, तिर्यंचगतिमा०, काययोग मा०, चार कषायमा०, बे अज्ञान मा०, प्रथमनी त्रण (कृष्ण, नील, कापोत) लेश्यामा०, भव्य तथा अभव्यमा०, अचक्षुद- र्शनमा०, नपुंसकवेदमा०, मिथ्यात्वमा०, ए अढार मार्गणाने विषे जीवना सर्व एटले चौदे भेद पामीये ॥ १९ ॥

चार गुणठाणां देवगति तथा नरकगतिये जाणवां (बाकीनां दश गुणठाणां भवप्रत्ययेज विरतिने अभावे तेमने न होय.) मनुष्यगति, संज्ञी, पंचेंद्रिय, भव्य अने त्रस ए पांच मार्गणाये चौदे गुणठाणां होय, तथा एकेंद्रिय विकलेंद्रिय, पृथ्वी, अप अने वनस्पति ए सात मार्गणाये पेहेलां बे गुणठाणां होय. अने गति त्रस (तेउकाय तथा वाउकाय) तथा अभव्यने विषे एक मिथ्यात्व गुणठाणुंज होय. ॥ २२ ॥

वेअ ति कसाय नव दस, लोभे चउ अजइ दुति अनाणतिगे
बारस अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चउ॥२३॥

वेअति—त्रणवेदे	चउ—चार	अचक्खु—अचक्षुदर्शनीय
कसाय—त्रणकषाये	अजइ—अविरति मार्गणाये	चक्खुसु—चक्षुदर्शनीय
नव—नव	दुति—बे तथा त्रण	पढमा—प्रथमनां
दस—दश	अनाण—अज्ञानत्रिके	अहखाइचरिम-यथाख्यात चारित्रे
लोभे—लोभ मार्गणाये	बारस—बार	चउ—चार

अर्थः—त्रणवेदे अने लोभ विना त्रण कषाये नव गुणठाणां होय अने लोभ मार्गणाये दश गुणठाणां होय. चार गुणठाणां अविरति मार्गणाये होय, बे तथा त्रण गुणठाणां अज्ञानत्रिके होय, तथा अचक्षुदर्शनीय अने चक्षुदर्शनीय जीवने प्रथमनां बार गुणठाणां होय. अने यथाख्यात चारित्रे छेल्लां चार गुणठाणां होय. एम बत्रीस मार्गणा थइ ॥ २३ ॥

नवमा गुणठाणा पर्यंत त्रण वेद अने त्रण कषायनो उदय छे, तेथी ए प्रकृतिना उदयवंत जीवने प्रथमनां नव गुणठाणां होय. अने दशमा गुणठाणा सुधी लोभनो उदय छे तेथी लोभी जीवने दश गुणठाणां होय.

मणनाणि सग जयाइ, समइअ छेअ चउ दुन्नि परिहारे ॥
केवल दुगि दोचरिमा, जयाइ नव मइसु ओहि दुगे ॥२४॥

मणनाणि–मनःपर्यवज्ञान	दुन्नि–बे	अजयाइ नव–अविरति आदि नव
सग–सात	परिहारे–परिहार विशुद्धि चारित्रे	मइसु–मतिज्ञान मार्गणाने विषे
जयाइ–प्रमत्तादि	केवलदुगि–केवलद्विक (केवलज्ञान तथा केवलदर्शन)	ओहिदुगे अवधिज्ञान अने अवधि दर्शनने विषे
समइअ–सामायक	दोचरिमा–बे छेल्ला	
छेअ–छेदोपस्थापनीय		
चउ–चार		

अर्थ –मन'पर्यवज्ञान मार्गणाये प्रमत्तादि सात गुणठाणा होय सामायक अने छेदोपस्थापनीय चारित्रे चार गुणठाणा होय परिहार विशुद्धि चारित्रे बे गुणठाणां होय, केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए मार्गणाए छेल्लां बे गुणठाणा होय तथा अविरति आदि नव गुणठाणा मतिज्ञान मार्गणाने विषे तथा अवधिज्ञान अने अवधिदर्शनने विषे जाणवा ॥ २४ ॥

चारित्रियाने अप्रमत्त गुणठाणे मन'पर्यवज्ञान उपजे ते वळी प्रमत्ते आवे ते अपेक्षाये प्रमत्त गुणठाणु पण फरसु अने ते पछीना गुणठाणांए ते साधु उपशम श्रेणी तथा क्षपक श्रेणी करे ते अपेक्षाये सात गुणठाणा लाभे

सामायक अने छेदोपस्थापनीय ए बे चारित्रवंत जीवने प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति अने अनिवृत्ति ए चार गुणठाणा लाभे एवे चारित्र क्षायोपशमिक भावे तथा उपशम श्रेणीये नवमे गुणठाणे औपशमिक चारित्र होय, तेने मते औपशमिक भावे तथा क्षपकश्रेणीये नवमे गुणठाणे क्षायिक भावे एम त्रण भावे होय.

परिहार विशुद्धि चारित्रे प्रमत्त अने अप्रमत्त ए बे गुणठाणां होय ए चारित्रे उपशमश्रेणी तथा क्षपकश्रेणी ए बेहु श्रेणी नहोय तेथी आगलां गुणठाणां ए चारित्रे नहोय, ए चारित्र क्षायोपशमिक भावे होय.

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छ तिगि देसे।
सुहुमे ससठाण तेर, सजोग आहार सुक्काए ॥ २५ ॥

अड–आठ गुणठाणां	इक्कार–अगियारगुणठाणां	स्थानके होय.
उवसमि–औपशमिके	मिच्छतिगि--मिथ्यात्वत्रिक	तेरस–तेर गुणठाणां
चउ–चार गुणठाणां	देसे–देश विरति	योग–त्रण योग मार्गणा
वेअगि-वेदकसम्यक्दृष्टीये	सुहुमे–सूक्ष्म संपराय	आहार–आहार मार्गणा
खइए–क्षायक समकिते	ससट्ठाण–पोतपोताने गुण-	सुक्काए–शुक्लेश्यामार्गणा

अर्थः–(चोथाथी अगिआरमा लगी.) आठ गुणठाणां उपशम सम्यक्त्वे होय, (चोथाथी आठमा लगी) चार गुणठाणां वेदक सम्यक् दृष्टिने होय, क्षायक सम्यकत्वे (चोथाथी चौदमालगी) अगीआर गुणठाणां होय. मिथ्यात्व, सास्वादन अने मिश्र ए त्रण तथा देशविरति अने सूक्ष्म संपराय ए पांच मार्गणा पोतपोताना गुणस्थानके होय, अने योगनी त्रण मार्गणा, तथा आहार मार्गणा अने शुक्लेश्या मार्गणा ए पांच मार्गणाये पेहेलां तेर गुणठाणां होय. ॥ २५ ॥

मनोयोग, वचनयोग, अनेकाययोग ए त्रण योगे सामान्य नये मिथ्यात्वीथी लेइ तेर गुणठाणां लाभे अने विशेष अपेक्षाये तो एक सत्य, बीजो असत्यामृषा ए बे मनोयोगे अने एज बे वचनयोगे तेर गुणठाणां होय. अने बीजा मनोयोगे तथा वचनयोगे जे चार योग थाय ते चार योगे बार गुणठाणां जाणवां. औदारिक मिश्र काययोगे. मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति अने सयोगी ए चार गुणठाणां जाणवां तथा वैक्रिय काययोगे पेहेलां सात गुणठाणां जाणवां. वैक्रिय मिश्रकाययोगे. मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति देशविरति, अने प्रमत्त ए पांच गुणठाणां जाणवां आहारक काययोगे प्रमत्त अने अप्रमत्त ए बे गुणठाणां जाणवा. आहारक मिश्रकाययोगे एक प्रमत्त गुणठाणुं जाणवुं तथा कार्मणयोगे एक मिथ्यात्व, बीजुं सास्वादन, त्रीजुं अविरति चोथुं सयोगी ए चार गुणठाणां होय.

बासठ मार्गणाद्वारे चौद जीवभेदनो यंत्र.

			संज्ञिपंचेंद्रिपर्याप्ता	संज्ञिपंचेंद्रिअपर्या०	असंज्ञिपंचेंद्रिपर्या०	असंज्ञिपंचेंद्रि अप०	चौरिंद्रि पर्याप्ता	चौरिंद्रि अपर्याप्ता	तेइंद्रि पर्याप्ता	तेइंद्रि अपर्याप्ता	बेइंद्रिपर्याप्ता	बेइंद्रिअपर्याप्ता	एकेंद्रिपर्याप्ता	सूक्ष्मएकेंद्रिअप०	बादरएकेंद्रिप०	बादरएकेंद्रिअप०
१	१ गतिमार्गणा.	देवगति मार्गणा	१	१												
२		मनुष्यगति मा०	१	१		१										
३		तिर्यंचगति मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४		नरकगति मा०	१	१												
५	२ इंद्रिय मार्गणा	एकेंद्रि मा०											१	१	१	१
६		बेइंद्रि मा०									१	१				
७		तेइंद्रि मा०							१	१						
८		चौरिंद्रि मा०					१	१								
९		पंचेंद्रि मा०	१	१	१	१										
१०	३ काय मार्गणा	पृथ्वीकाय मा०											१	१	१	१
११		अपकाय मा०											१	१	१	१
१२		तेउकाय मा०											१	१	१	१
१३		वाउकाय मा०											१	१	१	१
१४		वनस्पतिकाय मा०											१	१	१	१
१५		त्रसकाय मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१				
१६	४ योगमा०	मनोयोग मा०	१													
१७		वचनयोग मा०	१		१		१		१		१					
१८		काययोग मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१९	५ वेदमा०	पुरुषवेद मा०	१	१	१	१										
२०		स्त्रीवेद मा०	१	१	१	१										
२१		नपुंसकवेद मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२२	६ कषायमार्गणा	क्रोधमा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२३		मान मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२४		माया मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२५		लोभ मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२६	७ ज्ञानमा०	मतिज्ञान मा०	१	१												
२७		श्रुतज्ञान मा०	१	१												
२८		अवधिज्ञान मा०	१	१												

२९		मनःपर्यवज्ञान मा०	१													
३०		केवळज्ञान मा०	१													
३१		मतिअज्ञान मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३२		श्रुतअज्ञान मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३३		विभंगज्ञान मा०	१	१												
३४	७ चारित्र मा०	सामायक मा०	१													
३५		छेदोपस्थानीय मा०	१													
३६		परिहारविशुद्धि मा.	१													
३७		सूक्ष्मसंपराय मा०	१													
३८		यथाख्यात मा०	१													
३९		देशविरति मा०	१													
४०		अविरति मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४१	४ दर्शन मा०	चक्षुदर्शन मा०	१		१		१									
४२		अचक्षुदर्शन मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४३		अवधिदर्शन मा०	१	१												
४४		केवळदर्शन मा०	१													
४५	६ लेश्या मा०	कृष्णलेश्या मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४६		नीललेश्या मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४७		कापोतलेश्या मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८		तेजोलेश्या मा०	१	१										१		
४९		पद्मलेश्या मा०	१	१												
५०		शुक्ललेश्या मा०	१	१												
५१	२ भव्य मा०	भव्य मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५२		अभव्य मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५३	६ सम्यक्त्व मा०	वेदकसम्यक्त्वमा०	१	१												
५४		क्षायकसम्यक्त्वमा	१	१												
५५		औपशमिकम०मा०	१	१												
५६		मिथ्यात्व स० मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५७		मिश्रसम्यक्त्व मा०	१													
५८		सास्वादन स०मा०	१	१		१		१		१		१				१
५९	२ सन्नि मा०	सन्नि मा०	१	१												
६०		असन्नि मा०			१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६१	२ आहा.	आहारक मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६२		अणाहारक मा०	१	१		१		१		१		१		१		१

बासठ मार्गणाद्वारे चौद गुणठाणानो यंत्र

अनुक्रम	मूळ मार्गणा	उत्तर मार्गणा.	१ मिथ्यात्व	२ सास्वादन	३ मिश्र	४ अविरति	५ देशविरति	६ प्रमत्त	७ अप्रमत्त	८ अपूर्वकरण	अनिवृत्तिकरण ९	सूक्ष्मसंपराय १०	उपशांतमोह ११	क्षीणमोह १२	सयोगी केवली १३	अयोगीकेवली १४
१		देवगति मार्गणा	१	१	१	१										
२		मनुष्यगति मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३		तिर्यंचगति मा०	१	१	१	१	१									
४		नरकगति मा०	१	१	१	१										
५		एकेंद्रि मा०	१	१												
६		बेइंद्रि मा०	१	१												
७		तेइंद्रि मा०	१	१												
८		चौरेंद्रि मा०	१	१												
९		पचेंद्रि मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१०		पृथ्वीकाय मा०	१	१												
११		अपकाय मा०	१	१												
१२		तेउकाय मा०	१													
१३		वाउकाय मा०	१													
१४		वनस्पतिकाय मा०	१	१												
१५		त्रसकाय मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१६		मनोयोग मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
१७		वचनयोग मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
१८		काययोग मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
१९		पुरुषवेद मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२०		स्त्रीवेद मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२१		नपुंसकवेद मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२२		क्रोध मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२३		मान मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२४		माया मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१					
२५		लोभ मा०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१				
२६		मतिज्ञान मा०				१	१	१	१	१	१	१	१	१		
२७		श्रुतज्ञान मा०				१	१	१	१	१	१	१	१	१		
२८		अवधिज्ञान मा०				१	१	१	१	१	१	१	१	१		

२९	मनःपर्यव मा०						१	१	१	१	१	१	१		
३०	केवळज्ञान मा०													१	१
३१	मतिअज्ञान मा०	१	१	१											
३२	श्रुतअज्ञान मा०	१	१	१											
३३	विभंगज्ञान मा०	१	१	१											
३४	सामायक मा०						१	१	१	१					
३५	छेदोपस्थापनीयमा						१	१	१	१					
३६	परिहारविशुद्धि मा						१	१							
३७	सूक्ष्मसंपराय मा०										१				
३८	यथाख्यात मा०											१	१	१	१
३९	देशविरति					१									
४०	अविरति	१	१	१	१										
४१	चक्षुदर्शन	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१		
४२	अचक्षुदर्शन	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१		
४३	अवधिदर्शन				१	१	१	१	१	१	१	१	१		
४४	केवळदर्शन													१	१
४५	कृष्णालेश्या	१	१	१	१	१	१								
४६	नीललेश्या	१	१	१	१	१	१								
४७	कापोतलेश्या	१	१	१	१	१	१								
४८	तेजोलेश्या	१	१	१	१	१	१	१							
४९	पद्मलेश्या	१	१	१	१	१	१	१							
५०	शुक्ललेश्या	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५१	भव्यमार्गणा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५२	अभव्यमार्गणा	१													
५३	वेदक सम्यक्त				१	१	१	१							
५४	क्षायक सम्यक्त				१	१	१	१	१	२	१	१	१	१	१
५५	औपशमिक सम्य०				१	१	१	१	१	१	१	१			
५६	मिथ्यात्वसमकित	१													
५७	मिश्रसम्यक्त			१											
५८	सास्वादनसम्यक्त्व		१												
५९	सन्निमार्गणा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६०	असन्निमार्गणा	१	१												
६१	आहारकमार्गणा	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
६२	अनाहारकमार्गणा	१	१		१									१	१

असन्निसु पढम दुगं, पढम तिलेसासु छच्च दुसुसत्त ॥
पढमंतिम दुग अजया, अणहारे मग्गणासु गुणा ॥२६॥

असन्निसु-असञ्ज्ञी मार्गणाये	दुसु-तेजो अने पद्म ए बे लेश्याये	अजया-अविरति
पढमदुग पेहेला बे गुणठाणां	सत्त-सात गुणठाणां	अणहारे-अणाहारक मा०
पढमतिलेसासु-पेहेली त्रण लेश्याये	पढमंतिमदुग-पेहेला बे अने छेल्ला बे	मग्गणासु-मार्गणाद्वारने विषे
छच्च-छ गुणठाणां		गुण-गुणठाणां

अर्थ—असञ्ज्ञी मार्गणाये प्रथमना बे गुणठाणां होय, पेहेली कृष्णादि त्रण लेश्या मार्गणाये छ गुणठाणां जाणवां अने तेजो तथा पद्म ए बे लेश्याये सात गुणठाणां होय, प्रथमना बे गुणठाणां तथा छेल्ला बे गुणठाणां ए चार तथा अविरति एम पांच गुणठाणां अणाहारक मार्गणाये जाणवां ए रीते बासठ मार्गणाद्वारे गुणठाणां विवरीने कह्यां ॥ २६ ॥

अणाहारक मार्गणाये मिथ्यात्व, सास्वादन अने अविरति सम्यक्दृष्टि ए त्रण गुणठाणां अहींआ वक्रगति पांच समयनी करतां वचला त्रण समय अथवा चार समय अणाहारी होय, ते अपेक्षाये ए त्रण गुणठाणां वाटे वेहेतां जीव मध्ये पामीये तथा केवली समुद्घात आठ समयनो करे ते मध्ये त्रीजे चोथे अने पांचमे ए त्रण समये कार्मणयोगी भणी अणाहारी होय एटले तेरमुं गुणठाणुं होय. तथा अयोगी गुणठाणुं चौदमुं अ, इ, उ, ऋ, लृ एवा पांच ह्रस्व अक्षर उच्चारतां होय तेटलो काल अणाहारी होय अथवा अनादि अनंत सिद्ध जीव तेने पण योगने अभावे अणाहारक पणुं होय बीजा सर्व जीव एक समय मात्र पण अणाहारी न होय

हवे बासठ मार्गणाद्वारे पंदर योग कहे छे

सच्चेअर मीस असच्च मोस मणवय विउव्वि आहारा ।
उरलं मीसा कम्मण, इअ जोगा कम्म मणहारे ॥२७॥

सच्चे–सत्यमनो योग	मण–मनोयोग	कम्मण–कार्मणयोग
इअर–असत्यमनोयोग	वय–वचनयोग	इअ–एम
मीस–मिश्र, (सत्यामृपा-मनो०)	विउव्वि–वैक्रिययोग	जोगा–जोग
	आहारा–आहारकयोग	कम्म–कार्मणयोग
असच्चमोस–असत्यामृपा-मनो०	उरलं–औदारिकयोग	अणहारे–अनाहारी मार्गणाये
	मीसा-औदारिक मिश्रयोग	

अर्थः—सत्य मनोयोग, असत्य मनोयोग, (तेमज सत्य वचनयोग, असत्य वचनयोग) सत्यामृपा मनोयोग, असत्या मृषामनोयोग, (तेमज सत्यामृपा वचनयोग, असत्या मृषा वचनयोग) वैक्रिययोग, आहारकयोग, ओदारिकयोग, औदारिकमिश्रयोग, वैक्रियमिश्रयोग, आहारकमिश्रयोग, अने कार्मणयोग, एम पंदरयोग. ते अनाहारी मार्गणाये होय.

(अनेकांतपणे सत्य वस्तुनुं चिंतववुं ते) सत्य मनोयोग (१), तेथी विपरीत ते असत्य मनोयोग (२), तेमज साचा वचननुं आत्माने जोडवुं ते सत्य वचनयोग (३), तेथी विपरीत ते असत्य वचनयोग (४), कांइक सत्य अने कांइक असत्य चिंतववुं ते सत्यामृपा मनोयोग (५), अने ते प्रमाणे बोलवुं ते सत्यामृपा वचनयोग (६), अने जेमां साच नथी तेम जूठपण नथी जेम अमुक माणसने कहेवानुं चिंतववुं के तुं आ वस्तु लाव, आ लइ जा, ते असत्यामृपा मनोयोग (७),अने ते प्रमाणे ते असत्यमृपा वचनयोग (८) वैक्रिय शरीर साथे आत्मानी शक्तिने जोडवुं ते वैक्रिययोग (९) तेमज आहारक शरीरनी साथे आत्माने जोडवो ते आहारक योग (१०) औदारिक शरीर साथे आत्माने जोडवो ते औदारिकयोग (११) ए त्रणेने मिश्र एटले औदारिकनुं कार्मण साथे मिश्र थवुं ते औदारिक मिश्र (१२) औदारिक साथे वैक्रियनुं मिश्र थवुं ते वैक्रिय मिश्र (१३) औदारिक साथे आहारकनुं मिश्र थवुं ते आहारकमिश्र (१४) अने कर्मदल साथे आत्म प्रदेशनुं मळवुं तेणे करी परभवादिकथी आगमनशक्ति ते कार्मणयोग(१५) ए पंदरयोग (अहींआं तैजस अने कार्मण शरीर जीवने सदा सर्वदा होयछे तेथी कार्मणयोगज लीधो छे अने तेजस तेनी अंदरज समजवानो छे. माटे जुदो गण्यो नथी)

एम पंदर योग कह्या. हवे मार्गणाद्वारे तेनुं विवरण करे छे त्यां प्रथम अणाहारी मार्गणाये एक कार्मण योग होय, बीजा चौद योगे वर्त्ततो जीव आहारी होय अने कार्मणयोगे वर्त्ततो जीव आहारी होय तेम अणाहारी पण होय जे भणी प्रथम समय कार्मणयोगे आहारी होय

नरगइ पणिंदि तस तणु, अचक्खु नर नपु कसायसम्मदुगे
सन्नि ठलेसा हारग, नव मइ सुअ ओहि डुगिसव्वे ॥२८॥

नरगइ–मनुष्यगति	नपु–नपुंसकवेद	भव–भव्यमा०
पणिंदिय–पचेंद्रिय	कसाय–कषाय	मइ–मतिज्ञानमा०
तस–त्रसकाय	सम्मदुगे–सम्यक्त्वद्विक	सुअ–श्रुतज्ञानमा०
तणु–काययोग	सन्नि–सज्ञीमा०	ओहिदुगे–अवधिज्ञानमा०
अचक्खु–अचक्षुदर्शन	छलेसा–छलेश्या	तथा अवधि दर्शन मा०
नर–पुरुषवेद	हारग–आहारकमा०	सव्वे–सर्व

अर्थ —मनुष्यगति, पचेंद्रि, त्रसकाय, काययोग, अचक्षुदर्शन, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, चार कषाय, एम अगीआर मार्गणा. अने सम्यकत्व मार्गणामध्ये क्षायक अने क्षायोपशमिक सम्यक्त्व मार्गणा तथा सज्ञी मार्गणा तथा ठ लेश्या मार्गणा, आहारी मार्गणा, भव्यमार्गणा, मति, श्रुत अने अवधि ए त्रण ज्ञान मार्गणा तथा अवधि दर्शन मार्गणा, ए ठवीस मार्गणाद्वारे सर्वे योग होय ए रीते सत्तावीस मार्गणाद्वारे योग कह्या ॥ २८ ॥

तिरि इत्थि अजय सासण, अनाण उवसम अभवमिच्छेसु
तेराहार डुगूणा, ते उरल डुगूण सुर निरए ॥ २ए ॥

तिरि–तिर्यंचगतिमा०	म्यक्त्वमा०	ते–ते (म पेथी)
इत्थि–स्त्री वेदमा०	अभव्य–अभव्यमा०	उरलदुगूण औदारिकद्विक
अजय–अविरतिमा०	मिच्छेसु–मिथ्यात्वमा०	ओछु करतां
सासण–सास्वादनमा०	तेराहारक दुगूणा–आहारकद्विक उणु करता	सुरनिरए–देवता अने
अनाण–त्रण अज्ञानमा०	तेर योग होय	नारकीने
उवसम–औपशमिक स		

अर्थः—तिर्यंचगति मार्गणा, स्त्रीवेद मार्गणा, अविरति मार्गणा, सास्वादन मार्गणा, तथा त्रण अज्ञाननी त्रण मार्गणा एम सात तथा औपशमिक सम्यक्त्व मार्गणा, अभव्यमार्गणा मिथ्यात्व मार्गणा, ए दश मार्गणाद्वारे ॥ (पंदरमांथी) आहारकद्विक उंछु करतां तेर योग होय ॥ ते तेर योगमांहेथी औदारिकद्विक उंछा करतां अगिआर योग देवता तथा नारकीने होय ॥ (कारण के तेमने औदारिक शरीर होतां नथी. एम सर्व मळी उंगणचालीस मार्गणाद्वारे योग कह्या ॥ २९ ॥

वाटे वहेतां ने भवने वच्चे जीवने कार्मणयोग होय. तथा स्त्रीने केवळ समुद्घातमां पेहेले त्रण समये होय, तथा औदारिक मिश्रयोग अपर्याप्तावस्थाये होय, तथा औदारिकादिक अगिआर योग पर्याप्तावस्थाये होय, त्यां वैक्रिय अने वैक्रिय मिश्रयोग तिर्यंच उत्तर वैक्रिय करे, ते अपेक्षाये कह्या छे. शेष आहारक अने आहारक मिश्र ए बे योगचारित्रने अभावे चौद पूर्वविना न होय. स्त्रीने चारित्र होय पण तुच्छता गारवबहुलतादिक दोषोर करीने चौदपूर्व भणवुं निषेध्युं छे. तेथी तेने पण आहारक तथा आहारक मिश्र बे योग न होय. देवता तथा नारकीने परभवथी आवतां कार्मणयोग एक समय लगीज होय अने त्यारपछी ज्यां लगे सर्व पर्याप्ति पुरी न करी होय त्यां सुधी वैक्रिय मिश्रयोग होय अने पर्याप्तिओ पुरी थया पछी चार मनोयोग, चार वचनयोग अने वैक्रिययोग एम नव योग होय.

कम्मुरलदुगं थावरि, ते सविउव्वि दुगपंच इग पवणे ॥
छ असन्नि चरिम वयजुअ, ते विउव्वि दुगूण चउ विगले ३०

कम्मुरलदुगं—कार्मण तथा औदारिकद्विक
थावरि—गतिथावर
ते—ते त्रणयोगने
सविउव्विदुग—वैक्रियद्विक साथे करतां
पंच—पांचयोग
इग—एकेंद्रिने
पवणे—वाउकायने विषे
छ—छयोग
असन्नि—असन्नि मा०
चरिम—छेल्ला
वय—वचनयोग
जुअ—युक्त
त—ते मध्येथी
विउव्विदुगूण—वैक्रियद्विक उणा करतां
चउ—चारयोग
विगले—विकलेंद्रिने

अर्थः-कार्मणयोग, औदारिकयोग तथा औदारिकमिश्रयोग ए त्रणयोग गतिथावरने होय, ते त्रणयोगने वैक्रिय अने वैक्रिय मिश्रयोगे सहित करता पाच योग एकेंद्रि अने वाउकायने होय ॥ तथा ए पाचने छेल्ला वचनयोगे (असत्यामृषावचनयोगे) सहित करता छ योग असन्नि मार्गणाने विषे होय. ते छमांथी वैक्रियद्विक उणा करता चार योग विकलेंद्रिने होय।३०

अहीं तेउकाय गतिथावरमा गणिये कारण के इधनादिक सयोगविना तेउकाय स्थानातरे न जाय अने वाउकाय तो पोतानी शक्तिये सेंकडो जोजन जाय माटे वाउकायने गतित्रस कहीए एटले तेना विना पृथ्वी, अप, तेउ अने वनस्पतिकायने उपजता कार्मणयोग होय वळी एने अपर्याप्तावस्थाये ओदारिक मिश्रयोग होय अने पर्याप्ता थया पछी एक औदारिक योग होय

वादर वाउकाय ध्वजाने आकारे उत्तर वेक्रियरुप करे त्यारे वैक्रिय अने वैक्रिय मिश्र ए वे योग वधारे होय तथा कार्मण अने ओदारिक मिश्र ए वे योग अपर्याप्ता वस्थाये होय तथा औदारिक योग तो मूळ शरीरनी अपेक्षाये होय एम पांच योग वाउकायने होय.

कम्मुरलमीसविणु मण, वय समइअ छेअ चखु मणनाणे
उरल दुग कम्म पढम, तिम मण वय केवल दुगमि।३१।

कम्म-कार्मण	त्रीओ	कम्म-कार्मण
उरलमीस-औदारिकमिश्र	छेअ-छेदोपस्थापनीय	पढमतिम-पहेलोअनेछेल्लो
विणु-विना	चारित्रीओ	मणवय-मनयोग तथा
मण-मनयोगी	चखु-चक्षुदर्शनी	वचनयोग
वय-वचनयोगी	मणनाणे-मन.पर्यवज्ञानी	केवल दुगमि-केवलद्विक
समइअ-सामायक चारि-	उरलदुग-औदारिकद्विक	

अर्थ-एक कार्मण अने वीजो औदारिक मिश्र ए वे योग विना बाकीना तेर योग मनयोगी, वचनयोगी सामायक

चारित्रीउं, छेदोपस्थापनीय चारित्रीउं, चक्षुदर्शनी, अने मनःपर्यव ज्ञानी ए छ मार्गणाद्धारने विषे होय ॥ औदारिक अने औदारिक मिश्र तथा कार्मण ए त्रण काययोग अने पेहेलो तथा छेल्लो ए वे मनयोग तथा वचनयोग (एटले सत्यमनोयोग तथा असत्यामृषा मनोयोग तथा असत्यामृषा वचनयोग) एम सात योग केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए वे मार्गणाये होय. एम सत्तावन मार्गणाद्धार थयां. ॥ ३१ ॥

मणवय उरला परिहा, रसुहुमिनव तेउ मीसि सविउव्वा॥
देसे सविउव्वि दुगा, सकम्मुरल मीस अहक्खाए ॥३२॥

मणवय-मनोयोगवचनयोग	मीसि-मिश्रसमकित मार्गणाये	सहित करीए
उरला-औदारिककाययोग	सविउव्वा-वैक्रिययोग	सकम्मुरलमीस-कार्मण
परिहार-परिहार विशुद्धि चारित्र	सहित करीए	अने औदारिक मिश्र
सुहुमि-सूक्ष्मसंपरायचारित्र	देसे-देशविरतिमार्गणाये	सहित
नव-नव	सविउव्विदुगा-वैक्रियद्विक	अहक्खाए-यथाख्यात
तेउ-तेने		चारित्र मार्गणाये

अर्थः—चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिक काययोग एम नवयोग परिहारविशुद्धिचारित्रमार्गणाये अने सूक्ष्मसंपरायचारित्रमार्गणाये होय, ते नवयोगने वैक्रिययोग सहित करतां दश योग मिश्र समकित मार्गणाये होय. तेज नव योगने वैक्रिय द्विक एटले वैक्रिय अने वैक्रिय मिश्र काययोग सहित करतां अगिआर योग देश विरति मार्गणाये होय, वळी तेज नवयोगने कार्मण अने औदारिक मिश्रयोग सहित करतां अगिआर योग यथाख्यात चारित्र मार्गणाये होय ए रीते वासठ मार्गणाद्धारे योग कह्या ॥ ३२ ॥

परिहार विशुद्धि चारित्र अने सूक्ष्म सपराय चारित्रे उपर कह्या ते नव योग होय वाकीना छ न होय कारण के ए बे चारित्रने विषे वर्त्तमान साधु होय ते लब्धि प्रयुजे नहीं, तेथी वैक्रियना बे अने आहारकना बे ए चार योग न लाभे केमके परिहार विशुद्धि चारित्रवाळाने उत्कृष्ट श्रुत नव पूर्व पर्यंत होय अने आहारक शरीर तो चौदपूर्वी विना न होय वळी वैक्रियलब्धि प्रयुजवानी ए चारित्रे आज्ञा-नथी तथा अपर्याप्तावस्थाये कार्मण अने औदारिक मिश्र योग होय त्या चारित्र न होय अने केवळी समुद्घात मध्ये तो यथाख्यात चारित्र होय तेथी समुद्घात मिश्र तो यथाख्यात चारित्रे होय तेथी ते समुद्घातनी अपेक्षाये पण ए बे योग ए चारित्रे न सभवे माटे शेष नव योग लाभे

हवे बासठ मार्गणाद्वारे उपयोग कहे छे

ति अनाण नाण पण चउ, दंसणबार जिअलक्खणुवओगा
विणु मणनाण दुकेवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥

ति–त्रण	जिअ–जीवनु	केवळदर्शन
अनाण–अज्ञान	लक्खण–लक्षण	नव–नव उपयोग
नाणपण–ज्ञान पाच	उवओगा–उपयोग	सुरतिरिनिरय–देवता, ति
चउ–चार	विणु–विना	र्यंच, नारकी
दसण–दर्शन	मणनाण–मन:पर्यवज्ञान	अजएसु–अविरति सम्यक्
बार–ए बार	दुकेवळ–केवळज्ञान तथा	दृष्टि मा०

अर्थ –त्रण अज्ञान, पाच ज्ञान अने चार दर्शन ए बार उपयोग जीवनु लक्षण जाणवु (उपयोग एटले वस्तुनु परिछे-दक प्रकाशवु) ॥ ए बारमाथी मन पर्यवज्ञान तथा केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए त्रण विना नव उपयोग सुरगति, तिर्यचगति अने नरकगति ए त्रण गति मार्गणा तथा अविरति सम्यक्दृष्टि मार्गणा ए चार मार्गणाये होय ॥ ३३ ॥

उपयोग ध प्रकारेछे. एक साकार, बीजो नीराकार तेमां पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान ए आठ साकार तथा चार दर्शनने अनाकार कहीए. त्या मिथ्यात्वी

मांहे त्रण अज्ञान अने चक्षु तथा अचक्षु ए बे दर्शन, एम पांच उपयोग लाभे अने सम्यक्‌दृष्टि देवादिक चार मार्गणा मध्ये त्रण ज्ञान तथा त्रण दर्शन ए छ उपयोग लाभे. एक समये जीवने एक उपयोग होय पण ए ओघ मात्रे कह्या.

तस जोअ वेअसुक्का, हार नर पणिंदि सन्नि भवि सव्वे ॥
नयणे अरपण लेसा, कसाय दस केवल दुगूणा ॥३४॥

तस–त्रसकाय	सुक्क–शुक्ल लेश्या	पणिंदि–पंचेंद्रियजाति
जोअ–त्रण योग	आहार–आहारी मा०	सन्नि–संज्ञीमार्गणा
वेअ–त्रण वेद	नर–मनुष्यगति	भवि–भव्य मार्गणा
सव्वे–सर्व उपयोग	पणलेसा–पांच लेश्या	केवलदुगूणा–केवल द्विक हीन करतां
नयणेअर–चक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन	कसाय–कषाय	
	दस–दश	

अर्थः–एक त्रसकाय, त्रणजोग, त्रणवेद, शुकललेश्या, आहारीमार्गणा, मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, संज्ञीमार्गणा अने भव्यमार्गणा, ए तेर मार्गणाद्वारे सर्वे (बारे) उपयोग पामीए॥ चक्षुदर्शन, अने अचक्षुदर्शन, शुक्ल सिवायनी पांच लेश्या, चार कषाय एम अगीआर मार्गणाद्वारे केवलदर्शन अने केवलज्ञान ऊणा करतां दश उपयोग पामीए ॥ ३४ ॥

चउरिंदि असन्नि दुअ ना,ण दुदंस इग बिति
थावरि अचक्खु ॥ ति अनाण दंसण दुगं,
अनाण तिगि अभव्व मिच्छ दुगे ॥ ३५ ॥

चउरिंदि–चौरिंद्रि मा०	तेइंद्रि–तेइंद्रि	अन्नाण तिगि–त्रण अज्ञान मार्गणा
असन्नि–असन्नि मा०	थावरि–पांचे थावर	
दुअनाण–बे अज्ञान	अचक्खु–अचक्षुदर्शन	अभव्व–अभव्य मा०
दुदंस–बे दर्शन	तिअनाण–त्रण अज्ञान	मिच्छदुगे–मिथ्यात्व तथा सास्वादन मा०
इगविति–एकेंद्रि	दंसणदुगं–बे दर्शन	

अर्थ.–चउरिंदि तथा असन्नि ए वे मार्गणाद्वारे, मतिअ-ज्ञान तथा श्रुतअज्ञान ए वे अज्ञान, तथा चक्षु अने अचक्षु ए वे दर्शन एम चार उपयोग होय तथा एकेंद्रिय, वेइंद्रि, अने तेइंद्रि ए त्रण इंद्रिय मार्गणा, अने कायमार्गणा मध्येनी पांचे स्थावर, एम आठ मार्गणाद्वारे मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान अने अचक्षुदर्शन ए त्रण उपयोग होय ॥ त्रण अज्ञानमार्गणा अभव्यमार्गणा, मिथ्यात्व मा० अने सास्वादन ए छ मार्गणाये मति, श्रुत अने विभग ए त्रण अज्ञान तथा चक्षु, अचक्षु ए वे दर्शन एम पाच उपयोग होय, जे भणी अहीआ सम्यक्त्व न पामीए, तेथी शेष सात उपयोग न होय ॥ ३५ ॥

केवलदुगंनिअदुगं, नवतिअनाणविणुखइअअहखाए दंसण नाण तिगदे, सि मीसि अन्नाण मीसतं ॥३६॥

केवलदुग–केवलद्विके	खइअ–क्षायक समकित	देसि–देश विरति मार्गणाए
निअदुग–निजद्विक	अहखाए–यथाख्यात चारित्र	मीसि–मिश्र मार्गणाए
नव–नव		अन्नाण–अज्ञाने करी
तिअनाणविणु–त्रण अज्ञान विना	दसणनाण तिग–त्रण ज्ञान तथा त्रण दर्शन	मीसत–मिश्र

अर्थ –केवलज्ञान अने केवल दर्शन ए वे मार्गणाये तेज वे उपयोग पामीए. तेथी निजद्विक कह्यु (जे भणी बाकीना छाद्मस्थिक जे दश उपयोग छे ते केवलीने न होय) हवे बार उपयोग मध्येथी त्रण अज्ञान विना नव उपयोग क्षायक स-म्यक्त्व अने यथाख्यात चारित्र ए वे मार्गणाद्वारन विषे पामीए, (तेमां मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन.पर्यवज्ञान, चक्षु-दर्शन, अचक्षुदर्शन, अने अवधिदर्शन, ए सात उपयोग छद्म-

आरमे अने बारमे गुणठाणे यथाख्यात चारित्र होय ते अपेक्षाये लेवा अने केवलज्ञान तथा केवलदर्शन ए बे उपयोग केवलीनी अपेक्षाये यथाख्यात चारित्र छे माटे लेवा, विरति त्रणी अज्ञान त्रण न होय.) एक केवल दर्शन विना त्रणदर्शन तथा मति, श्रुत अने अवधि ए त्रण ज्ञान एम छ उपयोग देशविरति मार्गणाये पामीए. तेज छ उपयोग मिश्रमार्गणाये होय, पण एटलुं विशेष के त्रण ज्ञान ते अज्ञाने करी मिश्र लेखववां. त्यां मतिज्ञान मतिअज्ञाने मिश्र, अने श्रुतज्ञान श्रुतअज्ञाने मिश्र तथा विभंग अज्ञान अवधिज्ञाने मिश्र होय एम त्रण दर्शन पण मिश्र लेवां. एम छ उपयोग मिश्रमार्गणाये पामीये ॥ ३६ ॥

मणनाण चक्खु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउनाण ॥
चउनाण संजमो वस, म वेअगे ओहि दंसेअ ॥ ३७ ॥

मणनाण–मनःपर्यवज्ञान	तिन्निदंस–त्रण दर्शन	वेअगे-वेदकसम्यक्त्व मा०
चक्खु–चक्षुदर्शन	चउनाण–चार ज्ञान	ओहि दंसेअ–अवधि दर्शन मा०
वज्जा–वर्जीने	संजम–संयम मा०	
अणहारे–अणाहार मा०	उवसम-उपशमसम्यक्त्वमा	

अर्थः–मनःपर्यवज्ञान अने चक्षुदर्शन वर्जीने बाकीना दश उपयोग अनाहारक मार्गणाये होय. तथा चक्षु, अचक्षु अने अवधि ए त्रण दर्शन तथा केवळज्ञान विना चार ज्ञान एम सात उपयोग अगिआर मार्गणाद्वारे होय ते कहे छे. केवळ सिवाय चार ज्ञान मार्गणा द्वारे, तथा सामायक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि अने सूक्ष्म संपराय ए चार चारित्र मार्गणा द्वारे, ए आठ तथा नवमी उपशम सम्यक्त्व, दशमी वेदक सम्यक्त्व अने अगीआरमी अवधिदर्शन मार्गणा ए अगिआर मार्गणा द्वारे उपरना सात उपयोग पामीए॥ ३७॥

हवे त्रण योग मार्गणाने विषे जीवस्थान, गुणस्थान योग अने उपयोग आश्रयीने मतांतर कहे छे.

दो तेर तेर बारस, मणेकमा अठ्ठ दु चउ चउ वयणे ॥
चउदुपण तिन्नि काए, जिअगुण जोगोवउ गन्ने ॥३८॥

दो–बे	चउ–चार	जिअ–जीवस्थान
तेर–तेर	वयणे–वचनयोगे	गुण–गुणस्थान
बारस–बार	पण–पांच	जोग–योग
मणे–मनयोगीने विषे	तिन्नि–त्रण	उवओग–उपयोग
कमा–अनुक्रमे	काए–काययोगी	अन्ने–बीजा आचार्य कहेछे
अठ्ठ–आठ		

अर्थ –बे जीवभेद (सन्नि पचेंद्रियपर्यासो अने अपर्यासो), प्रथमना तेर गुणठाणा (कार्मण अने औदारिक मिश्र ए बे योग विना) तेर योग, अने बार उपयोग अनुक्रमे मन योगीने विषे पामीए (त्रण विकलेंद्रि अने असन्नि पचेंद्रि ए चार पर्यासा अने चार अपर्यासा एम) आठ जीव भेद, (मिथ्यात्व अने सास्वादन ए) बे गुणठाणा, (औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण. अने असत्यामृषा ए) चार योग, अने (मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, चक्षुदर्शन अने अचक्षु दर्शन ए) चार उपयोग, वचन योगीने विषे पामीए (सूक्ष्म पर्यासा अने अपर्यासा तथा बादर पर्यासा अने अपर्यासा ए) चार जीव भेद, (मिथ्यात्व अने सास्वादन ए) बे गुणठाणा, (औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, अने कार्मण एम) पांच योग, अने (मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन ए) त्रण उपयोग ए एकज काययोगने विषे पामीए ए रीते मतांतरे योग मार्गणाये जीवभेद, गुणठाणा, योग अने उपयोग ए चार बोल अन्य आचार्य कहेछे ते कह्या. ॥ ३८ ॥

हवे मार्गणाद्वारे छ लेश्या कहे छे. कारण के मार्गणास्थित जीवनी उपयोग शुद्धि लेश्या शुद्धिए करी जणाय माटे.

छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि जूदगवणेसु ॥
पढमा चउरो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ॥३९॥

छसुलेसासु–छ लेश्याद्वारे	दग–अप्काय मा०	नारय–नारकी
सठाणं–स्वस्थान	वणेसु-वनस्पतिकायमा०ये	विगल–विगलेंद्रि
एगिंदि–एकेंद्रि मा०	पढमाचउरो–प्रथमनी चार	अग्गि–अग्निकाय मा०
असन्नि–असन्नि मा०	तिन्निउ–त्रण लेश्या	पवणेसु–वाउकाय मा०
भु–पृथ्वीकाय मा०		

अर्थः–छ लेश्या मार्गणाद्वारे स्वस्थान ते आप आपणी एक लेश्या होय, एटले कृष्ण लेश्या मार्गणाये कृष्ण लेश्या अने नील लेश्या मार्गणाये नील लेश्या होय, एकेंद्री मार्गणा, असंज्ञी मार्गणा, पृथ्वीकाय मार्गणा, अपकाय मार्गणा, वनस्पति काय मार्गणा, ए पांच मार्गणाद्वारने विषे प्रथमनी *चार लेश्या होय. कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्या अशुभ परिणामे होय, ते नरकगति मार्गणा तथा विकलेंद्रिय मार्गणा, अने पांचमी अग्निकाय मार्गणा तथा छट्ठी वायुकाय मार्गणा ए छ मार्गणा द्वारे ए प्रथमनी त्रण लेश्या होय. ए छए मार्गणा स्थित जीव अशुभ अध्यवसाय स्थानके वर्ते छे ते भणी एने ए अशुभ लेश्या त्रण होय शेष त्रण शुभ लेश्या न होय ॥ ३९ ॥

---

* अहींआं त्रण लेश्या सेहेजे होय, अने चोथी तेजोलेश्या तो पृथ्वी अप अने वनस्पति मांहे सौधर्म इशान देवलोकना देवता चवीने अवतरे, जे भणी ते देवता पोताना भवनी लेश्या शेष होय, तेनी साथे चवे तेथी एकेंद्रियादिक मध्ये तेजोलेश्या पामीए.

अहक्काय सुहुम केवल, दुगि सुक्का छावि सेसठाणेसु ॥
नरनिरय देवतिरिआ, थोवा दु असंखणंत गुणा ॥४०॥

अहखाय–यथाख्यात चारित्र	सुक्का–शुक्ल लेश्या	देव–देव
	छावि–छ	तिरिआ–तिर्यंच
सुहुम–सूक्ष्म संपराय चारित्र	सेसठाणेसु–बाकीना स्थानके	थोवा–थोडा
		दु–बे
केवलदुग–केवळज्ञान अने दर्शन	नर–मनुष्य	असंख–असंख्यातगुणा
	निरय–नारकी	अणंतगुणा–अनंतगुणा

अर्थ.—यथाख्यात चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शन ए चार मार्गणाद्वारे एक शुक्ल लेश्या होय, कारण के त्यां अति विशुद्ध अध्यवसाय होय छे अने एकतालीस मार्गणाद्वारे (देव, मनुष्य, तिर्यंच, पंचेंद्रिय, त्रण योग मार्गणा, त्रसकायमा०, त्रण वेद मा०, चार कषायमा०, सात ज्ञान मा०, पांच संयम मा०, त्रणदर्शन मा०, भव्य मा०, अभव्य मा०, छ सम्यक्त्व मा०, संज्ञी मा०, आहारक मा०, अने अनाहारक मा०ये) छ लेश्या होय

अहींआं अभव्यादिकने अशुद्ध परिणाम भणी अशुद्ध लेश्या होय पण व्यवहारे शुभयोग प्रवृत्तिये करी, जैन शुद्ध द्रव्य क्रियाए करी नवमा ग्रैवेयक सुधी पहोंचे ते माटे एने शुक्ल लेश्या कही

हवे एकेक मार्गणाए अल्प बहुत्व कहे छे.

त्यां प्रथम गति मार्गणाये सर्व जीवथी मनुष्य गतिना जीव थोडा तेथी नरकगतिना जीव असंख्यात गुणाअधिक होय तेथी देवगतिना जीव असंख्यात गुणा होय अने देवताथी अनंतगुणा तिर्यंच होय (तिर्यंचमा जळचर, थळचर, खेचर

चौरिंद्रि, तेइंद्रि, बेइंद्रि, एकेंद्रि सर्वे जाणवा ॥ ४० ॥

अहीं मनुष्य गतिमां गर्भज मनुष्यनी संख्याना ओगणत्रीस आंक लखीये छीये ७, ९२, २८, १, ६२, ५१, ४२, ६, ४३, ३७, ५९, ३, ५४, ३९, ५०, ३३६, एटला आंकनी संख्याए गर्भज मनुष्य जाणवा अने उत्कृष्ट पदे तेथी असंख्याता समूच्छिंम होय, समूच्छिंम यद्यपि असंख्याताछे तथापि ते अध्रुवछे जे भणी तेनुं आयु अंतर्मुहूर्त्तनुं होय तथा देखाय नहीं अने तेने उपजवानो विरहकाळ जघन्यथी एक समय तथा उत्कृष्टथी चोवीस मुहूर्त्त छे. तेथी कोइवारे होय अने कोइवारे न पण होय, अने गर्भजनो विरह तो न ज होय. ते तो सदैव होय ज अने ते पण वळी संख्याता होय असंख्याता न होय. ते संख्याताना असंख्य भेद छे तेनुं अहीं प्ररूपण करे छे.

कोइ संख्याने तेनी ते संख्याए गुणीए ते तेनो वर्ग कहीए. त्यां एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग २×२=४ थाय ए प्रथम वर्ग, अने चारनो वर्ग ४×४–१६ ए बीजो वर्ग. सोळनो वर्ग १६×१६–२५६ ए त्रीजो वर्ग. २५६नो वर्ग २५६×२५६–६५५३६ ए चोथो वर्ग. अने ६५५३६ नो वर्ग ६५५३६×६५५३६–४२९४९६७२९६ ए पांचमो वर्ग, अने तेनो वर्ग १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ ए छठ्ठो वर्ग, तेने पाचमा वर्ग साथे गुणीए त्यारे पूर्वोक्त ओगणत्रीस आंकनी संख्या थइ एटले सात कोडाकोडी कोडा कोडी, बाणु लाख कोडा कोडी कोडी, अठ्ठावीस हजार कोडा कोडी कोडी, बासठ कोडा कोडी कोडी, एकावन लाख कोडा कोडी बेंतालीस हजार कोडा कोडी छसें कोडा कोडी, तेंतालीस कोडा कोडी, साडत्रीस लाख कोडी, ओगणसाठ हजार कोडी, त्रणसें कोडी, चोपन कोडी अने उपर ओगणचालीस लाख, पच्चास हजार, त्रणसेंने छत्रीस थया. अथवा एकने छन्नुवार ठाणा बमणा करीए तो पण ए आंक थाय. एम पन्नवणामां कह्युं छे एटला जघन्य पदे गर्भज मनुष्य होय अने जेवारे समूच्छिंम होय ते साथे गणीए, तेवारे उत्कृष्ट पदे असंख्याता होय.

पणचउतिदु एगिंदी, थोवा तिन्निअहिआ अणंतगुणा॥
तस थोव असंखग्गी, भूजलानिल अहिअ अणंता ४१

पण पंचेंद्रि	ति–तेइंद्रि	एगिंद्री–एकेंद्रि
चउ–चौरिंद्रि	दु–बे इंद्रि	थोवा–थोडा

तिन्नि–त्रण राशी चौरिंद्रि, तेइद्रि, नेइद्रि	थोव–थोडा	जल–अपकाय
अहिआ–अधिक	असखगी–असरयात गुणा अग्निकाय	अनिल–वायुकाय
अणतगुणा–अनतगुणा	भू–पृथ्वीकाय	अहिअ–अधिक
तस–त्रस		अणता–अनतगुणा

इद्रिय मार्गणामध्ये अल्प बहुत्व द्वार कहे छे.

अर्थः–पचेंद्रि, चौरिंद्रि, तेइंद्रि, वेइंद्रि अने एकेंद्रि तेमां सौथी थोडा पंचेंद्रि, तेथी चौरिंद्रि, तेइंद्रि अने वेइंद्रि ए त्रण राशीना जीव एक बीजाथी विशेपाधिक (बमणा न होय त्यां सुधी विशेपाधिक कहेवाय) जाणवा अने वेइंद्रियथी एकेंद्रि अनत गुणा जाणवा कारणके निगोदीया जीव एकेंद्रिमां आवी जाय छे, हवे त्रीजी काय मार्गणामध्ये सर्वथी थोडा त्रसकायीआ जीव, ते करता असरयात गुणा अग्निकायना जीव छे तेथी पृथ्वीकायिआ जीव विशेपाधिक छे तेथी अपकायना जीव विशेपाधिक छे तेथी वायुकायना जीव विशेपाधिक छे ते थकी वनस्पतिकायना जीव अनतगुणा जाणवा ॥ ४१ ॥

मण वयण काय जोगी, थोवा असखगुणा अनत गुणा॥
पुरिसा थोवा इत्थी, संखगुणा अणत गुणा कीवा ॥४२॥

मण–मनयोगी	असखगुणा असरयातगुणा	थोवा थोडा
वयण–वचनयोगी	अणतगुणा–अनतगुणा	इत्थी–स्त्रीवेदी
कायजोगी–काययोगी	पुरिसा–पुरुपवेदी	कीवा–नपुसकवेदी
थोवा–थोडा		

अर्थ–हवे चोथी योग मार्गणा मध्ये मनोयोगी जीव सर्वथी थोडा जाणवा (जे सणी सज्ञी पचेंद्रि जीव मनोयोगी होय, ते सर्वथी थोडा छे), ते थकी वचन योगी असरयात

गुणा जाणवा (बेइंद्रि, तेइंद्रि, चोरिंद्रि असन्नि पंचेंद्रि अने सन्नि पंचेंद्रि ए सौ वचन योगी छे तेथी असंख्याता छे). ते करतां काययोगी जीव अनंत गुणा छे (कारणके निगोदादिकना अनंता जीव पण काययोगी छे). हवे पांचमी वेद मार्गणा मध्ये पुरुषवेदी जीव सर्वथी थोडा जाणवा, ते थकी स्त्रीवेदी जीव संख्यात गुणा अधिक जाणवा ते थकी नपुंसक वेदी जीव अनंतगुणा जाणवा. ॥४२॥ कारणके एकेंद्रि, विकलेंद्रि, तथा समूर्छिम मनुष्य अने तिर्यंच तथा नारकी ए सर्व नपुंसक वेदीछे माटे.

माणी कोहि माइ, लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा ॥
ओहि असंखा मइ सुअ, अहिअ सम असंख विभंगा॥४३

माणी—मानी	मणनाणिणो-मनःपर्यवज्ञानी	सुअ—श्रुतज्ञानी
कोहि—क्रोधी	थोवा—थोडा	सम—सरखा
माइ—मायी	ओहि—अवधिज्ञानी	असंख—असंख्यातगुणा
लोभी—लोभी	असंखा—असंख्यातगुणा	विभंगा—विभंगज्ञानी
अहिअ—अधिक	मइ—मतिज्ञानी	

अर्थः—हवे छठी कषाय मार्गणा मध्ये सर्वथी थोडा मानीजीव जाणवा, तेथी क्रोधी जीव विशेषाधिकछे, तेथी मायी जीव विशेषाधिकछे, तेथी लोभी जीव विशेषाधिकछे. कारण के दशमा गुणठाणा सुधी पण लोभ होय माटे. हवे सातमी ज्ञान मार्गणा मध्ये मनःपर्यव ज्ञानी जीव थोडा जाणवा, तेथी अवधिज्ञानी असंख्यगुणा, तेथी मतिज्ञानी तथा श्रुतज्ञानी विशेषाधिक जाणवा, मतिज्ञानी तथा श्रुतज्ञानी ए बे मांहोमांहे सरखा जाणवा कारण के ए बे साथे होयछे, तेथी विभंगज्ञानी जीव असंख्यातगुणा जाणवा. ॥ ४३ ॥

केवलीणोणंतगुणा, मइसुअ अन्नाणिणंत गुण तुल्ला ॥
सुहुमा थोवा परिहा, र संख अहखाय संखगुणा ॥४४॥

केवलीणो केवलज्ञानी जीव	अन्नाणि–अज्ञानी	संख–संख्यातगुणा
अणतगुणा–अनतगुणा	तुल्ला–बरोबर	अहखाय–यथाख्यात
मइ–मति (अज्ञानी)	सुहुमा सूक्ष्म संपरायवाळी	संखगुणा–संख्यातगुणा
सुअ–श्रुत (अज्ञानी)	परिहार–परिहार विशुद्धि	

अर्थ –विभंगज्ञानीथी केवलज्ञानी जीव अनतगुणा जाणवा (कारण के सिद्धनाजीव पण केवलज्ञानी छे) ते केवलज्ञानीथी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी अनत गुणा छे, (कारण के निगोदीआ जीव सिद्ध थकी अनत गुणाछे तेमने मति अज्ञान अने श्रुत अज्ञान छे, ते बे माहोमांहे सरखा छे, कारण के जेने मति अज्ञान छे तेने श्रुत अज्ञानपण छे.

हवे आठमी संयममार्गणा मध्ये सूक्ष्म संपराय चारित्रवाळा जीव सर्वथी थोडा छे (कारण के ते उत्कृष्टा एक समयमां शत पृथक्त्व पामीये) (पृथक्त्व एटले बेथी नवनी संज्ञा जाणवी.) तेथी परिहार विशुद्धि चारित्रीया संख्यातगुणा होय (कारण के ते सहस्र पृथक्त्व लाभे) तेथी यथाख्यात चारित्रीया संख्यातगुणा जाणवा (कारण के तेकोटी पृथक्त्व लाभे)॥४४॥

छेआ समइअ संखा, देस असंखगुणऽणंत गुण अजया॥
थोव असंख दुणंता, ओहि नयण केवल अचक्खू ॥४५॥

छेआ–छेदोपस्थापनीय	असंखगुणा असंख्यातगुणा	दुणता–बे अनता
समइअ–सामायक चारित्रीया	अणतगुण–अनतगुणा	ओही–अवधिदर्शनी
	अजया–अविरति	नयण–चक्षुदर्शनी
संखा–संख्यातगुणा	थोव–थोडा	केवल–केवलज्ञानी
देस–देशविरति	असंख–असंख्यातगुणा	अचक्खू–अचक्षुदर्शनी

अर्थः—ते थकी छेदोपस्थापनीय चारित्रीया जीव संख्यात गुणा जाणवा, (कारण के ते शतकोटी पृथक्त्व लाभे माटे) ते थकी सामायिक चारित्रीया संख्यातगुणा जाणवा, (कारण के ते सहस्रकोटी पृथक्त्व लाभे) ते थकी देश विरति जीव असंख्यात गुणा जाणवा, ते थकी वळी अविरति जीव अनंतगुणा जाणवा. (कारण के प्रथमना चार गुणठाणे वर्त्तता जीव सर्व अविरति छे) ए रीते आठमी संयम मार्गणाए अल्प बहुत्वद्वार कह्युं—हवे नवमी दर्शनमार्गणामांहे अवधि दर्शनी जीव सर्वथी थोडा जाणवा, ते थकी चक्षु दर्शनी जीव असंख्यात गुणा, तेथी वे अनंता कहेवा एटले तेथी केवलदर्शनी अनंतगुणा अने तेथी अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा जाणवा कारण के एकेंद्रिआदि जीवोने अचक्षुदर्शन होयछे. ए रीते नवमी दर्शन मार्गणाये अल्पबहुत्वद्वार कह्युं. ॥ ४५ ॥

पच्छाणु पुव्वि लेसा, थोवा दोऽसंखणंत दो अहिआ ॥
अभवि अर थोवऽणंता, सासण थोवोवसमसंखा ॥ ४६ ॥

पच्छाणुपुव्वि-पश्चानुपूर्वि (छेल्लेथी पेहेले आववुं)	अणंत—अनंतगुणा	थोव—थोडा
लेसा—लेश्या	दो—वे स्थानके	अणंता—अनंतगुणा
थोवा—थोडा	अहिआ—विशेषाधिक	सासण—सास्वादनी
दो—वे स्थानके	अभव—अभव्य मार्गणाये	उवसम—औपशमिक
असंख—असंख्यातगुणा	इअर—भव्य मार्गणाये	संखा—संख्यातगुणा

अर्थः—दशमी लेश्या मार्गणाये पश्चानुपूर्वि एटले शुक्ल लेश्याथी मांडीने कृष्णलेश्या लगे अल्पबहुत्व लेवुं ते बतावे छे. शुक्ललेश्यावाळा जीव सर्वथी थोडा छे कारण के शुक्ललेश्या

वाळा जीव लांतक देवलोकथी मांमी अनुत्तर विमानवासी देवलोक सुधीना देवता तथा अकर्मभूमिना मनुष्य अने तिर्यंच तथा कोइएक सख्याता आयुववाला मनुष्य तथा तिर्यंच होय छे. माटे तेथी पद्म लेश्यावाळा जीव असंख्यात गुणा होय छे कारण के सनत्कुमार, माहेंद्र, ब्रह्मदेवलोकना देवताउने पद्म-लेश्या होय छे अने ते लोकांतिक देवोथी असख्यातगुणा होय छे तेथी तेजो लेश्यावाळा जीव असख्यातगुणा जाणवा कारण के सौधर्म, इशान देवलोकने तेजो लेश्या होय छे अने ते तेमनाथी असंख्यातगुणा होय छे माटे ए बे स्थानके असख्यात गुणा लेवा कोइक ठेकाणे ए बे राशीना जीव संख्यातगुणा अ-धिक लखेला छे) तेथी कापोत लेश्याना जीव अनतगुणा जा-णवा (कारण के निगोदीआ जीवने पण कापोत लेश्या होय छे) ते थकी बे स्थानके विशेपाधिक कहेवा (एटले कापोत लेश्या थकी नीललेश्याना जीव विशेपाधिक जाणवा कारण के नारकी प्रमुख नीललेश्याना जीव मांहे मेळवीए एटले विशे-पाधिक थाय.) ते थकी कृष्णलेश्यावाळा जीव विशेपाधिक जाणवा केमके घणा जीवने कृष्णलेश्या छे ए प्रमाणे लेश्या मार्गणाये अल्प बहुत्वद्वार कह्यु)

हवे अगीआरमी भव्य मार्गणा मध्ये अभव्य जीवो थोमा होय छे अने तेथी भव्य जीवो अनतगुणा छे (कारण के अनत काळे पण अत न आवे एटला भव्य जीवो छे, जो के मुक्ति-मार्ग सदा वहे छे तो पण कोइवारे भव्य जीव थकी शून्य लोक थशे नहीं)

हवे बारमी सम्यकत्व मार्गणा मध्ये सास्वादनी जीव सर्वथी थोडा जाणवा (कारण के ए गुणठाणे उपशम सम्यक्त्वथी पडतां कोइक जीव होय माटे,) ते थकी औपशमिक सम्यक्दृष्टि जीव संख्यातगुणा जाणवा ॥ ४६ ॥

मीसा संखा वेअग, असंखगुण खइअ मिच्छ दुअणंता॥
सन्निअर थोवणंता, अणहार थोवे अर असंखा॥४७॥

मीसा–मिश्रदृष्टि
संखा–संख्यातगुणा
वेअग–क्षायोपशमिक
खइअ–क्षायक सम्यक्त्व
मिच्छ–मिथ्यादृष्टि
दु–बे
अणंता–अनंतगुणा
सन्नि–सन्नि
इअर–असन्नि
थोव–थोडा
अणंता–अनंतगुणा
अणहार–अणहारी
इअर–आहारी
असंखा–असंख्यातगुणा

अर्थः–ते औपशमिक सम्यक्दृष्टिथी मिश्रदृष्टि जीव संख्यात गुणा जाणवा (केमके सम्यक्त्व थकी पण जीव मिश्रे आवे अने मिथ्यादृष्टि जीव पण मिश्रे आवे माटे.) ते मिश्रदृष्टि थकी क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि जीव असंख्यातगुणा छे (जे भणी तेनो स्थितिकाल असंख्यातगुणो छे केमके उत्कृष्ट छासठ सागरोपम जाझेरा वेदक सम्यक्त्वे जीव रहे छे ते अपेक्षाये कह्या) ते थकी एक क्षायक सम्यक्त्वी तथा बीजा मिथ्यादृष्टि ए बे अनुक्रमे एक बीजाथी अनंतगुणा कहेवा (एटले क्षायोपशमिकथी क्षायिक सम्यक्दृष्टि जीव अनंतगुणा छे. कारण के सिद्धना जीव अनंता छे तेने ए सम्यक्त्व छे,) ते थकी मिथ्यात्वी जीव अनंतगुणा छे. (कारण के निगोदीआ जीव सिद्धथी अनंतगुणा छे ते सर्व मिथ्यात्वी छे.) हवे सन्निअसन्नि मार्गणा मध्ये संज्ञीआ जीव थोडा छे ते थकी असंज्ञीआ जीव अनंत

गुणा छे ॥ हवे आहारक मार्गणाये अणाहारी जीव थोडा छे, (कारण के विग्रह गतिये वर्त्तता त्रण समय लगे जीव अणाहारी होय तथा सिद्धना जीव अणाहारी होय छे) ते थकी आहारी जीव असंख्यातगुणा जाणवा, (जे त्रणी जो पण अनंता जीव छे तो पण आयुःस्थिति असंख्यात समयनी होय त्यां एकेक समयोत्पन्न जीव अनंता होय, तथापि असंख्य समयोत्पन्न त्रणी असंख्यातगुणा कह्या जो पण सिद्धना जीव अनंता अणाहारी छे तो पण निगोदीआना अनंता आगल सिद्धनु अनंतु कोइ लेखामां नथी तेथी असंख्यातगुणा होय) ॥४७॥

हवे चौद स्थानके जीव स्थानादिक दश बोल कहे छे

सव्व जिअठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज सन्निदुगं
सम्मे सन्नी दुविहो, सेसेसु सन्नि पज्जत्तो ॥ ४८ ॥

सव्वजिअठाण–सर्व जीवस्थान	पण–पाच	सन्निदुविहो–वे भेद सन्निना
मिच्छे–मिथ्यात्वगुणठाणे	अपज्ज–अपर्याप्ता	सेसेसु–वाकीनाने विषे
सग–सात	सन्निदुग–सन्निद्विक	सन्निपज्जत्तो–सन्निपर्याप्तो
सासणि–सास्वादन	सम्मे–(अविरति) सम्यक् दृष्टि गुणठाणे	

अर्थ.–त्या प्रथम मिथ्यात्व गुणठाणे एकेंद्रियादिक चौदे जीवभेद सर्व पामीए (केमके सर्व जीवभेदे मिथ्यात्वीपणु अवश्य होय.) अने वीजे सास्वादन गुणठाणे, वादरएकेंद्रि, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चौरेंद्रि, अने असन्नि पचेंद्रिय ए पाच करणअपर्याप्ता अने सन्नि पचेंद्रि पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए वे भेद सन्निआना एम सात जीव भेद होय (एटले एकेंद्रियादिक मध्ये सम्यक्त्व वमतो जीव अवतरे, तेथी अपर्याप्तावस्थाये सास्वा-

दन गुणठाणुं होय अने सन्नि पर्याप्ताने ग्रंथिभेदथी पड़तां सास्वादन होय.) तथा चोथे अविरति सम्यक्दृष्टि गुणठाणे सन्निओ पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए बे भेद होय (केमके सम्यक्त्वसहित आवीने अवतरे ते संज्ञी करण पर्याप्तो होय) ए पूर्वोक्त त्रण गुणठाणांथी शेष रह्यां जे अगिआर गुणठाणां तेने विषे सन्नि पर्याप्तानो एकज भेद होय ॥ ४८ ॥

हवे चौद गुणठाणे योग कहे छे.

मिच्छ दुगि अजइ जोगा, हार दुगूणा अपूव पणगेउ॥
मणवय उरलं स विउवि, मीसी सविउवि दुगदेसे॥४९॥

मिच्छदुगि–मिथ्यात्व अने सास्वादन	मिश्रयोग	उरल–औदारिकना
अजइ-अविरति सम्यक्दृष्टि	ऊणा–ओछा	सवेउव्वि–वैक्रिय सहित करीये
जोग–योग	अपूव्वपणगेउ-अपूर्वादिक पांच गुणठाणां	मीसी–मिश्र गुणठाणे
आहारकदुग–आहारक योग अने आहारक	मण–मनना	सविउव्विदुग–वैक्रियद्विक सहित
	वय–वचनना	देसे–देशविरति गुणठाणे

अर्थः–मिथ्यात्व अने सास्वादन तथा अविरति सम्यक् दृष्टि ए त्रण गुणठाणे आहारक अने आहारक मिश्र ए बे योग न होय बाकीना तेर योग होय. (तीहां कार्मण अने औदारिक मिश्र ए बे योग अपर्याप्तावस्थाये मनुष्य तथा तिर्यंचने होय ने वैक्रियमिश्र ए एक योग देवता नारकीने अपर्याप्तावस्थाये होय. शेष मनना चार, वचनना चार, औदारिक अने वैक्रिय ए दश योग पर्याप्तावस्थाये होय अने चारित्र ए त्रण गुणठाणे नथी. ते भणी आहारकद्विक न होय) तथा अपूर्वादिक पांच गुणठाणां एटले अपूर्वकरण, बादरसंपराय, सूक्ष्मसंपराय, उप-

शांत मोह, अने क्षीण मोह ए पाच गुणठाणे मनना चार योग, तथा वचनना चार योग अने औदारिक, ए नव योग पामीए (ए अपूर्वादिक पांच गुणठाणे अति विशुद्ध चारित्र ज्नणी वैक्रिय तथा आहारक शरीर न करे तेथी तेना चार योग एनें न होय अर्हांआ अपर्याप्तो न होय माटे औदारिकमिश्र अने कार्मण ए वे योग पण न होय. शेप नवयोग होय) अने त्रीजे मिश्र गुणठाणे ते पूर्वोक्त नव योगने वैक्रिय सहित करीये ते वारे दश योग होय (कारण के देवता तथा नारकीनें पण मिश्र गुणठाणुं होय, तेथी तेने वैक्रिययोग पण होय) तथा देशविरति पाचमे गुणठाणे पूर्वोक्त नवयोगने वैक्रियद्विक सहित करीए तेवारें अगियार योग होय (त्या एक वैक्रिय अने बीजो वैक्रिय मिश्र ए वे योग लब्धि प्रत्यय होय ते माटे मनोयोग चार, वचनयोग चार औदारिकयोग एक अने वैक्रिय योग वे एम अगियारयोग होय) ॥ ४ए ॥

साहार डुग पमत्ते, ते विउवाहार मीसवीणु इअरे ॥
कम्मुरल डुगताइम, मणवयण सजोगि न अजोगि॥५०॥

साहारदुग–आहारकद्विक सहित	विणु–विना	मणवयण–मनयोग अने वचनयोग
पमत्ते–प्रमत्त गुणठाणे	इअरे–अप्रमत्त गुणठाणे	सजोगि–सयोगीगुणठाणे
ते–ते	कम्मुरल–कार्मण तथा औदारिकमिश्र	न–न होय
विउव्वाहारमीस–वैक्रिय तथा आहारकमिश्र	दुग–द्विक	अजोगी अयोगी गुणठाणे
	अताइम–पेहेला अने छेल्ला	

अर्थ –ए पूर्वोक्त अगिआरयोगने, आहारक अने आहारकमिश्र ए वे योगसहित करीये, तेवारे तेर योग प्रमत सय-

तनामे छठे गुणठाणे होय, (केमके अहींआं आहारकना बे अने वैक्रियना बे एवं चार योग लब्धि प्रत्यये होय त्यां लब्धि प्रयुंजतां प्रमत्त होय ते माटे) ते तेरयोग मांहेथी एक आहारकमिश्र अने बीजो वैक्रिय मिश्र (ए बे योग अप्रमत्त गुणठाणे न होय. जे भणी ए बे योग वैक्रिय तथा आहारक आरंभतां होय, तिहां तो लब्धि प्रयुंजे तेवारे प्रमत्ते होय पण अप्रमत्ते लब्धिनुं प्रयुंजवुं नथी तेथी प्रमत्ते होय पण ए बे शरीरछतां अप्रमत्तपणुं आवे ते अपेक्षाये वैक्रिय अने आहारक ए बे योग कह्या. अने एना मिश्र न होय. माटे) ए बे विना प्रमत्तथी इत्तर जे अप्रमत्त गुणठाणुं तेने विषे अगिआर योग होय. एक कार्मण अने बीजो औदारिक मिश्र ए ढिक तथा पेहेला अने छेल्ला ए बे मनयोग (सत्य मनोयोग अने असत्यामृषा मनोयोग) तथा एज बे वचनयोग एम सात योग सयोगी नामा तेरमे गुणठाणे होय (तीहां मनोयोग अनुत्तर विमानना देवता जेवारे संदेह प्रश्न पूछे तेवारे उत्तर आपवा निमित्ते तेजरुपे मनोद्रव्य परिणमावे त्यां मनोयोगनुं कार्य पडे अने वचनयोग धर्मदेशना कार्य काळे होय अने औदारिक मिश्र तथा कार्मण ए बे योग केवळ समुद्घातमांहे होय अने औदारिकयोग मूल होय अयोगी गुणठाणे चपलता टळी ते माटे एके योग न होय) ॥ ५० ॥

हवे चौद गुणठाणे बार उपयोग विवरे छे.

ति अनाण दुदंसाइम, दुगे अजय देसिनाण दंसतिगं॥
ते मीसि मीस समणा, जयाइ केवल दुअंत दुगे॥५१॥

तिअनाण-त्रणअज्ञान	देसि-देशविरति	समणा-मन पर्यव ज्ञान सहित
दुदस-चक्षु अचक्षु बे दर्शन	नाणदसतिग-ज्ञानदर्शन त्रिक	जयाइ-प्रमत्तादि
आइमदुगे-आदि बे गुण ठाणे	ते-ते	केवलदु-केवळज्ञान तथा केवल दर्शन
अजय-अविरति	मीसि-मिश्र	
	मीस-मिश्र गुणठाणे	अतदुगे-छेल्लां बे गुणठाणे

अर्थ-त्रण अज्ञान अने चक्षु अचक्षु ए बे दर्शन ए पांच उपयोग पेहेला बे (मिथ्यात्व अने सास्वादन) गुणठाणे होय. अने चोथे अविरति गुणठाणे तथा पांचमा देशविरति गुणठाणे (मति, श्रुत अने अवधि ए) त्रण ज्ञान तथा (चक्षु, अचक्षु अने अवधि ए) त्रण दर्शन एम छ उपयोग होय अने तेज त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञाननी साथे मिश्र थयेला एवा त्रण ज्ञान, तथा तेमज त्रण दर्शन एव छ उपयोग मिश्र गुणठाणे लाभे ते पूर्वोक्त छ उपयोगने मन पर्यवज्ञान सहित करीये एटले चार ज्ञान अने त्रण दर्शन एम सात उपयोग प्रमत्तादिक एटले प्रमत्त गुणठाणाथी मांडीने बारमा क्षीणमोह गुणठाणा सुधीना सात गुणठाणे वर्त्तता जीव सर्व विरति होय तेथी एने मन.पर्यवज्ञान पण लाभे माटे सात उपयोग होय अने सयोगी तथा अयोगी ए बे छेल्ला गुणठाणे केवळज्ञान अने केवलदर्शन ए बे उपयोग होय. शेष दश उपयोगी छाद्मस्थिक छे ते इहां न होय ॥ ५१ ॥

हवे सूत्र सम्मतपणे वेटला एक बोल अहींआ कर्मग्रंथेनथी मान्याते देखाडे छे.

सासण भावे नाणं, विउव्व गाहारगे उरल मिस्सं ॥
नेगिंदिसु सासाणो, नेहाहिं गयं सुअ मयंपि ॥ ५२ ॥

सासणभावे-सास्वादन भावे	उरलं-औदारिक [illegible]	नेहाहिगयं-अहीं अधिकार कर्युं नथी.
नाणं-मति श्रुतज्ञानी	नेगिंदिसु-एकेंद्रिय विषे	सुयमयं-सूत्रने विषे
विउव्वगाहारगे-वैक्रिय अने आहारक मांहि	नथी कर्यु	मान्यु छे पण
	सासाणो-सास्वादनपणुं	

अर्थः-सास्वादन भावे (सास्वादन गुणठाणे सास्वादन सम्यक्दृष्टि जीवो) सिद्धांत मांहि ज्ञान एटले श्रुतज्ञानी पण मान्या छे.

[illegible] सिद्धांतना वचन [illegible] कर्मग्रंथने [illegible] अभिप्राये ज्ञान नथी [illegible] [illegible] होय छे, ते सिद्धांतने [illegible] पण [illegible] छे. माटे [illegible] तथा [illegible] विषे [illegible] वैक्रिय शरीर अने आहारक [illegible] औदारिक साथे [illegible] औदारिक [illegible] ते योगनुं नाम औदारिक मिश्र [illegible] सिद्धांते [illegible] कह्युं छे

ते कर्मग्रंथ [illegible] अने कर्मग्रंथने अभिप्राये [illegible] शरीरने [illegible] वैक्रिय मिश्र कह्युं तथा आहारक [illegible] आहारक मिश्र कह्युं. पण औदारिक मिश्र न कह्युं [illegible] लब्धिने [illegible] शरीर [illegible] होय. [illegible] लब्धिने [illegible] शरीरने [illegible] होय ते माटे [illegible] तथा [illegible] पण वैक्रिय मिश्र अने आहारक मिश्र कह्या.

तथा सिद्धांतने विषे एकेंद्रिय मांहे सास्वादनपणुं नथी कह्युं. सास्वादनी जीव एकेंद्रिय मांहे न उपजे अने कर्मग्रंथवाले एकेंद्रिय मांहे सास्वादनपणुं कह्युं छे एनो हेतु कांइ जणातो नथी जे सिद्धांते स्पष्ट ना कह्यो छे; ते कर्मग्रंथवाले आदर्युं ए तत्त्व केवली जाणे ॥ ए त्रण बोल सर्व सूत्रे मान्या छे. पण एनुं अहीं ग्रहण नथी कर्युं ॥ ४९ ॥

हवे चौद गुणठाणे लेश्या कहे छे.

छसु सब्वा तेउ तिग, इगि छसु सुक्का अजोगि अल्लेसा॥
बंधस्स मिच्छ अविरइ कसाय जोग त्ति चउ हेउ ।५३।

छसु-छ गुणठाणाने विषे	सुक्का-शुक्ललेश्या	अविरइ-अविरतिपणु
सब्वा-सर्व	अजोगि-अयोगि	कसाय-कषाय
तेउतिग-तेजो, पद्म अने शुक्ल ए त्रण	अल्लेसा-लेश्या न होय	जोग-योग
इगि-एक (प्रमत्त) ने विषे	बंधस्स-बांधवाना	तिचउहेउ-इतिचार बंध हेतु कह्या
	मिच्छ-मिथ्यात्व	

अर्थः-पेहेलां छ गुणठाणाने विषे सर्व (छ) लेश्याओ होय, अने तेजो पद्म तथा शुक्ल ए त्रण लेश्या एक प्रमत्त सातमे गुणठाणे होय, अने आठमाथी तेरमा सुधीनां छ गुणठाणे एक शुक्ल लेश्याज होय, तथा अयोगी गुणठाणे योगना अभावे लेश्या न होय कर्म बांधवाना मूल चार कारणने (१) मिथ्यात्व (२) अविरति (३) कषाय (४) योग त्रण, इति ए चार मूल बंध हेतु कह्या ॥ ५३ ॥ अहींआ प्रमाद, विकथा वगेरेनो समावेश ए चार मध्ये थायछे

हवे ए मूल चार बंध हेतुना उत्तर भेद सत्तावन कहे छे

अभिगहिअ मणभिगहिआ, भिनिवेसिअ ससइअ मणाभोगा ॥ पण मिच्छ बार अविरइ, मण करणाऽनिअमु छ जीअवहो ॥ ५४ ॥

अभिगहिअ-अभिग्रहित	मणाभोगा-अनाभोग	करण-इंद्रियो
मणभिगहिअ अनभिग्रहित	पणमिच्छ एपाच मिथ्यात्व	अनिअमु-निवर्त्तावे नहीं
अभिनिवेसिअ-अभिनिवेश	बारअविरइ-बार अविरति	छजिअवहो-छ कायजीवनो वध
ससइअ-सांशयिक	मण-मननी अविरति	

अर्थः–अभिग्रहित, अनभिग्रहित, अभिनिवेश, सांशयिक अने अनाभोग ए पांच प्रकारे मिथ्यात्व, हवे बार अविरति कहेछे एक मननी अविरति (मनने विषे हिंसादिकनो संकल्प करे), तथा पांच इंद्रियोने पोतपोताना विषयथी निवर्त्तावानो परिणाम न करे ते पांच प्रकारे पंचेंद्रियनी अविरति, तथा जे छकाय जीवनो हींसाथी विरमवानो परिणाम नहीं ते छकायनी अविरति, ए बार अविरति थइ. अहींआं मृषावादादिक विरमण ते पण बार प्रकारनी अविरति मध्ये अंतर्भवेछे. कारण के ज्यां इंद्रियना विषयथी विरम्या त्यां मृषावादादिकथकी अवश्य विरम्या जाणवा. ॥ ५४ ॥

अभिग्रहित–परीक्षा कर्या विना पोताना धर्मनो कदाग्रह मूके नहीं.
अनभिग्रहित–सर्व धर्मने सरखा जाणे पण कोइने विशेष जाणे नहीं.
अभिनिवेश–पोतानो मत थापवा माटे सूत्र अर्थ विपरित करे,
सांशयिक–जिन वचनमां शंका धरतो रहे, अने गुरु गीतार्थनो सामग्री मल्या छतां पूछे नहीं,
अनाभोग–कोइपण दर्शनने भलु भुंडु जाणे नहीं जेम मूर्छा पामेलो मनुष्य कडवो मीठो रस न जाणे तेनी पेठे. एकेंद्रिय जीवो अनाभोगिक मिथ्यात्ववंत छे.

नव सोल कसाया पन, रि जोग इअउत्तरा उसगवन्ना ॥
इग चउ पण ति गुणेसु, चउ ति दु इग पच्चओ बंधो ५५

नवसोलकसाया–नव तथा सोल मळी पचीस कषाय	सगवन्ना–सत्तावन	चउतिदुइग–चार, त्रण, बे, एक,
पनरिजोग–पंदर योग	इगचउपणति–एक, चार, पांच, त्रण	पच्चओबंधो–प्रत्ययि ओज बंध होय
इअउत्तराउ–ए उत्तरभेद	गुणेसु–गुणठाणा साथे अनुक्रमे	

अर्थः—नव नोकषाय तथा सोळ अनतानुबंधीयादिक मळी पच्चीस कषाय, मनना चार, वचनना चार अने कायाना सात ए पदर योग, ए प्रमाणे पांच मिथ्यात्व, वार अविरति, पच्चीस कषाय अने पदर योग ए सत्तावन उत्तर भेद थया ए सत्तावनने आश्रव पण कहीए हवे चोद गुणठाणे मूल वध हेतु कहेछे. एक, चार, पांच अने त्रण एम तेर गुणठाणे अनुक्रमे चार त्रण वे अने एक प्रत्ययिओज वध होय ॥ ५५ ॥

१ मिथ्यात्व गुणठाणे—मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग ए चार मूल वध हेतु छे.

२ सास्वादन, ३मिश्र, ४अविरति अने ५ देशविरति—आ चार गुणठाणे अविरति, कषाय अने योग ए त्रिप्रत्ययिओ वध होय अहीं मिथ्यात्व टल्यु माटे मिथ्यात्व वध हेतु न होय

६ प्रमत्त, ७ अप्रमत्त, ८ अपूर्वकरण, ९ वादर सपराय अने १० सूक्ष्म सपराय—आ पाच गुणठाणे एक कषाय अने वीजो योग ए द्विप्रत्ययिओ वध जाणवो कारण के अहीं अविरतिपणु टल्यु छे

११ उपशातमोह, १२ क्षीणमोह अने १३ सयोगी—आ त्रण गुणठाणे एक योग प्रत्ययिओवध होय कारण के अहीं कषाय टल्यो छे,

१ अयोगी गुणठाणे ए चार माहेलो एक पण हेतु नथी माटे हेतुने अभावे वध पण न होय.

हवे एकसोने वीश उत्तरकर्म प्रकृति आश्रीने मूल वध हेतु विचारे छे

चउ मिच्छ मिच्छ अविरइ, पच्चइआ साय सोल पणतीसा॥
जोगविणु ति पच्चइआ, हारग जिण वज्ज सेसाओ ॥५६॥

चउ—चार	साय—शाता वेदनीय	पच्चइआ—प्रत्ययिक
मिच्छ—मिथ्यात्व गुणठाणे	सोल—सोळ	आहारग—आहारकद्विक
मिच्छ—मिथ्यात्व प्रत्ययिकी	पणतीसा—पात्रीस	जिण—जिन नाम कर्म
अविरइ—अविरति	जोगविणु—योगविना	वज्ज—वर्जीने
पच्चइआ—प्रत्ययिकी	ति—त्रण (वधहेतु)	सेसाउ—शेष

अर्थः–शातावेदनीय चारे बंध हेतुये करी बंधाय (एटले चार हेतु मांहेना गमे ते एक हेतुये करी शातावेदनीय बंधाय) सोळ प्रकृति मिथ्यात्वने उदये बंधाय. तथा पांत्रीस प्रकृति मिथ्यात्व तथा अविरतिना (ए बेमांथी गमे ते एकना) उदये बंधाय; तथा आहारकद्विक अने जिननाम वर्जीने शेष पांसठ प्रकृति योगत्रिना त्रण बंध हेतु (मिथ्यात्व, अविरति अने कषाय ए त्रण) प्रत्ययीकी बंधाय. ॥ ५६ ॥

अहींआं बोजा पदना त्रण पद साथे प्रथमनां त्रण पद जोडीए एटले एक शाता वेदनीय चार बंधहेतुये करी बंधाय, त्यां मिथ्यात्व गुणठाणे मिथ्यात्व प्रत्ययिकी बंधाय, (केमके वेदनीयनी प्रकृति मिथ्यात्वथी मांडी सयोगी गुणठाणा लगे बंधाय छे. ते माटे मिथ्यात्वे मिथ्यात्व प्रत्ययिकी, सास्वादन, मिश्र, अविरति अने देशविरति ए चार गुणठाणां सुधी अविरति प्रत्ययिकी अने प्रमत्तादि पांच गुणठाणे कषाय प्रत्ययिकी अने उपशांत मोहादिक त्रण गुणठाणे योग प्रत्यिकी बंधाय एम शातावेदनीयना बंध मांहे चार हेतु मांहेलो एक हेतु होय त्यां लगे पण बंधाय ते माटे चतुःप्रत्ययिकी बंधाय.) अने (नरकत्रिक, एकेंद्रियादिक चार जाति, थावरनाम, सूक्ष्मनाम, अपर्याप्तनाम अने साधारण नाम ए स्थावर चतुष्क हुंडसंस्थान, आतपनाम, नपुंसकवेद, छेवट्ठुं संघयण, अने मिथ्यात्व मोहनीय ए सोळ प्रकृति मिथ्यात्वने उदये बंधाय माटे) सोल प्रकृति मिथ्या प्रत्ययिकी कहेवाय. तथा (अनंतानुबंधीया चार, मध्य संस्थान चार, मध्यसंघयण चार, कुखगति, दोर्भाग्यत्रिक, तिर्यंचत्रिक, मनुष्यत्रिक, औदारिकद्विक, स्त्रीवेद नीचैर्गोत्र, थोणद्धीत्रीक, उद्योतनामकर्म. वज्रऋषभनाराच संघयण, अने अप्रत्याख्यानी चार कषाय ए पांत्रीस प्रकृति मिथ्यात्व गुणठाणे मिथ्यात्व प्रत्ययिकी बंधाय अने मिथ्यात्वथी आगले गुणठाणे अविरति प्रत्ययिकी बंधाय एम मिथ्यात्व तथा अविरति ए बे मांहेलो एक हेतु होय तो पण बंधाय परंतु ए विना ीजा हेतुये न बंधाय ते माटे ए पांत्रीस प्रकृति मिथ्यात्व तथा अविरति प्रत्ययिकी बधाय. तथा आहारकद्विक अने जिन नामकर्म वर्जीने शेष (ज्ञानावरणीयनी पांच, दर्शनावरणीयनी छ, अशाता वेदनीयनी एक, मोहनीयनी पंदर, नामनी

बत्रीश, उच्चगोत्रनी एक, अने अतरायनी पाच ए पासठ प्रकृति तथा देशविरति माहेथी जे सडसठ प्रकृतिनो बध छे ते माहेथी शातावेदनीय तथा जिननाम ए बे प्रकृति विना शेष पासठ प्रकृति जेवारे मिथ्यात्व गुणठाणे बधाय तेवारे मिथ्यात्व प्रत्ययिकी कहेवाय अने जेवारे सास्वादनादिक चार गुणठाणालगे बधाय तेवारे अविरति प्रत्ययिकी बधाय ए रीते) पासठ प्रकृति एक योग बधहेतु विना एक मिथ्यात्व बीजो अविरति अने त्रीजो कषाय ए त्रण बध हेतु प्रत्ययिकी बधाय आहारकशरीर अने आहारकअगोपाग ए बे प्रकृति निरवद्य योगरुप सराग सयम प्रत्यये करी बधाय तथा जिन नाम कर्मनो अरिहतादिक भक्तिरूप सम्यक्त्व कर्तव्ये करी बधाय, परतु प्रशस्त रागे करी बधाय तथी ए पण परमार्थे कषाय प्रत्ययिकी होय एम सर्व प्रत्ययिकी प्रकृति एकसोनेवीस बध योग्य छे, तेना मूल-बंध हेतु विचार्या, जीव विजयजोएता ए त्रण प्रकृति चार हेतु माहेला कोइ हेतुए न बंधाय, मात्र एक सम्यक्त्व गुण ज करी बधाय एम कह्यु छ "सम्मत्त गुण निमित्त तित्थयर सजमेण आहार" इति वचनात्

हवे चौद गुणठाणे उत्तर बधहेतु कहे छे.

पणपन्न पन्न तिअ छहि, अचत्त गुण चत्त छ चउ दुगवीसा
सोलसदस नवनवस, त्त हेउणो नउ अजोगमि ॥५७॥

पणपन्न–पचावन	छचउदुगवीसा–छवीस, चोवीस अने बावीस	सत्त–सात
पन्न–पचास		हेउणोनउ–हेतु नथी
तिअ–तेतालीस	सोलस–सोळ	अजोगमि–अजोगी गुण ठाणे
छहिअचत्त–छेतालीस	दस–दश	
गुणचत्त–ओगणचालीस	नव–नव	

अर्थ –मिथ्यात्व गुणठाणे पचावन सास्वादने पचास मिश्रे तेतालीस, अविरतिये छेतालीस, देशविरति गुणठाणे ओगण-चालीस, अने प्रमत्त, तथा अपूर्वकरण ए त्रण गुणठाणे अनु-क्रमे छवीस, चोवीस अने बावीस, अनिवृत्ति बादरे सोळ, सूक्ष्म सपराये दश, उपशात मोहे नव, क्षीण मोहे नव अने सयोगी

ए सात, बंध हेतु जाणवा. अयोगी गुणठाणे बंध हेतु नथी.॥५७॥

पणपन्न मिच्छिहारग, दुगूण सासाणि पन्न मिच्छ विणा ॥
मीस दुग कम्म अणविणु, तिचत्तमीसे अह छचत्ता ५८

पणपन्न—पंचावन	पन्न—पचास	अण—अनंतानु बंधी
मिच्छि—मिथ्यात्व गुणठाणे	मिच्छविणा—मिथ्यात्व न होय	विणु—विना
आहारगदुगूण—आहारक द्विके हीन	मीसदुग—मिश्रद्विक	तिचत्त—तेतालीस
		मीसे—मिश्र गुणठाणे
		अह—हवे
सासाणि—सास्वादने	कम्म—कार्मणयोग	छचत्ता—छेतालीस

अर्थः—मिथ्यात्व गुणठाणे ओघे सर्व जीवनी अपेक्षाये आहारकद्विके हिन पंचावन कर्मबंधना हेतु होय (केमके तेने विशिष्ट चारित्र नथी. तेथी आहारक लब्धि न होय, माटे आहारक शरीर अने आहारकमिश्र ए बे योग न होय शेष मिथ्यात्व पांच अविरति बार अने कषाय पच्चीस तथा योग तेर एम पंचावन कर्मबंधना हेतु पामीये) अने बीजे सास्वादन गुणठाणे पांच मिथ्यात्व न होय माटे पच्चास बंध हेतु ओघे होय, अने मिश्रद्विक (औदारिक मिश्र अने वैक्रिय मिश्र) तथा त्रीजो कार्मण, ए त्रण योग अने अनंतानुबंधिया चार कषाय ए सात कर्मबंध विना शेष तेंतालीस बंध हेतु ओघे मिश्र गुणठाणें होय. हवे चोथे गुणठाणे छेतालीस बंध हेतु होय (ते आगली गाथामां कहेशे) ॥ ५८ ॥

अहींआं मिथ्यात्व गुणठाणे विशेषादेशे एक जीवने एक समये जघन्यपदे दश बंधहेतु होय अने उत्कृष्टा अढार कर्मबंधना हेतु होय अने सास्वादन गुणठाणे जघन्यपदे दश अने उत्कृष्टा सत्तर बंधहेतु पामीये अने मिश्र गुणठाणे जघन्यपदे नव अने उत्कृष्टा सोल बंधहेतु पामीये तेनो विस्तार (भांगा सहित) भीमसी माणेकवाला प्रकरण रत्नाकर भाग चोथामांथी जोइ लेवो.

सडुमीस कम्म अजए, अविरइ कम्मुरल मीस वी कसाए
मुत्तु गुण चत्त देसे, छवीस साहार दु पमत्ते ॥ ५७ ॥

स-सहित	कम्म-कार्मणयोग	गुणचत्त-ओगणचालीस
दुमीस-बे मिश्र	उरलमीस-औदारिकमिश्र	देसे-देशविरति गुणठाणे
कम्म-कार्मणयोग	बीकसाए-बीजा चार कपाय	छवीस-छवीस
अजए-अविरति गु०		साहारदु-आहारकद्विक
अविरइ-अविरति	मत्तु-टाळीए	पमत्ते-प्रमत्त गुणठाणे

अर्थ.-(मिश्र गुणठाणे तेतालीस हेतु कह्या तेने) एक वैक्रियमिश्र, बीजो औदारिक मिश्र अने त्रीजो कार्मण ए त्रण योग सहित करीये तेवारे अविरति गुणठाणे छेतालीस बंध हेतु ओघे होय, (कारण के अपर्याप्तावस्थाये पण ए गुणठाणु होय) (अने विशेपादेशे तो जघन्यथी मिश्रनी परे नव बंध हेतु, अने उत्कृष्टा सोल होय अने बंध स्थानक मिश्रनी परे आठ होय) हवे देशविरति गुणठाणे ए छेतालीसमाथी, एक त्रसकायनी अविरति, कार्मण तथा औदारिक मिश्रयोग, तथा बीजा अप्रत्याख्यानावरण चार कपाय, ए सात टाळीए तेवारे ओगणचालीस बंध हेतु होय तथा प्रमत्त गुणठाणे छवीस बंध हेतु होय ते एवी रीते के ओगणचालीसने आहारक तथा आहारक मिश्र सहित करता एकतालीस थया अने तेमाथी पंदर ओछा करवा ते आगली गाथाए कहेवाशे ॥ ५७ ॥

विशेपादेशे अविरति गुणठाणे जघन्यथी मिश्रनी पेरे नव बंधहेतु होय अने उत्कृष्टा सोल होय त्यां बंध स्थानक मिश्रनीपेरे आठ होय, अने देशविरति गुणठाणे विशेपादेशे जघन्यपदे, पांचकाय मध्ये एक कायनो बंध, इंद्रियनी अविरति मध्ये एकेंद्रियनी अविरति, एक युगल, एकवेद, चार कपाय मध्ये एक कपायना के भेद अने अगिआर योग मध्ये एक योग एम आठ बंधहेतु लाभे,

अविरइ इगार तिकसा, यवज्ज अपमत्ति मीस दुग रहिआ
चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वि आहारा ॥९०॥

अविरइ—अविरति	अपमत्ति—अप्रमत्त गु०	पुण—वली
इगार—अगियार	मीसदुग—मिश्रद्विक	दुवीस—बावीस
तिकसाय—त्रीजा चार कषाय	रहिआ—रहित	अविउव्वि आहारा—वैक्रिय अने आहारक ए बे योग न होय.
वज्ज—वर्जवा	चउवीस—चोवीस	
	अपुव्वे—अपूर्वे	

अर्थः—(पांचइंद्रिय, छठुं मन तथा पांच थावर ए) अगीआर अविरति, तथा त्रीजा प्रत्याख्यानावरणीय चार कषाय, ए पंदर बंधहेतु वर्जवा तेवारे छवीस बंधहेतु प्रमत्त गुणठाणे होय, अप्रमत्त गुणठाणे आहारक मिश्र अने वैक्रिय-मिश्र ए बे योग न होय. (कारण के आहारक तथा वैक्रिय शरीर करवा मांडतां तेनी पर्याप्तिये अपर्याप्ताने ए योग होय, त्यांतो लब्धि प्रयुजवा त्रणी प्रमत्त होय.) तेथी (कषाय तेर अने योग अगिआर एम) चोवीस बंधहेतु होय, तथा आठमा अपूर्वकरण गुणठाणे वैक्रिय अने आहारक ए बे योग न होय त्यारे (संज्वलन चार कषाय, वेद त्रण, हास्यादिक छ, तथा योग नव मली) बावीस बंध हेतु होय. ॥९०॥

प्रमत्त गुणठाणे विशेषादेशे त्रणवेद मध्ये एक वेद, संज्वलनना चार कषाय मध्ये पेहेलो अथवा बीजो एक कषाय, हास्यादिक युगल मध्ये एक युगल, तेर योग मध्ये एक योग ए पांच हेतु जघन्यपदे एक जीवने एक समये लाभे अने उत्कृष्टा सात होय, त्यां स्त्रीवेदे आहारक अने आहारक मिश्र ए बे योग नहोय, अप्रमत्त गुणठाणे विशेषादेशे एक जीवने एक समये जघन्यपदे संज्वलनो एक कषाय, एक वेद, एक युगल, अने अगिआर योग मध्ये एक योग एम पांच बंध हेतु होय.

छ्ठ हास सोल बायरि, सुहुमे दस वेअ संजलण तिविणा
खीणु वसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥६१॥

अछहास–हास्यादिक छ	वेअ–वेद त्रण	अलोभा–लोभ न होय
सोल–सोल	संजलन–सञ्चलन त्रण	सजोगि–सयोगी गुणठाणे
बायरि–बादर संपरायें	विणा–विना	पुव्वुत्त–पूर्वोक्त
सुहुमे–सूक्ष्म संपराये	खीणुवसति–क्षीण मोह तथा उपशांत मोहे	सगजोगा–सातयोग
दस–दश		

अर्थ–नवमा बादर संपराये हास्यादिक छ नोकषाय न होय तेवारे बावीसमाथी छ काढता, सात कषाय अने नवयोग एव सोल बंधहेतु होय, तथा सूक्ष्मसंपराय नवमा गुणठाणे वेद त्रण तथा संज्वलन क्रोध, मान अने माया ए छ विना दश (एक लोभ अने नव योग) बंधहेतु होय. अने क्षीणमोह तथा उपशातमोहे लोभविना नव योग ज बंधहेतु होय तथा तेरमा सयोगी गुणठाणे पूर्वे कह्या ते प्रमाणे बे मनना बे वचनना अने त्रण कायाना एव सात बंधहेतु सामान्ये होय, ॥ ६१ ॥

नवमा गुणठाणे विशेषादेशे जघन्यपदे एक जीवने, सञ्चलनो एक कषाय तथा एक योग ए बे बंध हेतुना स्थानक होय अने उत्कृष्टे एक वेद सहित त्रण होय, अने सूक्ष्म संपराये जघन्यपदे एक जीवने एक समये बे बे बंध हेतु होय अने उत्कृष्टे पण एक सञ्चलन लोभ अने एक योग ए बे बंध हेतुज होय. अगीआरमे तथा बारमे गुणठाणे विशेषादेशे एक जीवने एक समये जघन्यपदे एक योगज बंध स्थानक होय अने तेरमे गुणठाणे पण एक योगज बंध हेतु स्थानक होय

ए सत्तावन बंधहेतुये करी आठ कर्मनो बंध होय ते वार पछी ते बांध्यां कर्मनो विपाक काले उदय होय, ते उदीरणा करणे करी उदयावली माहे प्रवेशीये तेने उदीरणोदय कहीए अने ते सर्व कर्म सत्ताये होय, ते भणी चौद गुणठाणे ज्यां जेटला बंधादिकनां स्थानक संभवे ते कहे छे.

અપમત્તંતા સત્ત, ઠ્ઠમીસ અપુવ્વ બાયરા સત્ત ॥
બંધઇ છસ્સુહુમોએ, ગ મુવરિમાऽ બંધગા જોગી ॥૬૨॥

अपमत्तंता–अप्रमत्त गुणठाणा पर्यंत	बायरा–बादर गुणठाणे	एगं–एकनो
सत्तट्ठ–सात आठनो बंध	सत्त–सातनो	उवरिमा–उपला गुणठाणे
मीस–मिश्र गुणठाणे	बंधइ–बांधे	अबंधग–अबंधक
अपुव्व–अपूर्व गुणठाणे	छ–छनोबंध	अजोगी–अयोगी गुण०
	सुहुमो–सूक्ष्मसंपराये	

અર્થઃ–મિશ્રવિના મિથ્યાત્વથી માંડી અપ્રમત્ત ગુણઠાણાના અંતલગે (આયુઃકર્મ બાંધેતેવારે) આઠ કર્મનો બંધ હોય, અને આયુ ન બાંધે તેવારે સાત કર્મનો બંધ હોય, ત્રીજું મિશ્ર, આઠમું અપૂર્વકરણ અને નવમું બાદરસંપરાય એ ત્રણ ગુણઠાણે (આયુ-બંધ ન હોય) તેથી સાત કર્મનો બંધ હોય, અને દશમા સૂક્ષ્મ-સંપરાયે એક આયુ અને બીજું મોહનીય એ બે કર્મ અતિવિશુદ્ધ અધ્યવસાયપણી ન બંધાય તેથી છ કર્મ બાંધે, અને તેથી ઉપલા ઉપશાંતમોહ, ક્ષીણમોહ અને સયોગી એ ત્રણ ગુણઠાણે એક વેદનીય કર્મ બાંધે તથા અયોગી ગુણઠાણે કોઇ કર્મ ન બાંધે તે માટે અબંધક હોય. ॥ ૬૨ ॥

दरेक गुणठाणे उदय अने सत्तानां स्थानक कहेछे.

આસુહુમં સંતુદએ, અઠવિ મોહવિણુ સત્ત ખીણંતિ ॥
ચઉ ચરિમ દુગે અઠ્ઠઉ, સંતે ઉવસંતિ સંતુદએ ॥૬૩॥

आसुहुमं–सूक्ष्म संपराय गुणठाणा लगी	सत्त–सात	अट्ठउसंते–आठ तथा सातनी
संतुदए–सत्ता तथा उदय	खीणंति–क्षीण मोहे	संतुदए–सत्ता तथा उदय
अट्ठवि–आठनो	चउ–चार	उवसंति–उपशांत मोहे
मोहविणु–मोहनी विना	चरिम दुगे–छेला बे गुणठाणे	

अर्थः-मिथ्यात्वथी मांडीने दशमा सूक्ष्मसंपराय लगे आठे कर्मनो उदय तथा आठे कर्मनी सत्तापण होय, अने एक मोहनीय विना क्षीणमोहनामा बारमे गुणठाणे सात कर्मनो उदय तथा सात कर्मनी सत्ता होय. (कारण के त्यां वीतराग छे ते माटे मोहनीयनो उदय न होय तथा सत्तापण न होय) अने छेल्लां बे गुणठाणे नाम, आयु, गोत्र अने वेदनी ए चार कर्मनो उदय तथा चार कर्मनी सत्ता पण होय अने अगीआरमा उपशांतमोहे मोहनीयनो उदय नथी तेथी मोहनीयविना सात कर्मनो उदय अने आठ कर्मनी सत्ता होय कारण के अहीं मोहनीय उपशम्युं छे तेथी उदय नथी पण सत्तामां छे ॥६३॥

हवे दरेक गुणठाणे उदीरणा स्थानक कहे छे.

उइरंति पमत्तता, सगट्ठ मीसट्ठ वेअ आउविणा ॥
छग अपमत्ताइ तउ, छ पंच सुहुमो पणु वसंतो ॥६४॥

उइरंति-उदीरणा	वेअ-वेदनीयकर्म	त्रण गुणठाणे
पमत्तता-प्रमत्त गुणठाणा	आउ-आयु कर्म	छ पच-छ तथा पांच
लगी	विणा-विना	सुहुमो-सूक्ष्म संपराये
सगट्ठ-सात, आठ	छग-छ	पण-पांच
मीसट्ठ-मिश्रे आठ	अपमत्ताइनओ-अप्रमत्तादि	उवसंतो-उपशांतमोहे

अर्थ -(मिश्र विना मिथ्यात्वथी मांडीने) प्रमत्त गुणठाणा लगे पांच गुणठाणे आठ कर्मनी उदीरणा होय, तेमां छेल्ली आवलीये आयुकर्मनी उदीरणा होय तेवारे शेष सात कर्मनी उदीरणा होय. मिश्र गुणठाणे काल न करे तेथी आयुनी अत्यावलिका पण त्यां न होय तेथी त्यां आठ कर्मनोज उदीरक होय. अने अप्रमत्त, अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति

ए त्रण गुणठाणे एक वेदनीय वीजुं आयु ए वे कर्मनी उदीरणा न होय (केवळ उदयज होय) तेथी ते विना शेष ७ कर्मनी उदीरणा होय. अने दशमा सूक्ष्मसंपराये मात्र एक आवली वाकी रहे त्यां सुधी ७ कर्मनी उदीरणा होय अने छेल्ली आवलीये मोहनीयनी उदीरणाटले तेवारे शेष पांच कर्मनी उदीरणा होय. तथा उपशांतमोहे (पण मोहनो उदय नथी तेथी) पांच कर्मनी उदीरणा होय. ॥ ६४ ॥

पण दो खीण दु जोगी,ऽणुदीरगु अजोगी थोव उवसंता
संख गुण खीण सुहुमा, निअट्टि अपुव सम्म अहिआ ॥

पण दो–पांच तथा वे	अजोगी–अयोगी गु०	सुहुमा–सूक्ष्मसंपराय
खीण–क्षीणमोहे	थोव–थोडा	निअट्टि–निवृत्तिवादर
दु–(एज) वे कर्मनी	उवसंता–उपशांतमोहे	अपुव्व–अपूर्वकरण
जोगी–सयोगीए	संखगुण–संख्यातगुणा	सम–सरखा
अणुदीरगु–अनुदीरक	खीण–क्षीणमोहे	अहिआ–विशेषाधिक

अर्थः–वारमा क्षीणमोह गुणठाणे पांच तथा [1]वे कर्मनी उदीरणा, सयोगी गुणठाणे अनुदीरक होय. (हवे अल्पबहुत्व कहेछे) उपशांतमोह गुणठाणे वर्त्तता जीव सर्वथकी थोडा होय, (कारण के उपशम श्रेणीना आरंभक उत्कृष्टपदे चोपन

१ पांच कर्मनी उदीरणा क्षीण मोह गुणठाणानी अंत्यावळिका थाकता लगे होय अने छेल्ली आवलीये ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय ए त्रण कर्मनी उदीरणा टळे त्यारे शेष वे कर्मनी उदीरणा होय.

मिथ्यात्व, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त अने सयोगी ए छ गुणठाणे वर्त्तता जीव, लोक मध्ये सदासर्वदा पामीए तेथी ए छ गुणठाणां अशून्य छे. अने शेष आठ गुणठाणांना जीव केवारेक लोक मध्ये पामीये. अने कोइ वारे शून्यपणुं पण पामीये, तेथी तेमनुं अल्प वहुत्व अनियतपणे होय.

जीव पामीये), तेथी संख्यातगुणा अधिक बारमा क्षीणमोह गुणठाणे वर्त्तता जीव, (कारण के क्षपकश्रेणी पडिवजता जीव एकसोने आठ पामीये ते अपेक्षाये उत्कृष्टपणे लेवा अन्यथा विपरीतपणे होय) तथा, दशमु सूक्ष्मसपराय, नवमु निवृत्ति बादर, अने आठमु अपूर्वकरण ए त्रण गुणठाणाना जीव माहोमाहे सरखा जाणवा अने क्षीणमोहथकी विशेषाधिक जाणवा. (एटले ए त्रण गुणठाणे वर्त्तताजीव उत्कृष्टपदे एकसो बासठ पामीए) ॥ ६५ ॥

जोगि अपमत्त इयरे, संखगुणा देस सासणा मीसा ॥
अविरइ अजोगि मिछा, असंख चउरो दुवेणता ।६६।

जोगि–सयोगी गुणठाणे	सासणा–सास्वादन	मिछा–मिथ्यादृष्टि
अपमत्त–अप्रमत्त गु०	मीसा–मिश्रगुणठाणाना	असख–असख्यातगुणा
इयरे–इतर प्रमत्त गु०	अविरइ–अविरति	चउरो–चारपदे
सखगुणा–सख्यातगुणा	अजोगी–अयोगी	दुवेणता–बे पदे अनंता
देस–देशविरति		

अर्थ –सयोगी गुणठाणे वर्त्तताजीव सख्यातगुणा जाणवा. (कारण के कोटी पृथक्त्व उत्कृष्टा पामीए) तेथी अप्रमत्त गुणठाणे वर्त्तता जीव सख्यातगुणा (कोटी सहस्र पृथक्त्व प्रमाण) जाणवा, तेथी इतर प्रमत्त गुणठाणाना जीव सख्यातगुणा जाणवा, तेथी देशविरति गुणठाणाना जीव असख्यातगुणा, तेथी सास्वादन गुणठाणाना जीव उत्कृष्टपदे असंख्यातगुणा होय अने कोइवारे न पण होय, अने जघन्यथी कोइवारे बे त्रण एम पण होय, तेथी मिश्रगुणठाणाना जीव असख्यातगुणा होय, तेथी अविरति गुणठाणाना जीव असख्यातगुणा छे. तेथी

अयोगी गुणठाणाना जीव अनंतगुणा छे, तेथी मिथ्यादृष्टि जीव अनंतगुणा छे. ए रीते चार गुणठाणे असंख्यातगुणा अने बे गुणठाणे अनंतगुणा कहीये. ॥ ६६ ॥

उवसम खय मीसोदय, परिणामा दु नव ठार इगवीसा ॥
तिअ भेअ सन्नि वाइअ, सम्मं चरणं पढम भावे॥६७॥

उपसम–औपशमिक	परिणामा–पारिणामिक	सम्मं-सम्यक्त्व औपशमिक
क्षय–क्षायिक	दुनवठारइगवीसा तिअभेअ } बे नव अढार एकवीस अने त्रण भेद	चरणं–चारित्र औपशमिक
मीस–मिश्र		पढमभावे-प्रथम औपशमिक भावना बे भेद
उदय–औदयिक	सन्निवाइअ–सन्निपात	

अर्थः–औपशमिक, क्षायिक, मिश्र (क्षायोपशमिक), औदयिक तथा पारिणामिक भाव एना अनुक्रमे सादि अनादि बे, नव, अढार, एकवीस अने त्रण भेद जाणवा. अने तेमांना बे त्रण चार भाव एकठा मळे तेने सन्निपातिक भाव जाणवो. तेमां पेहेला भावना सम्यक्त्व अने चारित्र ए बे भेद छे.

१ मोहनीयना उपशमथी प्रगट्यो एवो जे जीव स्वभाव तेनुं नाम औपशमिक भाव.

२ तथा जे कर्मना क्षय थकी एटले मूल उच्छेदथी थयो एवो जे जीव स्वभाव ते क्षायिक.

३ तथा जे उदय आव्यां करमनो क्षय कर्यो अने जे उदय नथी आव्यां तेना अनुदये रसने अवेदवे तेना अंतराले प्रगट्यो एवो जे जीव स्वभाव तेने क्षायोपशमिक अथवा मिश्रभाव कहीए.

४ कर्मना उदयथी थयो जे जीवनो पर्याय ते औदायिक भाव जाणवो.

५ औदयिक स्वभाव पणे परिणमवुं, ते पारिणामिक भाव.

६ तेमांना बे त्रण चार भाव एकठा मळे ते सन्निपातिक भाव.

औपशमिक भावना बे भेद-(१) औपशमिक सम्यक्त्व एटले अनंतानुबंधी चार तथा दर्शन मोहनीय त्रण ए सात प्रकृतिनो रस तथा प्रदेश नहोय ते औपशमिक कहीये अने तेथी प्रगटीजे तत्त्वरुचि तेने औपशमिक सम्यक्त्व कहीए तथा शेष पचीस मोह प्रकृतिनो उपशम थवाथी जे स्थिरता रूप चारित्र प्रगट थाय ते बीजु औपशमिक चारित्र ॥

बीए केवल जुअलं, सम्म दाणाइ लद्धि पण चरणं ॥
तइए सेसुवओगा, पण लद्धी सम्म विरइ दुग ॥६८॥

बीए-बीजा क्षायिकना	चरण-चारित्रगुण	पणलद्धी-पाच लब्धि
केवलजुअल-केवलयुगल ज्ञान तथा दर्शन	तइए-त्रीजा क्षायोपशमिकभावे	सम्म-क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
सम्म-सम्यक्त्व	सेसुवओगा-बाकीना दश उपयोग	विरइदुग-विरतिद्विक(देशविरति, सर्व विरती)
दाणाइ-दानादि		
लद्धिपण-पांच लब्धि		

अर्थ -हवे बीजा क्षायिक भावना केवल युगल (२), (ए बे उपयोग) क्षायक सम्यक्त्व (१), पाच लब्धि (५), तथा क्षायिक चारित्र (१) ए नव भेद छे तथा त्रीजा क्षायोपशमिक भावना अढार भेद कहेछे (केवलयुगल विना) शेष दश उपयोग (१०), तथा दानादिक पाच लब्धि (५) (छद्मस्थनी), क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (१), अने विरतिद्विक (२), ए अढार ॥६८॥

अन्नाण मसिद्धत्ता, ऽसंजम लेसा कसाय गइवेआ ॥
मिच्छे तुरिए भवा, ऽभव्वत्त जिअत्त परिणामे ॥६९॥

अन्नाण-अज्ञान	गइ-गति(चार)	भव्वा-भव्य
असिद्धत्ता-असिद्धत्व	वेआ-वेद(त्रण)	अभव्वत्त-अभव्यत्व
असंजम-असंयम	मिच्छे-मिथ्यात्व	जिअत्त-जीवत्व
लेसा-लेश्या (छ)	तुरिए-चोथाना	परिणामे-पारिणामिक
कसाय-कषाय (चार)		

अर्थः—अज्ञान, असिद्धत्व, असंयम, ठलेश्या, चार कषाय, चारगति, त्रणवेद, तथा मिथ्यात्व एम एकवीस न्नेद चोथा औदयिक न्नावना ठे; तथा न्नव्य, अन्नव्य अने जीवत्व ए त्रण न्नेद पारिणामिक न्नावना ठे ॥ ६ए ॥

मिथ्यात्वीनुं ज्ञान ते अज्ञान, जीवने संसारी पर्यायपणुं ते असिद्धत्व, अप्रत्याख्यानावरणी चार कषायने उदये असंयमपणुं.

जे मुक्ति जावा योग्य जीवस्वभाव ते भव्यपणुं ए सहज सिद्ध छे. मुक्ति जावाने अयोग्य जे पर्याय ते अभव्यत्वनाम अनादि अनंत पारिणामिकभाव अने द्रव्यप्राण तथा भावप्राण धारण स्वभाव जे जीवपर्याय ते जीवत्व, ए पण अनादि अनंत सिद्ध छे. परंतु कोइनो कर्यो नथी.

चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहि चउसु खइएहिं ॥
उवसम जुएहि वा चउ, केवलि परिणामुदय खइए ॥ ७० ॥

चउ—चार भेद	चउसु—चारने	चउ—चार गतिनाजीवने
चउगइसु—चारगतिआश्री	खइएहिं—क्षायकभावे	केवलि—केवलिने
मीसग—मिश्रभावे	उवसमजुएहिं—उपशम समकितयुक्त	परिणामुदयखइए—पारिणामिक, औदयिक अने क्षायिकभावे
परिणामुदएहि—पारिणामिक तथा औदयिकभावे	वा—अथवा	

हवे ए औपशमादिक पांच भावना द्विक संयोगे दशभंग अने त्रिक संयोगे दशभंग तथा चतुःसंयोगे पांचभंग अने पंच संयोगे एकभंग मलीने छव्वीस भांगा थाय ते नीचे प्रमाणे.

द्विक संयोगीआ दशभंग.	त्रिक संयोगीआ दश भंग.	चतुःसंयोगी आ पंचभंग.
१ औपशमिक, क्षायक	१ औपशमिक. क्षायक, मिश्र	१ औपशमिक, मिश्र, क्षायक अने औदयिक
२ औपशमिक, मिश्र	२ औपशमिक, क्षायक, औदयिक	२ औपशमिक, मिश्र, क्षायिक अने पारिणामिक
३ औपशमिक, औदयिक	३ उपशमिक, क्षायक,	३ औपशमिक, क्षायिक,
४ औपशमिक, पारिणामिक		

५ क्षायक, मिश्र
६ क्षायक, औदयिक
७ क्षायक, पारिणामिक
८ मिश्र, औदयिक
९ मिश्र, पारिणामिक
१० औदयिक, पारिणामिक

ते मध्ये सातमो भांगो सिद्धनो वसतो जाणवो, शेष नव भागा शून्य छे.

पारिणामिक
४ उपशम, मिश्र, औदयिक
५ उपशम, मिश्र, पारिणामिक
६ उपशम, औदयिक, पारिणामिक
७ क्षायिक, मिश्र, औदयिक
८ क्षायिक, मिश्र, पारिणामिक
९ क्षायिक, औदयिक, परिणामिक
१० मिश्र, ओदयिक, पारिणामिक

ते मध्ये नवमो भांगो केवलीने होय अने दशमो भांगो चार गतिना जीवने होय ते विना शेष आठ भग शून्य छे

औदयिक अने पारिणामिक
४ औपशमिक, मिश्र, औदायिक अने पारिणामिक
५ क्षायक, मिश्र, औदयिक अने पारिणामिक

ते पांच मध्येथी एक चोथो भग चार गतिना उपशम समकित दृष्टि जीवने होय अने पांचमो भांगो चार गतिना क्षायक समकित दृष्टिजीवने होय बाकीना शून्य छे

छव्वीसमो पच सयोगीओ (औपशम, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, अने पारिणामिक) सानिपातिक भाव ते, उपशम श्रेणीए वर्त्तना मनुष्यने नवमे, दशमे, अने अगीआरमे, ए त्रण गुणठाणे होय

उपरना छव्वीसमाथी जे त्रण भागा चार गतिना जीव आश्री कह्या छे. तेना ४×३=१२ थाय ते आ गाथामा कही देखाडे छे

अर्थ.–(तेमा त्रिक सयोगीओ दशमो भग मिश्र औदयिक अने पारिणमिक) तेना चार गतिआश्री चार भेद थाय (मनुष्य गतिमा मनुष्य) मिश्रभावे पारिणामिक भावे अने औदयिक भावे होय (ते एक भग, तेवीज रीते बीजी त्रण गतिआश्री त्रण, एम चार भग थया) तथा तेज चार गतिना

(सन्नि पंचेंद्रि) जीवने (पूर्वोक्त त्रण ज्ञावनी साथे चोथो) क्षायिक ज्ञाव मेलवतां चतुःसंयोगीओ ज्ञांगो थाय (तेना चार गतिआश्री चार ज्ञांगा) तेने उपशम सम्यक्त्व सहित करीए त्यारे पंच संयोगीओ ज्ञांगो थाय. (तेना चार गतिआश्री चार ज्ञांगा एम बार ज्ञंग थया) तथा केवलीने एक पारिणामिक, औदयिक अने क्षायिक ए त्रिकसंयोगीओ एक ज्ञांगो होय ए तेर ज्ञंग थया ॥ ७० ॥

उपर चारगति आश्री जे त्रिकसंयोगीया, चतुः संयोगीआ अने पंच संयोगीआ भाव कह्या, तेमांना दरेक भावना कया कया भेद कइ गति आश्री होय ते कहे छे.

(१) मिश्रभावे—ज्ञान, अज्ञान अने दर्शन लब्धि. (२) पारिणामिकभावे—जीवपणुं तथा भव्यपणुं (३) औदयिकभावे—(जे गति आश्री होय ते) गति, लेश्या, वेद अनेकपाय (४) क्षायिकभावे—क्षायिक सम्यक्त्व (५) औपशमिकभावे—औपशमिक सम्यक्त्व.

खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगुवसम सेढीए ॥
इअ पनर सन्निवाइअ, ज्ञेआ वीसं असंज्ञविणो ॥७१॥

खय—क्षायिकभावे	पण—पांच	इअपनर—ए पंदर
परिणामे—पारिणामिकभावे	जोग—मेळाप	सन्निवाइय-सान्निपातिकना
सिद्धा—सिद्धना जीव	उवसमसेढीए—उपशमश्रेणीये	भेआवीसं—वीसभेद
नराण—मनुष्य		असंभविणो—असंभावी

अर्थः—सिद्धना जीवने (द्विक संयोगीआ मांहेलो सातमो क्षायिक पारिणामिक ए ज्ञांगो पामीए, जे ज्ञणीसिद्धने) ज्ञान, दर्शन अने सम्यक्त्व क्षायिक ज्ञावे छे, अने जीवत्वपणुं पारिणामिक ज्ञावे छे (सिद्धने ए बेनो मेळापक छे, बीजो कोय न संज्ञवे ए चौद ज्ञांगा थया) तथा जे (उपशम सम्यक्दृष्टि)

मनुष्य उपशम श्रेणी करे, तेने उपशम श्रेणीने विषे (नवमे दशमे अने अगीआरमे गुणठाणे एक जीवने विषे एक समये) पाच भावनो मेळाप होय¹, ए पदर भेद सान्निपातिकना ठता होय. शेष वीशभागा असभावी एटले शून्य ठे, कारण के ते भांगा कोइ जीव पामता नथी ॥ ७१ ॥

१ अहींआ उपशमभावे चारित्र होय, क्षायकभावे सम्यक्त्व होय, मिश्रभावे ज्ञानदर्शनादिक होय, औदयिकभावे मनुष्यगत्यादिक होय, अने पारिणामिक भावे जीवत्वादिक होय.

हवे ए औपशमादिक पांचभाव आठ कर्मने विषे विवरीने देखाडे छे

मोहोवसमो मीसो, चउ घाइसु अठ कम्मसु असेसा ॥
धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइ एवि ॥७२॥

मोहोवसमो–मोहनीयनो उपशम होय	अठकम्मसु–सर्व आठे कर्मने विषे	पारिणामिअभावे–पारिणामिकभावे
मीसो–क्षायोपशम	असेसा–शेष रह्या ते	खधा–खध
चउघाइसु–चार घाति कर्मने विषे	धम्माइ–धर्मास्तिकायादि	उदएवि–औदयिकभावे

अर्थ.–मोहनीय कर्मनो उपशम होय तथा क्षयोपशम चार घातीआं कर्मनो होय, शेपरह्या जे त्रण भावते आठे कर्मने विषे होय, तथा अजीवनी अपेक्षाये (धर्मास्तिकायादि पाच द्रव्य पारिणामिक भावे ठे, तेमा (अनतप्रदेशी) पुद्गल स्कध ते औदयिक भावे पण होय ॥ ७२ ॥

मोहनीयकर्मने विषे पांच भाव होय अने ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अने अंतराय ए त्रण कर्मने विषे एक ओपशमिक विना चार भाव होय छे. तथा नाम, गोत्र, आयु अने वेदनीय ए चार कर्मने विषे एक क्षायिक, बीजो औदयिक अने त्रीजो पारिणामिक ए त्रण भाव पामीए

अजीवनी अपेक्षाये पांच अजीवद्रव्य अनादि पारिणामिक भावे छे केमके ते पोतपोताने भावेज परिणम्या छे, पण परभावे परिणमता नथी ते मांहे पण पुद्गल द्व्यणुकादिक खध ते सादि पारिणामिक भावे होय अने अनंत प्रदेशी पुद्गलस्कंध ते औदयिक भावे पण होय.

हवे एक जीवने जे जे गुणठाणे जेटला जेटला भाव होय त्यां त्यां तेटला भाव कहे छे. मूलभावनी अपेक्षाये मिथ्यात्व सास्वादन अने मिश्र ए त्रण गुणठाणे मिश्रभावे अज्ञानादि दश उपयोग होय अने औदयिकभावे गत्यादिक होय. तथा पारिणामिक भावे जीवत्वादिक होय. ए त्रिक संयोगीओ भांगो होय एटले क्षायोपशिमक, औदयिक, अने पारिणामिक ए त्रण भाव होय.

सम्माइचउसु तिग चउ, भावा चउपणु वसामगुवसंते॥
चउखीणाऽपुव्वे ति, न्निसेस गुणठाणगे गजिए ॥७३॥

सम्माइ–सम्यक्त्वादि	उवसामग–नवमुं तथा दशमुं गुणठाणुं	अपुव्वे–अपूर्वकरणे
चउसु–चारने विषे	उवसंते–उपशांतमोहे	तिन्नि–त्रणभाव
तिगचउभावा–त्रण अथवा चारभाव होय	चउ–चारभाव	सेसगुणठाणगे–शेष पांच गुणठाणे
चउपण–चार तथा पांच	खीणा–क्षीणमोहे	एगजीए–एक जीवनेविषे

अर्थः–सम्यक्त्वादि चार गुणठाणे (एटले चोथे, पांचमे, छठ्ठे अने सातमे) त्रण अथवा चार भाव होय तथा नवमे, दशमे अने अगियारमे गुणठाणे चार तथा पांच भाव होय, बारमा क्षीणमोह गुणठाणे तथा अपूर्वकरण आठमा गुणठाणे चार भाव होय, शेष पांच गुणठाणे (त्रिक संयोगीआ दशमा भंगना) त्रण भाव होय, एम एक जीवने एक समये एटला भाव होय ॥ ७३ ॥

४–५–६–७ ए चार गुणठाणे जो क्षायोपशमिक सम्यक्त्व होय तो क्षायोपशमिक औदयिक अने पारिणामिक ए त्रण भाव होय. अने क्षायिक सम्यक्दृष्टिने क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक अने पारिणामिक ए चार भाव होय,

तेमज औपशमिक सम्यक्दृष्टिने पण क्षायक सम्यक्दृष्टिनी पेरे त्रण तथा चोथो औपशमिक सम्यक्त्व ए चार भाव होय

तथा ९-१०-११ ए त्रण गुणठाणे एक जीवने उपशम श्रेणी करता क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक, अने औपशमिक ए चार भाव होय तथा जे जीव क्षायिक सम्यक्त्वे उपशम श्रेणी पडिवज्जे तेने पाचे भाव होय. तथा ८-१२ ए बे गुणठाणे क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक अने पारिणामिक ए चार भाव होय, तेमां आठमे गुणठाणे औपशमिक सम्यक्त्वीने क्षायकने बदले औपशमिक भावे औपशमिक सम्यक्त्व होय, शेप पाच गुणठाणा मध्येथी पेहेले त्रण गुणठाणे औदयिक, पारिणामिक, अने क्षायोपशमिक ए त्रण भाव होय तथा छेल्ले बे गुणठाणे क्षायक, औदयिक अने पारिणामिक ए त्रण भाव होय

ते मूल पाच भाव दरेक गुणठाणे कह्या तेना उत्तरभेद प्रकरण रत्नाकर चोथा भागमाथी जोइ लेवा

हवे सख्याता असख्याता अने अनताना भेद कहे छे.

संखिज्जेगमसंख, परित्त जुत्त निअ पय जुअ तिविहं ॥
एव मणंतपि तिहा, जहन्न मज्झुक्कसा सबे ॥ ७४ ॥

सखिज्जेग-सख्यातोएक	जुत्त	जहन्न-जघन्य
असख-असख्यातोकाल	तिविह-त्रण प्रकारे	मज्झ-मध्यम
परित-प्रत्येक सख्यातु	एव-ए रीते	उक्कसा-उत्कृष्ट
जुत्त-युक्त सख्यातु	अणतपि-अनतापण	सव्वे-सर्वे
निजपयजुअ-पोताना पद	तिहा-तेज त्रण प्रकारे	

अर्थ -सख्यातो काल एकज जाणवो, अने असख्यातो काल त्रण प्रकारे छे एक प्रत्येका सख्यातु बीजुं युक्ता सख्यातु अने त्रीजुं पोताना पदयुक्त एटले असख्याता सख्यातु ए रीते अनताना पण त्रण भेद जाणवा, एटले सात भेद थया तेना वली दरेकना जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट ए त्रण भेद होय ते रीते एकवीस भेद थया ते एकवीस भेद आगली गाथामा विवरीने देखाडे छे. अहींआ एकनी सख्या गणत्रीमा लीधी नथी.

लहु संखिज्जं दुच्चिअ, अओपरं मज्झिमंतु जा गुरुअं ॥
जंबूदीव पमाणय, चउपल्ल परुवणाइ इमं ॥ ७५ ॥

लहुसंखिज्जं–जघन्य संख्यातु	मज्झिमंतु–मध्यमसंख्यातु	प्रमाण
दुच्चिअ–बेथी	जागुरुअं–यावत् उत्कृष्टा सुधी	चउपल्ल–चारपालानी
अओपरं–ए उपरांत	जंबुदीवपमाणय–जंबुद्वीप	परुवणाइइमं–प्ररुपणाये करीने

अर्थः–जघन्य संख्यातु बेने कहीये अने बेथी उपरांत यावत् उत्कृष्टा संख्यातामां एक रूप हीन होय त्यां सुधी मध्यम संख्यातु कहीए, ते उत्कृष्टु संख्यातु जंबुद्वीप प्रमाण चार पालानी प्ररुपणाये करीने जाणवुं ते कहेछे ॥ ७५ ॥

जंबुद्वीप जेवो एक लाख जोजन लांबो पोहोळो, तथा फरतो परिध तो त्रण लाख सोल हजार बसेंने सत्तावीस जोजन त्रण कोश एकसो अट्ठावीस धनुष्य तेर आंगल एक जव, एक जू, एक लीख, अने एक वालाग्र, सात त्रसरेंणु पांच परमाणुं एटलो, अने एक हजार जोजन उंडो तथा आठ जोजननी जगति (कोट) अने ते उपर बे गाउनी वेदिका एटले एक हजार साडाआठ जोजन उंडो अने एक लाख जोजन वच्चेथी लांबो पोहोळो एवो एक प्यालो कल्पीए ते प्यालो सरसवना दाणावडे टोच सुधी एवी रीते भरीए के तेमां एक दाणो पण उपर ठरे नहीं, ते प्यालाने उपाडी तेमांथी अकेको सरसवनो दाणो एक एक द्वीप समुद्रने विषे मूकता जइए, पछो जे द्वीपे अथवा समुद्रे ते प्यालो खाली थाय एवडो, एटले जेटला सरसवना दाणा तेटला द्वीप तथा समुद्र मांहे समाइ जाय तेवडो एक बीजो प्यालो कल्पीए तेनुं नाम अनवस्थित प्यालो कहीए ॥

पल्लाणवठिअ सिला, ग पडि सिलागा महासिलागक्खा ॥
जोयण सहसो गाढा, सवेइ अंता स सिह भरिआ ७६

पल्लाणवठ्ठिअ–अनवस्थित प्यालो	महासिलागक्खा–महा शिलाका	सवेइअंता–वेदिकाना अंत सहित
सिलाग–शलाकाप्यालो	जोयणसहसो–हजारजोजन	ससिह–शींग सुधी
पडिसलागा–प्रतिशिलाका	गाढा–उंडो	भरिआ–भरीये

अर्थ.-पेहेलो अनवस्थित प्यालो बीजो शलाकाप्यालो, त्रीजो प्रतिशिलाकाप्यालो अने चोथो महाशिलाकाप्यालो, ए चार प्यालाना नाम कह्या ते अनवस्थितप्यालो एक हजार जोजन ऊंचो वेदिकासहित वेदिकाना अंत सुधी सींग सुधी सरसवे करी भरीए ॥ ७६ ॥

तो दीवु दहिसु इक्कि,क्क सरिसवं खिविअ निठिए पढमे॥
पढमंवतदंतंचिअ, पुण भरिए तम्मि तह खीणे ॥७७॥

तो-ते प्यालाने	खिविअ-मूकतां	तदंतचिअ-तेना अंत सुधी निश्चे
दीवुदहिसु-द्वीपसमुद्रने विषे	निट्ठिअ-निठे(खाली थाय)	पुणभरिए-वळी पण भरीये
इक्कि-एक एक	पढमे-पहेलाना	तम्मि-ते प्यालाने पण
सरिसव-सरसव	पढमंव-पेहेलानी पेठे	तहखीणे-तेमज मूकतो जाय

अर्थ.-ते प्यालाने (कोइ देवदानव) उपाडी तेमांथी एक एक द्वीप समुद्रने विषे एक एक सरसवनो दाणो मुकतां जे द्वीप समुद्रने विषे ते प्यालो खाली थाय तेवडो एटले वचमानाद्वीप अने समुद्र ते मध्ये समाइ जाय, तेवो बीजो प्यालो कल्पीने पेहेलानी पेठे फरीने भरीए, तेने पण तेमज (एकेक सरसव एकेक द्वीप समुद्रे) मुकता खाली थाय. तेवारे शुं करीए ते कहे छे. ॥ ७७ ॥

खिप्पइ सिलाग पल्ले, गु सरिसवो इय सिलाग खिवणेणं॥
पुण्णो बीओ अ तओ, पुव्वपिव तम्मि उद्धरिए ॥ ७८ ॥

खिप्पइ-नाखीये	सिलाग-शलाका प्यालो	तओ-ते वार पछी
सिलागपल्ले-शीलाक पाला मे विषे	खिवणेण-नाखीये	पुव्वपिव-पूर्वनी पेरे
एगुसरिसवो-एग सरसव	पुण्णो-फरीने	तम्मि-तेने
इय-ए प्रकारे	बीओअ-बीजो	उद्धरिए-लइए

अर्थः—(तेवारे तेनी संख्या निमित्त) शलाक नामा बीजा प्यालाने विषे एक सरसव नांखीए, ए प्रकारे वली बीजो अनवस्थित प्यालो कल्पीये ते खाली थयेथी बीजो सरसव सलाका पल्यने विषे मुकीये, एम अनवस्थित प्याला भरी भरीने खाली करतां अने एक एक सरसव शलाकापल्यने विषे मुकतां ते शलाकापल्य शिखा पर्यंत भराय त्यारे शलाका पल्यने उपाडी जे द्विपसमुद्र छेल्ला अनवस्थित प्यालानो अंत आव्यो छे त्यांथी शलाकापल्यने विषेथी एक एक सरसव नांखता जवुं, ते शलाकापल्य खाली थाय त्यारे शुं करीए ते कहे छे. ॥७८॥

अहींआं अनवस्थित प्यालाना गणत्री माटे जे शलाकापल्यने विषे सरसव मुकवामां आव्यो. ते बाबतमां कोइ आचार्यनो मत एवो छे के बीजो सरसव लेवो अने कोइकनो मत एवो छे के ते अनवस्थित प्यालामांथीज लेवो. त्यां तत्व केवली जाणे तथा कोइ एम पूछे के पेहेला अनवस्थित प्यालो भरायो ते वखते एक सरसव शलाकापल्यने विषे केम नांख्युं नहीं? अने बीजाथी नांखवा मांड्युं? तेनुं कारण के—अनवस्थित एटले जेनुं प्रमाण नथी. ते, परंतु पेहेला प्यालानुं प्रमाण तो जंबुद्वीप जेटला विस्तारवाळुं बताव्युं छे. माटे तेने अवस्थित कहीए. अने बीजा प्यालाने अनवस्थित कहीए, माटे पेहेलो प्यालो वर्जीने बीजानुं ग्रहण कीधुं छे.

खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहि बीअयं भरसु ॥
तेहिअ तइअं तेहिअ, तुरिअंजा किर फुडा चउरो ॥७९॥

खिणेसिलाग—शलाका प्यालो खाली थये	बीअयं—बीजो शलाका	जाकिर—जे निश्चे
तइए—त्रीजा	भरसु—भरीये	फुडा—स्फुट(शिखा सहित)
एवं—ए रीते	तेहिअतइअं—तेवडे त्रीजो	चउरो—चार
	तेहिआतुरिअं—तेवडे चोथो	

अर्थः—एम करतां ते शलाका प्यालो ठालो थाय त्यारे त्रीजा प्रतिशलाका पल्यने विषे एक सरसव मुकीए. एवी रीते

(अनवस्थित प्यालाए करी शलाका पल्य जरीए अने ते) श-लाकाये करीने त्रीजो प्रतिशलाका पल्य जरीए, ते त्रीजा प्रति शलाकाये करी चोथो महाशलाका पल्य जरीए, ते चोथो प्यालो जर्या पछी, त्रीजो प्यालो खाली थयेलो छे ते पूर्वनी रीते जरीए, ते पछी वळी पूर्वनी रीते अनवस्थित प्यालाये करी बीजो श-लाका प्यालो जरीए, ते पछी ते त्रणे प्याला जे द्वीप समुद्रना अनवस्थित प्याले जराइ रह्या छे, ते द्वीप समुद्र पर्यंत अनव-स्थित प्यालो कल्पीने सरसवे करीने जरीए, एटले ए निश्चे चारे प्याला फुरा एटले शिखा सहित संपूर्ण जराया ॥ ७९ ॥

पढमति पल्लुध्दरिआ, दीवुदही पल्ल चउ सरिसवाय॥
सद्योवि एस रासी, रूवूणो परम संखिज्ज ॥ ८० ॥

पढमतिपल्ल–पेहेला त्रण प्याले करी	पल्लचउ–चार प्यालाना	रासीमांथी
उद्धरिआ–उद्धर्या	सरिसवाय–सरवोनी	रूवूणो–एकरूप ओछु करीए
दिवुदही–द्वीप तथा समुद्र	सव्वोविएसरासी–सर्व ए	परमसंखिज्ज–उत्कृष्टसंख्यातु

अर्थ –पहेला त्रण प्याले करी उद्धर्या जे द्वीप समुद्र तेना सरसव एटले प्रथमथी सरसव जे द्वीप समुद्रे मूक्या छे तेना सरसवनी संख्या अने जे चार प्याला जर्या रह्या छे, ते मांहेला सरसवनी संख्या एकठी करीये, ए सर्वनी राशी (एकठा) करता जेटला सरसव थाय तेमांथी एकरूप एटले एक सरसव ओछो करीये तेवारे उत्कृष्ट संख्यातु थाय ॥ ८० ॥

ते उत्कृष्ट संख्यातामांथी एकरूप ओछु करीए त्यांथी उतरतां त्रणनी संख्या सुधी मध्यम संख्यातु कहीए अने तेनी संख्या ते जघन्य संख्यातु ए रीते संख्या-ताना त्रण भेद थया

रूव जुअंतु परित्ता, ऽसंखं लहु अस्सरासि अब्भासे॥
जुत्ता संखिज्जं लहु, आवलिया समय परिमाणं ॥८१॥

रूवं-(एक) रूप
जुअंतु-युक्त करतां
परित्ता-प्रत्येक
ऽसंखं-असंख्यातु
लहु-जघन्य

अस्स-एने
रासिअब्भासे-राशि अभ्यास करतां
जुत्तासंखिज्जंलहु-जघन्य

युक्त असंख्यातु थाय
आवलिया-आवलिना
समय-समयनुं
परिमाणं-प्रमाण

अर्थः-ए उत्कृष्ट संख्यातामां एकरूप मेळवतां जघन्य प्रत्येक असंख्यातु थाय,ए जघन्य प्रत्येक असंख्यातानो राशि अभ्यास करतां जघन्य युक्त असंख्यातु थाय तेटला एक आवलिना समयनुं प्रमाण थाय. ते मांहेथी एकरूप हीन करीये तेवारे उत्कृष्ट प्रत्येक असंख्यातु थाय, तथा जघन्य प्रत्येक असंख्याताथी मांडीने एकरूपे हीन उत्कृष्ट प्रत्येक असंख्याता लगे सर्व मध्यम प्रत्येक असंख्याता जाणवा. ॥ ८१ ॥

अहींआं राशी अभ्यास एटले कोइ संख्याने तेनी ते संख्याए तेटलीवार गुणीए एटले जेम पांचने पांचवार पांचे गुणीए त्यारे पांचनी राशी थाय. सातने सातवार साते गुणीए त्यारे सातनी राशी थाय. वारने वार वार वारे गुणीये त्यारे वारनी राशी थाय.

बित्ति चउ पंचम गुणणे, कम्मा सग संख पढम चउ सत्ता॥
णंता ते रूव जुआ, मज्झारूवूण गुरू पच्छा ॥८२॥

बि-बीजुं
त्ति-त्रीजुं
चउ-चोथु
पंचम-पांचमुं
गुणणे-राशिअभ्यास करतां
कम्मा-अनुक्रमे
सग-सातमुं

संख-संख्यातु
पढम-पेहेलुं
चउ-चोथुं
सत्त-सातमुं
णंता-अनंतानंतु
तेरूवजुआ-तेने एकरूप

मेळीए
मज्झा-मध्यम युक्त असंख्यातु
रूवूण-एकरूप उणु करतां
गुरुपच्छा-पाछलु प्रत्येका संख्यातु

अर्थ —बीजुं जघन्ययुक्त असंख्यातु, त्रीजुं जघन्य असंख्याता सख्यातु, चोथु प्रत्येकानतु अने पाचमु मध्यमयुक्तानंतु तेनो राशि अभ्यास करता, अनुक्रमे सातमु जघन्य असंख्याता सख्यातु, पहेलुं जघन्य प्रत्येकानंतु, चोथु जघन्य युक्तानंतु अने सातमु जघन्य अनतानतु थाय ते जघन्ययुक्ता संख्याताने वळी एकाद रूपे युक्त करीये तेवारे मध्यमयुक्त असंख्यातु होय अने एकरूप हीन करीए तेवारे पाछलु उत्कृष्टा प्रत्येका संख्यातु होय ॥ ८१ ॥

वळी जघन्य असख्याता असख्यातामा एकरुप भेळीए तो मध्यम असख्यातो असख्यातो थाय तथा एकरुप काढीये तो उत्कृष्ट युक्तासख्यातु होय एम जघन्य प्रत्येकानता माहेथी एकरुप काढे थके उत्कृष्ट असख्यातु होय अने एक रुप मेळवतां मध्यम प्रत्येकानतु होय

हवे ते सख्यातु असख्यातु अने अनतु ए त्रणना सर्व एकवीस भेदनी समजण नीचे प्रमाणे

बेनी सख्या ते (१) जघन्यसख्यातु, त्रणथी मांडीने जबुद्वीप प्रमाण चार प्यालाना सरसवनी सख्या जे उपर कही तेमांथी बे ओछा करतां (२) मध्यम सख्यातु, अने एक ओछु करतां अथवा मध्यम सख्याता करता एक वधारे ते (३) उत्कृष्ट सख्यातु, ए त्रण भेद सख्यातना

उत्कृष्ट सख्यातामां एक रूप वधारतां (१) जघन्य प्रत्येकासख्यातु, जघन्य प्रत्येका सख्याताना राशि अभ्यास करीने तेमाथी बे ओछा करतां (२) मध्यम प्रत्येकासंख्यातु, मध्यम प्रत्येकासख्यातामां एक वधारता (३) उत्कृष्ट प्रत्येकासख्यातु, अने उत्कृष्टा प्रत्येकासख्यातामी एक वधारे एटले जघन्य प्रत्येकासख्याताना राशि अभ्यास तेनी बरोबर (४) जघन्ययुक्तासख्यातु, जघन्ययुक्ता सख्याताना राशि अभ्यासमांथी बे ओछा करता (५) मध्यमयुक्ता सख्यातु, अने एक ओछो करतां अथवा मध्यम युक्तासख्यातामा एक वधारता (६) उत्कृष्टयुक्ता सख्यातु थाय, अने तेमा एक वधारतां एटले जघन्ययुक्ता सख्याताना राशि अभ्यास करतां (७) जघन्य असख्याता सख्यातु थाय, जघन्य असख्या-

-ता संख्याताना राशि अभ्यासमांथी वे ओछा करतां (८) मध्यम असंख्यातासंख्यातु थाय, असंख्यातासंख्यातामां एक वधारतां (९) उत्कृष्ट असंख्याता-संख्यातु थाय. ए नव असंख्याताना भेद थया.

जघन्य असंख्याता संख्याताना राशि अभ्यास करतां एटले उत्कृष्ट असंख्याता संख्यातामां एक वधारतां (१) जघन्य प्रत्येकानंतु थाय. एम उपर प्रमाणे अनंताना पण नव भेद समजी लेवा एटले (२) मध्यम प्रत्येकानंतु, (३) उत्कृष्ट प्रत्येकानंतु, (४) जघन्य युक्तानंतु, (५) मध्यम युक्तानंतु, (६) उत्कृष्ट युक्तानंतु, (७) जघन्य अनंतानंतु, (८) मध्यम अनंतानंतु, (९) उत्कृष्ट अनंतानंतु.

इय सुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअ मिक्कसि चउथ्थय मसंखं ॥
होइ असंखासंखं, लहु रूवजुअं तु तं मज्झं ॥ ७३ ॥

इयमृत्तुत्तं—ए सूत्रोक्त	चउथ्थयं—चोथुं	रूवजुअं—एक रूपयुक्त
अन्ने—बीजा	असंखं—असंख्यातु	तुतं—ते वारे ते
वग्गिअ—वर्ग करीए	होइ—होय	मज्झं—मध्यम असंख्याता संख्यातु
इक्कसि—(नवनो वर्ग) एक्यासी	असंखासंखंलहु—जघन्य असंख्याता संख्यातु	

अर्थः—ए सूत्रोक्त एटले संख्याता, असंख्याता अने अनंतानां स्वरूप अनुयोगद्वारादि सूत्र प्रमाणे कह्यां. बीजा आचार्य आ प्रमाणे कहे छे. चोथा जघन्य युक्ता संख्यातानो वर्ग करीये, (वर्ग एटले कोइ संख्याने तेनी ते संख्याए गुणीए, जेम नवनो वर्ग एक्याशी) ते वारे जघन्य असंख्याता संख्यातु थाय, अने तेमां एक रूप नेलीए तेवारे मध्यम असंख्याता संख्यातु थाय ॥ ७३ ॥

रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिओ तहिमे दसक्खेवे ॥
लोगा गास पएसा, धम्माधम्मे गजिअ देसा ॥ ७४ ॥

रुवूर्ण-एक रुप हीन	दस-दश	धम्मा-धर्मास्तिकायना
आइम-पेहेलु	खेवे-मेलीये	अधम्मो-अधर्मास्तिकायना
गुरु-उत्कृष्ट	लोगागास लोकाकाशना	एगजीअ-एक जीवना
तिवग्गिओ-त्रणवेळा वर्ग	पएसा-प्रदेश	देसा-प्रदेश
तत्थिमे-तेमा आ		

अर्थ.-वळी ते जघन्य असख्याता असख्यातामाथी एक रूप काढीये तेवारे उत्कृष्ट युक्ता संख्यातु थाय तेमाथी वळी एकाद रूप हीन करता मध्यमयुक्ता सख्यातु थाय वळी ते जघन्य असख्याता असंख्यातानो त्रणवेला वर्ग करीए (एटले जेम बेनो प्रथम वर्ग २×२=४, चारनो वर्ग ४×४=१६, सोळनो वर्ग १६× १६=२५६ एवी रीते करीए,) तेमां (हवे कहेवाशे ते) आ दश असंख्याताती राशि नेळीए (१) लोकाकाशना प्रदेश, (२) धर्मास्तिकायना, (३) अधर्मास्तिकायना, (४) तेटलाज एक जीवना प्रदेश, तथा ॥ ७४ ॥

लोकाकाशना प्रदेश एटले एक अगुल प्रमाण आकाशखड माहेथी समये समये एकेक प्रदेश लइए तो असख्याता उत्सर्पिणि अवसर्पिणि काले ते अगुल प्रमाण आकाशखड निर्लेप थाय, तेवा सर्व लोकाकाशना प्रदेश अने तेटलाज धर्मास्तिकायना तथा तेटलाज अधर्मास्तिकायना अने तेटलाज एक जीवना प्रदेश छे, ए चार राशि असख्याताती सरखी जाणवी ते तथा बीजी छ नीचेनी गाथामा कहेवाशे.

ठिइ बधज्झवसाया, अणुभागा जोग छेअ पलिभागा ॥
दुण्हय समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥७५॥

ठिइबध-स्थितिबधना	छेअपडिभागा-छेद प्रतिभाग	समया-समय
अज्झवसाया-अध्यवसाय (स्थानक)	दुण्हय-बना	पत्तेअ-प्रत्येक
अणुभागा-अनुभाग	समाण-समान	निगोअए-निगोदना
जोग-योग		खिवसु-मेळीए

अर्थः-(५) स्थितिबंधनां अध्यवसाय स्थानक, (६) अनुभाग (रस)नां स्थानक, (७) योग छेद पलिभाग स्थानक, (८) बे (उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी) ना समय सरखा छे, तेना एटले एक काळचक्रना समय, (ए) (साधारण वर्जीने) प्रत्येक जीवना शरीरनी संख्या, तथा (१०) सूक्ष्म अने बादर निगोदनुं एक साधारण शरीर एवा निगोदीआ जीवनां शरीर (ए दश बोल असंख्याता छे) ते पूर्वला राशिमांहे भेळीए ॥८५॥

स्थितिबंधनां अध्यवसाय स्थानक असंख्यातां छे ते एवी रीते के मोहनीयकर्मनो जघन्य स्थितिबंध संज्वलना लोभनी अपेक्षाये अंतर्मुहूर्त्तनो छे. अने उत्कृष्टो सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनो छे, ते जघन्यमां एकेक समय वधारतां जेटला समये उत्कृष्ट स्थिति पुरी थाय तेटलां मोहनीयकर्मनां स्थिति स्थानक होय अने ते एकेक स्थितिस्थानकनां कषायनी तीव्रमंदतादि कृतभेदे लोकाकाश प्रमाण असंख्यातां अध्यवसाय स्थानक होय ते पांचमुं.

रसनां स्थानक असंख्याता लोकाकाश प्रमाण छे. तेना बंध हेतु असंख्याता अध्यवसाय स्थानक छे. ते पण भेळीए ते छट्ठुं.

सातमुं मन, वचन अने कायानुं बळ करणवीर्य, तेनो छेदपलिभाग एटले केवळीनी प्रज्ञारुप शास्त्रे करी छेदतां जे वीर्यांशनो भाग न देवाय, ते वीर्यांश विभागनुं जघन्य स्थानक निगोदीआ अपर्याप्ता जीवने उत्पत्तिने प्रथम समये होय, बीजे समये बीजु स्थानक होय एम असंख्याता वीर्यांश विशेष भणी असंख्याता वीर्य विभाग स्थानक होय ते सातमुं.

आठमा उत्सर्प्पिणी, अवसर्प्पिणी बे मळीने वीस कोडाकोडी सागरोपमनुं एक कालचक्र तेना असंख्याता समय थाय, एक जीर्ण अने घणुं झीणुं वस्त्र फाडतां तेमांनो एक तांतणो तुटे तेटलोवारमां असंख्याता समय व्यतिक्रमे एवा एक कालचक्रना जेटला समय थाय ते आठमुं स्थानक तेमां भेळीए.

नवमुं स्थानक प्रत्येक जीवना शरीरनो संख्या ते एक साधारण वनस्पतिकाय वर्जीने शेष पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय तथा त्रस काय ए सर्व जीवनुं नवमुं स्थानक ते पण तेमां भेळीए.

दशमु स्थानक सूक्ष्म अने बादर निगोदनु एक साधारण शरीर, तेवा निगोदीआ जीवनां असख्यातां शरीर छे ते जे असख्याते छे ते असख्यातु छेवु ए दशमु स्थानक छेवु. ए रीते दश स्थानकनो राशी, जघन्य असख्याता असख्यातानो जे त्रिवर्ग करेलो छे. तेमां भेळीए

पुण तंमि तिवग्गिअए, परित्तणंत लहु तस्स रासीण ॥
अप्भासे लहु जुत्ता, अणंत अभव जिअ माणं ॥८६॥

पुणतम्मि-वळी ते राशीने	तस्स-तेनो	जुत्ताअणत-युक्तानतु
तिवग्गिअए-त्रिवर्गीये	रासीणअप्भासे-राशिअभ्यास	अप्भव-अभव्य
परित्तणतलहु-जघन्य प्रत्येकानतु	लहु-लघु, जघन्य	जिअमाण-जीवनु मान

अर्थः-वळी ते राशिने त्रणवार वर्गिये तेवारे जघन्य प्रत्येकानंतु होय, वळी तेनो राशि अभ्यास करीए तेवारे चोथो जघन्य युक्तानतो होय, तेटला जघन्य युक्तानंते अभव्य जीवनुं मान होय, तेटला अभव्य जीव होय, ते मध्ये एकरूप ओछु करीये तेवारे उत्कृष्ट प्रत्येकानंतु त्रीजुं थाय ॥८६॥

तव्वग्गे पुण जायइ, णंताणंत लहु तंच तिक्खुत्तो ॥
वग्गसु तहवि न तं हो, इणंत खेवे खिवसु छ इमे ॥८७॥

तव्वग्गे-तेनो वर्ग	तच-तेने	णत-अनतां
पुण-वळी	तिक्खुत्तो-त्रणवेला	खेवेखिवसु-मेळवतां
जायइ-थाय	वग्गसु-वर्गीये	छइमे-आछ
णताणतलहु-जघन्य अनतानतु	तहवि-तोपण	
	नतहोइ-न होय	

अर्थ -ते चोथा अनतानो वर्ग करीए तेवारे वळी सातमो जघन्य अनतानंतो थाय, वळी ते सातमानो त्रण वेलावर्ग करीये तोपण उत्कृष्ट अनतानंतु न थाय, तेवारे तेमां आ छ अनतां मेळीए ॥८७॥

सिद्धा निग्गोअ जीवा, वणस्सई काल पुग्गला चेव ॥
सव्व मलोग नहं पुण, ति वग्गिउं केवल दुगंमि ॥८८॥

सिद्धा–सिद्धना जीव	काल–त्रणे काल	पुण–वळी
निग्गोअजीवा–निगोदना जीव	पुग्गला–सर्व पुद्गल	तिवग्गिओ–त्रिवर्गीये
वणस्सइ–वनस्पतिकाय	सव्वं–सर्व	केवलदुगंमि–केवलद्विकना पर्याय
	अलोगनहं लोकालोकाकाश	

अर्थः–(१) सिद्धना जीव अनंता छे. ते, (२) सूक्ष्म अने बादर निगोदना जीव, (३) प्रत्येक साधारण वनस्पति कायनाजीव, (४) अतित अने अनागत कालना सर्व समय, (५) सघळा पुद्गल स्कंधना परमाणु ते पण अनंता छे. (६) सर्व लोकाकाश अने अलोकाकाशना प्रदेश, ए छ दरेकनी संख्या अनंत अनंत छे. ते सर्वनो राशि करीने तेनो त्रण वेलावर्ग करीये, तेमां केवलज्ञान तथा केवल दर्शनना जे अनंतापर्याय छे ते मेळीये॥८८॥

खित्ते णंताणंतं, हवेइ जिठंतु ववहरइ मज्झं ॥
इय सुहमथ्थ विआरो, लिहिओ देविंद सूरीहिं ॥८९॥

खित्ते–क्षेपवेथके	ववहरइ–व्यवहार	विआरो–विचार
णंताणंतं–अनंतानंतु	मज्झम–मध्यम अनंतो	लिहिओ–लख्यो
हवेइ–होय	इय–ए	देविंदसूरीहिं–श्रीदेवेंद्रसूरिये
जिठंतु–उत्कृष्ट	सुहमथ्थ–सूक्ष्मार्थ	

अर्थः–ते क्षेपवे (मेळवे) थके नवमु उत्कृष्टानंतु थाय, (परंतु ए उत्कृष्ट अनंते कोइ वस्तु लोकालोकमां नथी) लोकालोकमां जेटला पदार्थ जे छे तेनो व्यवहार आठमो मध्यम अनंतानंतोज प्रवर्त्ते छे. ए रीते सूक्ष्म अर्थ विचार, तपगछाधिराज श्री देवेंद्र सूरिये लख्यो ॥८९॥

॥ इतिषडशीतिका नामक चतुर्थ कर्मग्रंथःसमाप्तः ॥